मदर-इण्डिया का जवाब

लेखिका—

श्रीमती चन्द्रावती लखनपाल बी. ए.

गुरुकुल विश्वविद्यालय, काँगड़ी।

दिसम्बर १९२७।

मिलने का पता—
प्रो. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार
गुरुकुल काँगड़ी (बिजनौर)

मुद्रक—
गुरुकुल-यन्त्रालय
गुरुकुल काँगड़ी

'दो शब्द'

यह युग श्वेतांग जातियों के प्रभुत्व का युग है। काली जातियों को चिड़िया घर की चीज़ समझा जाता है। जनवरी १६२६ में बर्लिन के एक विशाल चिड़िया-घर में गुजराती तथा तामिल बालकों को वहाँ की एक कम्पनी ने अजूबा जानवरों के तौर पर प्रदर्शित किया था। उसी साल जून में पैरिस के एक चिड़िया-घर में १५० भारतीय-ग्रामीण इस हत-भाग्य देश के ग्रामों की दुरवस्था प्रदर्शित करने के लिये रखे गये थे। भारत तथा एशिया के अन्य देशों के प्रति घृणा के भावों का युरुप तथा अमेरिका में जहाँ-तहाँ प्रचार किया जा रहा है। मिस मेयो की पुस्तक 'मदर-इण्डिया' इसी उद्देश्य से लिखी गई है। यह पुस्तक भारत में पढ़ने के लिये नहीं लिखी गई—यह लिखी गई है युरुप के लिये, अमेरिका के लिये, अपने को सभ्य कहने तथा कहलाने वाले श्वेतांग देशों के लिये! मिस मेयो ने सभ्य-संसार (?) के सामने ढोल पीट कर घोषणा की है—'देखो भारत! यहाँ देवतों के नाम पर बकरों के खून की नदियाँ बहायी जाती हैं, स्त्रियों पर अत्याचार होता है, गोशालाओं में गोवध होता है, पवित्र कहाने वाले तीर्थों में गन्दगी का ढेर होता है!'—यह घोषणा मिस मेयो ने युरुप तथा अमेरिका के एक-एक कोने में कर दी है। मिस मेयो के दिमाग में श्वेतांगों के स्वाभाविक-प्रभुत्व का

सिद्धान्त कूट-कूट कर भरा हुआ है। उस ने झूठ-सच की चिंता न करते हुए भारतवर्ष को चिड़िया-घर का-सा रूप दिया है। प्रस्तुत पुस्तक में मिस मेयो के अनर्गल झूठों को जगह-जगह दर्शाते हुए अन्त में परिशिष्ट के तौर पर युरुप तथा अमेरिका के अधः पतन का भी नग्न-रूप दे दिया गया है। परन्तु क्या यही 'मदर-इण्डिया' का जवाब है? इस में सन्देह नहीं कि युरुप तथा अमेरिका में शराब, व्यभिचार, चोरी-डाके तथा अत्याचार दिनों-दिन बढ़ रहे हैं, परन्तु मैं स्पष्ट शब्दों में उद्घोषित कर देना चाहती हूँ कि यह सब कुछ कह देना 'मदर-इण्डिया' का असली जवाब नहीं है। मिस मेयो की बहुत सी बातें झूठ हैं, झूठ ही नहीं गन्दी तथा नीचता-पूर्ण हैं, परन्तु क्या इस पुस्तक के पन्नों को पलट जाने पर कोई इस बात से इन्कार कर सकता है कि उस की कई बातें सच्ची भी हैं, और यह लिखते हुए छाती फटती है कि बिल्कुल सच्ची हैं! मैं चाहती हूँ कि भारतवर्ष के एक-एक व्यक्ति के हाथ में यह पुस्तक पहुँचे और सब को मालूम हो जाय कि हमें बदनाम करने के लिये जहाँ मिस मेयो ने झूठ बोलने में कसर नहीं छोड़ी वहाँ कहीं-कहीं सच बोलने में भी कसर नहीं छोड़ी! पाठक, इन शब्दों की गूँज में पुस्तक के पन्ने पलटिये और अपने समाज के गन्द को भस्म कर देने के लिये आँखों से चिनगारियाँ निकालते चलिये। यही 'मदर-इण्डिया' का असली जवाब है!

—चन्द्रावती

प्रथम भाग

मदर-इण्डिया का जवाब

प्रथम भाग

भारतवर्ष की स्वतन्त्रता का जिन अमानुषिक उपायों से अपहरण किया गया है वे हमारी स्मृतियों में अभी ताज़े ही हैं, कि हम अपनी आँखों के सामने उन चालों को काम में लाया जाता देख रहे हैं जिन से परतन्त्रता के जूए को भारतवासियों के कन्धों पर कस कर बाँध दिया जाय। संसार की महान् शक्तियाँ (World Forces) जिस दिशा की तरफ़ दौड़ रही हैं उसे देखते हुए आशा होती है कि ये चालें देर तक न चल सकेंगी—परन्तु चालबाज़ स्वार्थी अपनी चालों से बाज़ नहीं आते। वे कहते हैं, परमात्मा ने उन्हें संसार को सभ्य बनाने का भार सौंपा है, इसलिये उन का फ़र्ज़ है कि असभ्य-भारत में भी सभ्यता का प्रकाश फैलाएँ, और जब तक वह सभ्यता के सिद्धान्तों को स्वीकार न कर ले तब तक उसे अपनी संरक्षा में रखें। क्योंकि उन में से बहुत-से परमात्मा को नहीं मानते, इसलिये वे कहते हैं कि उन्हों ने संसार को सभ्य बनाने का 'ठेका' लिया है, इस की परवाह नहीं कि यह 'ठेका' उन्हें किसी ने दिया हो, या न हो। संसार

की प्रगति को देख कर—जब कि चारों तरफ़ जागृति के चिन्ह दिखाई दे रहे हैं—किसी देश का भी सोया रहना असम्भव है, इसलिये प्रत्येक परतन्त्र-देश परतन्त्रता की बेड़ियों को तोड़ गिराने के लिये हाथ-पैर मार रहा है। यह दृश्य झूठे 'ठेकेदारों' से नहीं सहा जाता। वे अपने 'ठेके' के समय को बढ़ाने के लिये भी उतना ही हाथ-पैर मारते दिखाई देते हैं! उन्हों ने अपने स्वार्थों के लिये सड़कें, रेलें और स्कूल खोले हैं परन्तु हमें सम्बोधन कर कहते हैं—'देखो, तुम्हारे देश को हम ने कितना सभ्य बनाया!' मानो वे हमें समझाना चाहते हैं कि सड़कें बनाना, रेलें चलाना, स्कूल और हस्पताल खोलना दुनियाँ भर में अँग्रेज़ ही जानते हैं, और कोई नहीं जानता। ये चीज़ें तो वर्तमान सभ्यता के अमर-फल हैं! अँग्रेज़ भारत में आते या न आते, यह तो युग ही जागृति का है, अँग्रेज़ों के बग़ैर भी रेलें और सड़कें भारत में बनतीं और स्कूल तथा हस्पताल खुलते। हाँ, इस समय यह सब कुछ अँग्रेज़ों के सुभीते को सामने रख कर और अँग्रेज़ी-राज्य की भारत में सुदृढ़ नींव डालने के लिए किया गया है और दूसरी हालत में यह सब-कुछ भारतीयों के सुभीते को सामने रख कर और भारतीय राज्य को सुदृढ़ बनाने के लिये होता। ज़रा-ज़रा सी चीज़ दिखा कर—चाकू, पैन्सिल और दियासलाई दिखा कर—अँग्रेज़ कहते हैं—"हम यह लाये", परन्तु वे भूल जाते हैं कि यदि वे न होते तो "यह सब कुछ हमारे घर होता!" इस समय

भारतवासी 'ठेकेदारों' की इस युक्ति के खोखलेपन को समझ रहे हैं, इसलिये मालूम पड़ता है इन्हीं 'ठेकेदारों' में से कुछ ने अमरीका की एक औरत को—जिस का नाम कैथरीन मेयो है—इस काम पर लगाया है कि वह सभ्य-जगत् के सामने अँग्रेज़ों के भारतवर्ष में रहने के हक़ की सफ़ाई पेश करे। बहुतों का विश्वास है कि मिस मेयो एँग्लो-इण्डियन लोगों की एजण्ट है। हो सकता है, यह ठीक हो, या न हो। कहते हैं इन लोगों ने मिस मेयो की लिखी 'मदर-इण्डिया' पुस्तक की हज़ारों प्रतियाँ ख़रीद् कर पार्लियामेंट के मेम्बरों को मुफ़्त बाँटी हैं। सुना है, अमरीका में इस पुस्तक की ५० हज़ार कापियाँ मुफ़्त बँटी हैं। यदि ये बातें ठीक हैं तो इस बात में सन्देह नहीं रह जाता कि इस पुस्तक के पीछे एक बुढ़िया ही नहीं है! यह पुस्तक ठीक ऐसे समय प्रकाशित की गई है जब कि 'स्टैच्युटरी कमीशन' आने वाला है, जब कि एक तरह से भारत के भाग्यों पर विचार होने वाला है! इस काम के लिये मिस मेयो को चुना गया हो, इस में ज़्यादह आश्चर्य की बात भी नहीं। दो साल पहले 'फ़िलिपाइन्स' की स्वतन्त्रता विषयक प्रश्न पर जब विचार हो रहा था तो इसी मेयो ने उन लोगों को दुनियाँ भर में बदनाम करने के लिये "The Isles of Fear" नामक पुस्तक लिखी थी। मेयो ने अपनी रोज़ी का पेशा ही यह बनाया मालूम पड़ता है। 'मदर इण्डिया' का उद्देश्य ही भारत को बदनाम करना है। उस के एक-एक पृष्ठ, एक-एक पंक्ति और

एक-एक शब्द में भारतीयों को चिड़ाया गया है। जगह-जगह दोहराया गया है कि भारतवर्ष स्वराज्य के अयोग्य है। एक-एक शब्द इसी उद्देश्य को सन्मुख रख कर लिखा गया है। स्वार्थहीन व्यक्ति ऐसी पुस्तक लिख ही नहीं सकता, असम्भव है! मिस मेयो ने बेधड़क होकर झूठ बोला है। जिन-जिन से उस की बात-चीत हुई है उन में से बहुतों के तो उस ने नाम नहीं दिये, जिन के दिये हैं उन में से बहुतों ने कह दिया है कि हम ने ये बातें इसे कही ही नहीं, झूठ लिखती है! महात्मा गाँधी तथा रवीन्द्रनाथ टागौर तक के नाम से झूठ बोल गई है। वह जानती होगी कि ये लोग इन्कार करेंगे परन्तु शायद वह यह भी जानती होगी कि उस की किताब तो लाखों में मुफ़ बंटेगी; इन बिचारों की आवाज़ कहाँ तक पहुँचेगी!

महात्मा गाँधी ने 'मदर इण्डिया' की आलोचना करते हुए ठीक कहा है कि इस में लिखी बहुत सी बातें तो साधारण भारतीयों को मालूम भी नहीं। मालूम कैसे हों, जब उस ने कोई-सी बात कहीं-से सुन कर कह दिया, 'देखो हिंदुस्तान'! एक ईसाई महिला ने मिस मेयो के भारत में आते ही उसे सलाह दी थी कि तुम यदि कुछ बुराई कहीं देखो तो उसे 'सामान्य-नियम' न समझ लेना। यही सलाह है जिसे मिस मेयो ने मानने से इन्कार कर दिया दीखता है। लेडी अण्डरहिल ने बहुत ठीक लिखा है—'क्या मिस मेयो, अब, जब कि वह भारत में चक्कर लगा चुकी है, भारत के विषय में पहले की

अपेक्षा ज़्यादह जानती है' ? ज़्यादह कैसे जानती। जिस पुस्तक को उस ने लिखा है, उस का ख़ाका तो पहले से ही उस के दिमाग़ में था। उस ख़ाके को भरने वाली घटनाएँ ४ महीने के चक्कर में इकट्ठी कर के वह ले गई और किताब लिख डाली। जगह-जगह के अँग्रेज़ों से मिली, उन से पूछा, कोई कहानी तो सुनाओ, हिन्दुस्तानी कैसे गन्दे हैं, बस, वह कहानी बने-बनाये ख़ाके में अपनी जगह पर जड़ दी और 'मदर-इण्डिया' तैयार हो गई!

कईयों का कथन है कि 'मदर-इण्डिया' पुस्तक ने भारतवर्ष के विषय में जितनी हलचल पैदा कर दी है इतनी हलचल इस शताब्दी में किसी और पुस्तक ने उत्पन्न नहीं की। भारतवर्ष के सम्बन्ध में सब से ज़्यादह बँटने तथा बिकने वाली यही पुस्तक है। इस पुस्तक में क्या लिखा है, यह जानने की प्रत्येक भारतवासी को उत्सुकता है। इस पर अब तक जो कुछ लिखा गया है वह प्रायः अंग्रेज़ी अख़बारों की समालोचनाओं के आधार पर ही लिखा गया है, परन्तु जितना कुछ लोगों के सामने आया है वह उस से बहुत कम है जितना इस गन्दी पुस्तक में मौजूद है। मैंने इस पुस्तक को आदि से अन्त तक पढ़ा है, मैं चाहती हूँ, इस की झूठी-सच्ची बातें हिन्दी पाठकों के सामने आवें ताकि उन्हें मालूम हो कि यदि वे बातें झूठी हैं तो विदेशी लोग उन की स्वतन्त्रता के फूटते हुए पँखों को किस प्रकार काटने की चिन्ता में हैं और यदि वे बातें सच्ची हैं तो उन्हें दूर करने में प्रयत्नशील हों ताकि वह लाञ्छन उन पर से उठ जाए!

इस पुस्तक के प्रथम पृष्ठ का शीर्षक है—'The Bus to Mandalay'—माण्डले को जाने वाली 'बस'—परन्तु सारी पुस्तक में माण्डले का कहीं ज़िक्र तक नहीं है। पुस्तक तीस अध्यायों में बाँटी गई है परन्तु प्रायः शीर्षक कुछ दिया है और अन्दर कुछ लिखा है। शीर्षक का उस अध्याय से ज़्यादह सम्बन्ध नहीं और अध्यायों का परस्पर ज़्यादह सम्बन्ध नहीं! भारत के कोने-कोने से गन्द इकट्ठा करने में मिस मेयो ने अपने को इतना भुला दिया है कि उसे दूसरी किसी बात का ध्यान नहीं रहा मालूम पड़ता। शुरू से आख़ीर तक पुस्तक को पढ़ जाने से मालूम पड़ता है, किसी ने भारतीयों के प्रति घृणित अट्टहास उत्पन्न करने के लिये 'चुटकलों' का संग्रह कर दिया है। पहले ही पृष्ट पर कलकत्ते का वर्णन करती हुई मिस मेयो लिखती है:—

"In the courts and alleys and bazars many little bookstalls, where narrow-chested, near-sighted, anœmic young Indian students, in native dress, brood over piles of fly-blown Russian pamphlets."

"कलकत्ते की गली-गली में छोटे-छोटे किताब-घर हैं। उन में भारतीय विद्यार्थी जिन की छाती सिकुड़ी हुई है, आँखें कमज़ोर हैं, बदन में ताकत नहीं है, धोती पहने हुए रूस के गन्दे-गन्दे ट्रैक्टों को आँखें फाड़-फाड़ कर पढ़ रहे हैं।"

इस सूत्र से पुस्तक का श्रीगणेश होता है। यह सूत्र मिस मेयो पर पर्याप्त टीका है। इस पुस्तक के लिखने का यही उद्देश्य है! ये गन्दे, मरियल-से हिन्दुस्तानी, बोल्शवीकों से सुन २ कर 'स्वराज्य'-'स्वराज्य' चिल्ला रहे हैं; असल में इन की क्या हालत है?—मिस मेयो कहती है, 'सुनिये, मेरे शब्दों में'!

मालूम पड़ता है कि यह कुमारी गवर्नमेण्ट हाउस कलकत्ता में ठहराई गई। वहाँ से वह सीधी काली घाट गई। हलधर नामक किसी व्यक्ति ने उसे मन्दिर दिखलाया। वहाँ बकरे-पर-बकरा काटा जा रहा था। इतने में क्या हुआः—

"Meanwhile, and instantly, a woman who waited behind the killers of the goat has rushed forward and fallen on all fours to lap up the blood with her tongue 'in the hope of having a child.' 'In this manner we kill here from 150 to 200 kids each day', says Mr. Haldar with some pride. 'The worshippers supply the kids'."

"इतने में एकदम एक स्त्री जो बकरा मारने वालों के पीछे खड़ी थी दौड़ी-दौड़ी आयी और 'बच्चा लेने की उमीद से' घुटने और कुहनी ज़मीन पर टेक कर ख़ून को जीभ से लप-लप चाटने लगी। हलधर ने कुछ अभिमान से कहा, 'इस प्रकार हम रोज़ १५० से २०० मेमने मारते हैं और श्रद्धालु लोग उन्हें जुटाते हैं'!"

मिस मेयो सीधा गवर्नमेण्ट हाउस से उतर कर काली के मन्दिर की प्रदक्षिणा करने गई। दो ही चीज़ें कलकत्ते में देखने लायक थीं। एक बोलशवीक लोगों के जगह २ पर बिखरे हुए ट्रैक्ट जो शायद बंगाल के गवर्नर की उदारता से गली-गली उड़ रहे थे और दूसरी चीज़ काली का मन्दिर जिसे प्रत्येक समझदार हिन्दू हिन्दू-धर्म पर कलंक समझ रहा है और जिस की बुराइयों को दूर करने में हिन्दू-समाज लगा हुआ है। श्रीमती मारगरेट कज़न ने इस स्थल की आलोचना करते हुए ठीक लिखा है कि काली का बीभत्स वर्णन करते हुए मिस मेयो ने यह लिखना छोड़ दिया है कि ब्रिटिश भारत में तो यह कुर्बानी, परन्तु ट्रावनकोर की महारानी ने, जो कि एक देसी रियासत में राज्य करती है, राज्य की बागडोर हाथ में लेते ही पहला काम यह किया कि सब तरह की कुर्बानियाँ बन्द कर दीं। मिस मेयो को पता होना चाहिये था कि हमारी बहुत सी कुरीतियाँ हमारी 'माई-बाप' बनी हुई सरकार की मेहर्बानी से भी हैं। अगले दिन एक थियोसोफ़िस्ट अंग्रेज़ ने मिस मेयो को कहा भी, 'तुम काली का मन्दिर देखने नाहक गईं, वह भारतवर्ष नहीं है' परन्तु उन महाशय को क्या मालूम था कि मिस मेयो तो 'मदर-इण्डिया' के लिये एक 'चुटकला' ढूंढने गई थी!

'कलकत्ते' और 'काली' का रौद्र तथा बीभत्स वर्णन कर यह मिस अगले अध्याय में बतलाती है कि वह भारतवर्ष क्यों

आयी थी ? पूछने वाला हो तो इस से पूछे कि यह बात तो पुस्तक के शुरू में लिखनी थी, तुझे इतना उतावलापन क्या था कि कलम उठाते ही बोलशवीकों के ट्रेक्टों और काली के दृश्यों की दुहाई देनी शुरू कर दी ? ख़ैर, आने का उद्देश्य सुनिये:—

"What does the average American actually know about India ? That Mr. Gandhi lives there ; also tigers...It was dis-satisfaction with this state that sent me to India, to see what a volunteer unsubsidized, uncommitted, and unattached could observe of common things in daily human life... Therefore in early October 1925 I went to London, called at India Office, and, a complete stranger, stated my plan."

"अमेरिकन लोग भारतीयों के विषय में क्या जानते हैं ? यही कि वहाँ गाँधी रहता है ; और शेर ! इस अवस्था से मैं सन्तुष्ट न थी इसलिये मैं भारत गयी। मैं देखना चाहती थी कि एक वालन्टीयर जिस ने किसी का रुपया न खाया हो और पहले से अपने विचार न बना लिये हों भारतवर्ष के दैनिक मानव-जीवन का क्या चित्र खींच सकता है ? इसलिये मैं १९२५ के अक्तूबर के शुरु में लण्डन के इण्डिया ऑफ़िस में गई और बिल्कुल अपरिचित व्यक्ति की भाँति अपनी स्कीम कह डाली।"

अच्छा, तो मिस साहब 'वालन्टीयर' बन कर आयीं थीं! ऐसी वालन्टीयरी के लिये बधाई! आप का विचार है कि आप ने 'रुपया नहीं खाया' और भारतवर्ष के सम्बन्ध में आप के विचार 'पहले से बने हुए नहीं थे!' क्योंकि आप ने 'रुपया नहीं खाया' इसीलिये आप सीधा इण्डिया ऑफ़िस गईं! ठीक है, रुपया खातीं तो भला इण्डिया ऑफ़िस क्यों जातीं? इस जगह आप को यह कहने की भी आवश्यकता महसूस हुई कि आप उन लोगों से 'बिल्कुल अपरिचित' थीं! मिस का एक-एक शब्द बतला रहा है कि वह 'वालन्टीयर' थी, उस ने 'रुपया नहीं खाया', अपने विचार 'पहले से नहीं बनाये' और वह इण्डिया ऑफ़िस वालों से 'बिल्कुल अपरिचित' थी!

सुनिये, पाठक, इस 'वालण्टीयर' ने क्या-क्या ग़ज़ब ढाया!

दूसरे अध्याय के शुरु में मिस लिखतीं हैं:—"The Indian girl, in common practice, looks for motherhood nine months after reaching puberty—or anywhere between the ages of 14 or 8."

"अक्सर यहाँ की लड़कियाँ जवानी के ९ महीने बाद माँ बन जाना चाहती हैं। यह समय ८ से १४ वर्ष की उम्र के अन्दर-अन्दर होता है।"

मिस मेयो की यह बात सफ़ेद आदमी का काला झूठ है। इस का खण्डन करते हुए डा० मिस बालफ़र एम. बी. ने

'टाइम्स ऑफ़ इण्डिया' में अपने अनुभव के आधार पर लिखा है:—"३०४ हिन्दु माताओं का बम्बई के हस्पताल में पहला बच्चा उत्पन्न हुआ। उन की आनुपातिक आयु १८.७ वर्ष थी। इन में से ८५.६ प्रतिशतक की आयु १७ वर्ष या इस से ऊपर थी और १४.४ प्रतिशतक की १७ से नीचे थी। सब से छोटी उम्र १४ वर्ष थी और उनमें उस उम्र की केवल ३ स्त्रियाँ थीं। मैंने मद्रास मेटर्निटी हस्पताल के १६२२–२४ के अङ्क भी देखे हैं। वहाँ २३१२ स्त्रियों की प्रथम सन्तान हुई और आनुपातिक आयु १६.४ वर्ष थी। ८६.२ प्रतिशतक १७ वर्ष या इस से ऊपर की थीं और १३.८ प्रतिशतक १७ से नीचे की थीं, सब से छोटी उम्र १३ वर्ष थी। ७ स्त्रियों की उम्र १३, और २२ की १४ वर्ष थी। मेरे पास अन्य प्रान्तों की, जिन में उत्तर भारत भी शामिल है, रिपोर्ट है। इनमें ३६६४ में से केवल १० की आयु १५ वर्ष से कम थी और सब से छोटी उम्र १३ वर्ष थी।"

इन अङ्कों की मौजूदगी में मिस का उक्त उद्धरण जान बूझ कर उगला हुआ विष नहीं तो और क्या है? परन्तु ये अङ्क उस के 'चुटकला-संग्रह' का काम थोड़े ही देते? इस के आगे मिस मेयो लिखती है:—

"Because of her place in the social system, child-bearing and matters of procreation are the woman's one interest in life, her one subject of conversation, be her caste high or low. Therefore

the child growing up in the home learns, from earliest grasp of word or act, to dwell upon sex relations."

"हिन्दुओं की सामाजिक व्यवस्था में स्त्रियों का काम बच्चे उत्पन्न करना ही है, इस लिए स्त्रियों की बात चीत इसी विषय पर हुआ करती है, चाहे वे उच्च जाति की हों, चाहे नीच जाति की ; और इसी लिये ऐसे घर में पलता हुआ बच्चा भी यही कुछ सुन और देख कर लिङ्ग-सम्बन्धी बातों पर सोच-विचार किया करता है।"

भारतवर्ष में स्त्रियाँ अपने जीवन का उद्देश्य मातृत्व का उच्च आदर्श समझती हैं और युरुप में बच्चों को माता पिता अपने उच्छृङ्खल जीवन में विघ्न समझते हैं और इसीलिये कृत्रिम साधनों का प्रयोग करते हैं। इन दोनों में से कौन सा उच्चतर आदर्श है इस पर बहस करने का यहां मौका नहीं, परन्तु बच्चों में गन्दे विचारों की चर्चा का जो कारण मिस मेयो ने बतलाया है वह भारतवर्ष की ही विशेषता नहीं है। यह गिरावट युरुप में भारतवर्ष से ज़्यादह है। डा० एलबर्ट मौल अपनी पुस्तक 'The Sexual Life of the Child' के १६१ पृ० पर अपने देशों की अवस्था पर लिखते हैं:—

"While the child is to all appearance immersed in a book, while a girl is playing with her doll, the parents or some other adults carry

on a conversation in the child's presence under the influence of an utterly false belief that the latter's occupation engrosses his or her entire attention...but the danger is hardly less when the children have an opportunity of observing their own parents engaged in sexual acts, or even mere preparation for such acts."

"जब बच्चा ज़ाहिरा तौर पर पुस्तक में मग्न होता है, या लड़की अपनी गुड़िया से खेल रही होती है, माता पिता या दूसरे नवयुवक भूल से यह समझ कर कि उन का ध्यान पढ़ने या खेलने में है उन के सामने गन्दी २ बातें शुरु कर देते हैं... परन्तु कभी २ तो माता पिता अपने बच्चों के देखते देखते काम में प्रवृत्त होते हैं या उस की तय्यारी शुरू कर देते हैं...इस से बच्चों के पतन की सम्भावना और भी बढ़ जाती है।"

यह नहीं हो सकता कि मिस मेयो को अपनी ज़ाति के लोगों की इन बातों का पता न हो। जिसे अपनी आँख का शहतीर कष्ट नहीं देता वह दूसरे की आँख के तिनके को निकालने चली है! मेरे कथन का यह अभिप्राय बिल्कुल नहीं कि मैं अपने देश के ऐसे माता-पिताओं का बचाव चाहती हूँ। वे मूर्ख हैं, अपनी सन्तान की अपने-हाथों हत्या कर रहे हैं, उन्हें माता-पिता बनने का ही अधिकार नहीं—परन्तु, मेयो! भारत को यह पाठ पढ़ाने के लिए तुम्हारी ज़रूरत नहीं! तुम अपने देश की सुध लो!

इसी अध्याय में लिखा है:—"Shiva, one of the greatest Hindu deities, is represented, on high-road shrines, in the temples, on the little altar of *the home, or in personal amulets, by the image* of the male generative organ, in which shape he receives the daily sacrifices of the devout. The followers of Vishnu...wear painted upon their foreheads the sign of the function of generation."

"शिव जो कि हिन्दुओं के बड़े-बड़े देवतों में से एक है मुख्य सड़कों पर बने देवालयों में, मन्दिरों में, घर के छोटे से स्थान में, तावीज़ों में, पुरुष-जननेन्द्रिय की शक्ल में प्रतिदिन पूजा जाता है···विष्णु के अनुयायी अपने माथों पर प्रजनन-क्रिया के चिन्ह की छाप लगाते हैं।"

मिस मेयो का कहना है कि १२ सितम्बर १६२३ को जेनवा की कान्फ़रेन्स में अश्लील साहित्य को बन्द करने के लिये सब जातियों ने प्रस्ताव स्वीकृत किया किन्तु भारत को 'कोड' में (१६२५ का एक्ट नं० ८, सेक्शन २६२) उक्त अश्लीलताओं को धर्म का हिस्सा समझ कर उन की रक्षा कर ली गई !

भारत की गिरावट का चित्र खींचती हुई यह मिस लिखती है:—

"In many parts of the country, north and south, the little boy, his mind so prepared, is

likely, if physically attractive, to be drafted for the satisfaction of grown men, or to be regularly attached to temple, in the capacity of a prostitute. Neither parent as a rule sees any harm in this, but is rather flattered that the son has been found pleasing."

"भारतवर्ष में, उत्तर-दक्षिण, अनेक स्थलों पर, छोटे २ बालक यदि देखने में ख़ूबसूरत हों तो काम वासना की पूर्ति में काम आते हैं या उन्हें वेश्यावृत्ति के लिये मन्दिर में रख लिया जाता है। माता पिता को भी इस में कोई आपत्ति नहीं, उन्हें इस बात से ख़ुशी होती है कि उन का लड़का इतना पसन्द किया गया है।"

मिस मेयो ने अपनी निर्लज्जता और झूठ की यहाँ पराकाष्ठा कर दी है। मद्रास की तरफ़ कई मन्दिरों में देव दासियाँ रखने का रिवाज़ है जिस के विरुद्ध भी हाल ही में वहाँ की लेजिस्लेटिव कौन्सिल में प्रस्ताव पास हो गया है। मन्दिरों में लड़के रखने की प्रथा कहीं नहीं है। यह दुराचार भारतवर्ष में मुसलमानों की कृपा से आया है। मिस मेयो का देश भी इस से ख़ाली नहीं है। हेविलाक इलिस 'Sexual Inversion' नामक पुस्तक के २६१ पृष्ठ पर लिखते हैं:—

" 'It has been stated by many observers—in America, in France, in Germany, and in England

—that homosexuality is increasing among women.' 'I believe', writes a well-informed American correspondent, 'that sexual inversion is increasing among Americans—both men and women'...."

"अनुसन्धान करने वालों ने पता लगाया है कि अमेरिका, फ्राँस, जर्मनी और इङ्गलैंड में बदमाशी, ख़ास कर स्त्रियों में, बढ़ रही है। एक जानकार अमेरिकन का कथन है कि अमेरिका की स्त्रियों तथा पुरुषों में बदमाशी बढ़ रही है।"

इलिस महाशय इसी पुस्तक के ३५१ पृष्ठ पर अमेरिका के एक और जानकार की साक्षी उद्धृत करते हैं:—

"The great prevalence of sexual inversion in American cities is shown by the wide knowledge of its existence. Ninety-nine normal men out of a hundred have been accosted on the streets by inverts, or have among their acquaintances men whom they know to be sexually inverted. Everyone has seen inverts and knows what they are.... The world of sexual inverts is, indeed, a large one in any American city, and it is a community distinctly organized—words, customs, traditions of its own; and every city has numerous meeting places; certain churches where inverts congregate."

"अमेरिका में बदमाशों की अधिकता का परिचय इस से मिलता है कि उन के होने का ज्ञान प्रायः सब को है। राह जाते १०० भले-मानसों में से ६६ आदमियों को इन बदमाशों ने पुकारा है, अथवा १०० में से ६६ आदमियों के ऐसे लोग परिचित हैं जिन्हें वे जानते हैं कि ये बदमाश हैं। हरेक आदमी ने बदमाशों को देखा है और वह जानता है कि बदमाश क्या बला है...इन बदमाशों की दुनियाँ अमेरिका में बहुत बढ़ी हुई है, इन का एक सुनियन्त्रित समुदाय है—इन के अपने संकेत, प्रथा तथा कथानक हैं; प्रत्येक शहर में इन के अनेक मिलने के स्थान हैं; कई गिर्जे ऐसे हैं जहाँ ये लोग इकट्ठे होते हैं।"

जिस मिस के अपने देश की यह अवस्था है वह भारत पर लाञ्छन लगाने का साहस करती है!

इस के आगे मिस मेयो लिखती है:—"In fact, so far are they from seeing good and evil as we see good and evil, that the mother...will practice upon her child—the girl 'to make her sleep well', the boy 'to make him manly', an abuse which the boy, at least, is apt to continue daily for the rest of his life."

"ये लोग अच्छाई-बुराई के वह अर्थ नहीं लगाते जो हम लगाते हैं, इसलिये एक माँ अपनी लड़की को गाढ़ निद्रा में सुलाने और लड़के को पुरुष बनाने के लिए उन पर (हस्त-

मैथुन) करती है, जिस बुराई को कम-से-कम लड़का प्रतिदिन जीवन भर जारी रखता है।"

इन वाक्यों को पढ़ कर किस भारतीय की आँखों में खून नहीं उतर आएगा। भारतीय देवियों पर यह कलङ्क ! मातायें स्वयं अपने लड़के-लड़कियों को ख़राब करती हैं—यह ऐसा झूठ है जिसे पढ़ कर पुस्तक फाड़ डालने को जी चाहता है ! ऐसा झूठ गढ़ सकने वाली के शब्द-कोष में सच-झूठ का क्या अर्थ होगा ? फिर लिखा है:—

"...the beginning of the average boy's sexual commerce barely awaits his ability... Mr. Gandhi has recorded that he lived with his wife, as such, when he was 13 years old, and adds that if he had not, unlike his brother in similar case, left her presence for a certain period each day to go to school, he would either have fallen a prey to disease and premature death or have led a burdensome existence."

"सामान्यतः लड़के का स्त्री-सम्बन्ध कच्ची उम्र में हो जाता है...मि० गाँधी (यंगइण्डिया ७ जनवरी १९२७) ने लिखा है कि वे १३ वर्ष की आयु में ही इस प्रकार का जीवन बिता रहे थे। गाँधी जी लिखते हैं कि यदि वे स्कूल जाने के समय प्रतिदिन स्त्री को छोड़ कर न जाते तो या तो किसी

बीमारी के शिकार हो जाते, या छोटी उम्र में मर जाते, या बुरी हालत में होते।"

गाँधी जी को क्या मालूम था कि उनकी जीवनी का यह सदुपयोग किया जायगा। '५० साल पहले यह बात होगी, पर अब बाल-विवाह की प्रथा उठती जा रही है, यह मिस मेयो को न पता चला। ब्रह्मचर्य्य के विषय में एक हिन्दू बैरिस्टर से मिस मेयो की निम्न बातचीत हुई:—

'My father', said an eminent Hindu barrister, 'taught me wisely, in my boyhood, how to avoid infection.'

'Would it not have been better', I asked, 'had he taught you continence.'

'Ah, but we know that to be impossible.'

एक प्रसिद्ध हिन्दू बैरिस्टर ने मुझे कहा—'मेरे पिता ने, बचपन में ही बड़ी बुद्धिमत्ता से मुझे सिखा दिया था कि प्रजनन-सम्बन्धी बीमारियों से कैसे बच सकते हैं।'

मिस मेयो ने पूछा—'क्या यह अच्छा न होता यदि तुम्हारा पिता तुम्हें ब्रह्मचर्य्य की शिक्षा देता?'

उस ने कहा—'ओह! ब्रह्मचर्य्य तो, हम लोग जानते हैं, एक असम्भव चीज़ है।'

यदि यह घटना ठीक है, जिस पर हमें रत्ती भर भी विश्वास नहीं, तो मिस मेयो के साथ किसी भी पुरुष का

इस प्रकार की बातचीत कर सकना मिस मेयो पर भी कम प्रकाश नहीं डालता। भारतवर्ष का आदर्श 'ब्रह्मचर्य' है, ये बैरिस्टर महोदय बैरिस्टरी के साथ-साथ इन गन्दे विचारोंको युरुप से लाये होंगे, ये विचार उन्हें इस देवभूमि से नहीं मिले।

भारतीयों की शारीरिक शक्ति के ह्रास का वर्णन करते हुए लिखा है:—"After the rough outlines just given, small surprise will meet the statement that from one end of the land to the other the average male Hindu of 30 years, provided he has means to command his pleasure, is an old man, and that from 7 to 8 out of every 10 such males between the ages of 25 and 30 are impotent."

"ऊपर जो संक्षिप्त ख़ाका खींचा गया है उस के बाद यह कहते हुए आश्चर्य नहीं होता कि भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक ३० वर्ष की आयु में हिन्दू, यदि वह समृद्ध हो तो, बूढ़ा हो जाता है और इस प्रकार के प्रत्येक १० पुरुषों में से ७ या ८ नपुन्सक होते हैं।" "इस के लिए प्रमाणों की आवश्यकता हो तो अख़बारों के विज्ञापनों पर, जिन के मालिक हिन्दुस्तानी हैं, दृष्टि डाल लो। नपुन्सकों को जादू के चमत्कारों से पौरुष देने वालों के इश्तिहारों से कालम-के-कालम रँगे रहते हैं।" तभी भारत की जन-संख्या दिनोंदिन बढ़ती जा रही है!

यदि किसी स्त्री के बच्चा न होता हो तोः—"In case, however, of the continued failure of the wife—any wife—to give him a child, the Hindu husband has a last recourse; he may send his wife on a pilgrimage to a temple, bearing gifts. And, it is affirmed, some castes habitually save time by doing this on the first night after the marriage. At the temple by day, the woman must beseech the god for a son, and at night she must sleep within the sacred precints. Morning come, she has a tale to tell the priest of what befell her under the veil of darkness."

" 'Give praise, Oh daughter of honour, it was the God', replies the priest. And so she returns to her home."

"बच्चा न होने की हालत में हिन्दु पति के पास एक रास्ता है। वह अपनी स्त्री को कुछ उपहार लेकर धार्मिक यात्रा के लिए किसी मन्दिर में भेज सकता है। कहते हैं, कई जातियाँ तो समय बचाने के लिए शादी की पहली रात को ही स्त्री को मन्दिर में भेज देती हैं। मन्दिर में दिन को तो स्त्री पुत्र-प्राप्ति के लिए देवता का आराधन करती है और रात को मन्दिर में ही सोती है। प्रातःकाल होता है और

वह पुजारी को रात की घटना सुनाती है; अन्धेरे में उस के साथ क्या-क्या हुआ! पुजारी कहता है, हे सती! देवता की स्तुति कर—यह स्वयं परमात्म-देव थे! और इस प्रकार स्त्री अपने घर को लौट आती है।”

तीसरे अध्याय में मिस मेयो ने बाल विवाह के तीन कारण बतलाये हैं:—(१) प्रथा, (२) हिन्दुओं के घर में कई लड़के भी रहते हैं इस लिये कहीं हाथ से निकलने से पहले लड़की दूषित न हो जाय, यह भय, और (३) यौवन के बाद लड़की की जागती हुई प्रबल कामना। Age of Consent Bill 'स्वीकृति की आयु के बिल' पर १९२५ में हुए एसेम्बली के विवाद को उद्धृत करते हुए उस ने दर्शाया है कि मदन मोहन मालवीय जैसे नेताओं ने भी स्वीकृति की आयु के १४ वर्ष किये जाने का घोर विरोध किया। इस का उत्तर मालवीय जी ही दें! हाँ, बाल-विवाह के पिछले जो दो कारण बतलाये गए हैं वे इस मिस की नीचता को सिद्ध करते हैं। हिन्दुओं के घर में जो लडके रहते हैं वे या तो लड़की के भाई होते हैं या नज़दीकी रिश्तेदार!—उन से डर? यह भारतवर्ष के लिए नया विचार है जो कि मिस मेयो के दिमाग़ में उपजा है। हाँ, युरुप में ज़रूर भाई-बहिन तक में पर्दा नहीं रहता। डा० मौल अपनी पुस्तक के २१२ पृ० पर लिखते हैं:—

“In many cases brothers and sisters arrange to satisfy one another's curiosity on this point.

Elder brother, and younger, or brother and sister, will often seek to enlighten one another..."

माता-पिता लड़की की काम-वासना को रोक नहीं सकते, इसलिये उस का विवाह जल्दी कर देते हैं: यह ऐसा लाञ्छन है जिस का उत्तर—'त्राहि माम्', 'त्राहि माम्' के अतिरिक्त कुछ नहीं दिया जा सकता। यह कैसी स्त्री है जो दूसरे देश की अपनी बहनों के सम्बन्ध में इतना बड़ा झूठ लिखने के लिए तय्यार हो सकती है! किसी का 'रुपया बिना खाये' निःस्वार्थ भाव से ऐसा झूठ बोलने की हिम्मत मिस मेयो में ही है! Age of Consent का बिल एसेम्बली में गिर गया, इस पर मारगरेट कज़न्स लिखती हैं:—"भारत का जाग्रत स्त्री-समाज पिछले १० वर्षों से 'स्वीकृति की आयु' बढ़ाने का सरकार से अनुरोध कर रहा है। राजा राममोहन राय के समय से समाज-सुधारक-दल भी इस के लिए प्रयत्नशील है। एक ही ज़िले से १० हज़ार स्त्रियों ने इस के लिये सरकार के पास प्रार्थना पत्र भेजा है। दूसरी जगह की ७ हज़ार स्त्रियों ने सरकार से अनुरोध किया है कि १६ वर्ष से पहले लड़की की शादी को दण्डनीय समझा जाय। इन सब बातों का मिस मेयो ने कहीं ज़िक्र तक नहीं किया। इस के स्थान पर वह यहाँ तक झूठ बोलने पर उतारू हो गई है कि यह बिल हिन्दुओं की विमति के कारण गिरा दिया गया। असल बात यह थी कि जहाँ तक आयु बढ़ाने का

प्रश्न था, सरकारी सदस्यों के विरोध करने पर भी, वह अंश स्वीकृत हो गया था, परन्तु नियम को तोड़ने पर दण्ड कितना रक्खा जाय इस प्रश्न के आने पर यह बिल गिर गया। यदि एसेम्बली के सरकारी सदस्य बिल का विरोध न करते तो १४ वर्ष की लड़कियाँ माता बनती हुई दिखाई न देतीं। हम स्त्रियाँ, ब्रिटिश सरकार पर दोषारोप करती हैं कि जिन सुधारों के लिए देश तैय्यार है, उन्हें लाने में वह जान-बूझ कर देरी कर रही है।" इस प्रकरण में एक और बात ध्यान देने योग्य हैं। इधर तो "स्वीकृति की आयु" पर एसेम्बली में इतना विवाद दिखाई देता है परन्तु पिछले साल मौर्वी-राज्य में, जो एक छोटी सी देसी रियासत है, कानून द्वारा 'स्वीकृति की आयु' १६ साल कर दी गई है। क्या एक देसी शासक का यह प्रशंसनीय कार्य सिद्ध नहीं करता कि शासन-नियमों का अधिकार भारतवासियों के हाथों में आते ही समाज-सुधार में भी वे पिछड़े नहीं रहेंगे?

इस के अतिरिक्त भारतवर्ष ही ऐसा देश नहीं जिस में 'Age of Consent' इतनी छोटी उम्र में हो। अमेरिका के कई हिस्सों में स्वीकृति की आयु ८ वर्ष है। इलिस महोदय 'Sex in Relation to Society' के ५२८ पृष्ठ पर लिखते हैं:-"There has been, during recent years, a wide limit of variation in the legislation of the different American States on this point, the difference of the

two limits being as much as eight years, and in some important States.........eighteen is declared to be 'rape'..."—अर्थात्, "हाल ही के सालों में 'स्वीकृति की आयु' के सम्बन्ध में अमेरिका की भिन्न २ रियासतों के कानूनों में बहुत भेद दिखाई दे रहा है। कई जगह आठ वर्ष की अवधि है तो कई जगह १८ वर्ष से छोटी लड़की के साथ सम्बन्ध को नियम विरुद्ध ठहराया गया है।"

हाल ही में, ग्रेट ब्रिटेन में, 'विमेन्स सोश्यल कौन्सिल' का एक डेप्यूटेशन गृह-सचिव के पास इस लिये गया कि वहाँ लड़के-लड़कियों की शादी की आयु पर प्रतिबन्ध लगाया जाय। उस डेप्यूटेशन की एक सदस्या मिस ब्रे थीं। उन्हों ने लिखा है:—"We hear a good deal about child-marriages in India, but while the home country allows its childern to marry at 12 years of age (for girls) and 14 years (for boys) there is little hope of such legislation being introduced in India and other countries where it is vitally necessary."—अर्थात्, "जब इंग्लैण्ड में ही लड़कियाँ कानूनन १२ वर्ष और लड़के १४ वर्ष में शादी कर सकते हैं तब भारतवर्ष से क्या आशा की जा सकती है।" १९२४ में दो लड़कियों की १४ वर्ष में और १९ की १५ वर्ष में शादी हुई। १९२५ में भी दो की १४ और २४ की १५ वर्ष में शादी हुई। १९२६ में ४ लड़कियों की

१४ और ३४ की १५ वर्ष में शादी हुई। यह ग्रेट ब्रिटेन की कहानी है जिस की वकालत 'मदर-इण्डिया' में की गई हैं!

मिस मेयो ने ४ थे अध्याय का शीर्षक 'Early to Marry and Early to Die'—'जल्दी शादी करो और जल्दी मर जाओ'—रखा है। बाल-विवाह के पोषकों के पास इस का क्या जवाब है? क्या मिस मेयो के चेलैञ्ज का वे कुछ जवाब देंगे? मैं चाहती हूँ कि हम इस प्रथा को दूर कर सकें!

५ वें अध्याय में लिखा है—"Most of the women are very young. Almost all are venereally affected."

यह एक हस्पताल का ज़िक्र है—"उन में से बहुत सी बिल्कुल युवती हैं। प्रायः सभी प्रजनन-सम्बन्धी बीमारियों से आक्रान्त हैं।" इसी प्रकार एक अँग्रेज़ स्त्री-चिकित्सक ने मेयो से कहा—"मेरे बीमार विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की स्त्रियाँ हैं। प्रायः सभी को प्रजनन-सम्बन्धी रोग हैं। जब मैं भारतवर्ष में आयी थी, मैं लड़कियों के पिताओं से जा कर उन की लड़की की हालत कह देती थी क्योंकि मुझे आशा थी कि वे अपनी लड़की के कल्याण के लिये कुछ करेंगे। परन्तु बातचीत करने पर मुझे मालूम पड़ता था कि माता-पिता को अपनी लड़की के पति की अवस्था का शादी से पहले ही ज्ञान था और फिर भी उन्हें इस में शर्म नहीं आती थी और ना ही वे इस में कुछ दोष समझते थे। यह देख कर मैंने उन लोगों से कहना ही छोड़ दिया।" एक मद्रास की डाक्टरनी ने कहा—

"मैं हज़ारों स्त्रियों का इलाज करती हूँ। मैंने एक स्त्री भी नहीं देखी जिसे प्रजनन-सम्बन्धी (Veneroal) बीमारी न थी।"

उक्त कथनों में मिस मेयो की मिलावट कितनी है और यथार्थ कहा कितना गया है इस का निर्णय नहीं हो सकता। चालाक मिस ने नाम एक का भी नहीं दिया। यह हम पहले ही लिख चुके हैं कि जहाँ-जहाँ उस ने नाम दिये हैं वहाँ-वहाँ लोगों ने उन बातों के कहे जाने की सत्यता से इन्कार किया है। परन्तु हो सकता है, हस्पताल में ऐसे रोगी जाते हों। आखिर हस्पताल तो इसी काम के लिये हैं। इस से क्या सब रोगी सिद्ध हो जाते हैं? इन बीमारों से भारतीय जनता के विषय में कुछ नहीं कहा जा सकता। हाँ, जनता के विषय में कथन निम्न प्रकार के होते हैं। 'The Sexual Life of Our Time' के लेखक ब्लोच महाशय ३६२ पृष्ठ पर लिखते हैं:—

"From these we learn that Denmark, Germany, German Austria and Switzerland, show the most favourable conditions; next come Belgium, France, Spain, Portugal, North and Middle Italy. Worst of all are the conditions in Southern Italy, Greece, Turkey, Russia, and—England."

"प्रजनन सम्बन्धी रोग डेनमार्क, जर्मनी, जर्मन आस्ट्रिया आदि में है। यह रोग बुरी हालत में दक्षिणी इटली, ग्रीस, टर्की, रूस तथा इङ्गलैण्ड में पाया जाता है।"

यहाँ अच्छी हालत डेनमार्क की बतलाई गई है। उस की राजधानी के विषय में लिखते हुए ब्लौच महाशय लिखते हैं:—

"In these last ten years, for every 100 youngmen living, there have been 119 infections during ten years ; that is to say, on the average every one has been infected once, and a great many have been infected more than once."

"पिछले दस वर्षों में १०० आदमियों में से ११९ को प्रजनन सम्बन्धी बीमारी हुई है; अर्थात्, सामान्यतया हरेक आदमी को एक बार तो रोग हो ही चुका है परन्तु कईयों को दो बार हुआ है।" आगे बर्लिन के विषय में ब्लौच महाशय लिखते हैं:—

"It further appears that of the men who entered on marriage for the first time when above the age of 30 years, each had, on the average, had gonorrhœa twice, and about one in four or five had been infected with syphilis."

"गणना से ज्ञात होता है कि बर्लिन में ३० वर्ष के बाद जिन लोगों ने पहली शादी की उन सब को दो बार 'गनोरिया' की बीमारी हो चुकी थी और प्रत्येक ४ या ५ में से एक को 'सिफ़लिस' की बीमारी हो चुकी थी।"

और फिर इङ्गलैण्ड के विषय में, तो ब्लौच महाशय लिख ही चुके हैं कि उस की दशा सभी देशों से बुरी है!

अमेरिका के विषय में, जहाँ की मिस मेयो है, लिखते हुए एलिस महोदय अपनी पुस्तक 'Analysis of the Sexual Impulse' के २२५ पृ. पर लिखते हैं: "Wolbarst, studying the prevalence of gonorrhœa among boys in New York states:—In my study of this subject there have been observed 3 cases of gonorrheal urethritis, in boys aged, respectively, 4,10 and 12 years, which were acquired in the usual manner, from girls ranging between 10 and 12 years of age. In each case, according to the story told by the victim, the girl made the first advances..."

"वोलबार्स्ट महोदय न्यूयार्क के लड़कों में 'गनोरिया' पर लिखते हुए कहते हैं कि उन्हें तीन ऐसे रोगी मिले जिन्हें ४, १० और १२ वर्ष की आयु में यह बीमारी थी। पूछने पर मालूम हुआ कि १० या १२ साल की आयु की लड़कियों से उन्हें यह बीमारी लगी और प्रत्येक अवस्था में पहल लड़की की तरफ़ से हुई!"—यह है 'न्यूयार्क' की कहानी!

एलिस महोदय अपनी पुस्तक 'Sex in Relation to Society' के ३२६ पृष्ठ पर 'Civilization (सिविलिज़ेशन) को 'Syphilization' (सिफ़िलिज़ेशन) बतलाते हैं और लिखते हैं:—"In America a Committee of the Medical Society of New York appo-

inted to investigate the question, reported as the result of exhaustive inquiry that in the city of New York not less than a quarter of a million of cases of venereal disease occurred every year, and a leading New York dermatologist has stated that among the better class families he knows intimately at least one-third of the sons have had syphilis. In Germany eight hundred thousand cases of venereal disease are by one authority estimated to occur yearly, and in the larger universities twenty-five per sent. of the students are infected every term, venereal disease being, however, specially common among students...... Yet the German army stands fairly high as regards freedom from venereal disease when compared with the British army which is more syphilized than any other European army... Even within the limits of the English army it is found in India that venereal disease is ten times more frequent among British troops than among Native troops......Stritch estimates that the cost to the British nation of venereal diseases in the

army, navy and Government departments alone, amounts annually to £ 3, 000, 000...... the more accurate estimate of the cost to the nation is stated to be £ 7,000,000."

"अमेरिका की एक कमेटी का कहना है कि न्यूयार्क में प्रतिवर्ष अढ़ाई लाख से ज़्यादा लोगों को प्रजनन-सम्बन्धी रोग होता है। एक त्वग्रोगज्ञ का, जो न्यूयार्क का रहने वाला है, कथन है कि उच्च घराने के लोगों के लड़कों में से, जिन्हें वह भली प्रकार जानता है, कम से कम एक तिहाई को 'सिफ़लिस' है। जर्मनी में आठ लाख को प्रतिवर्ष प्रजनन-सम्बन्धी रोग होते हैं। वहां के विश्वविद्यालयों में २५ प्रति शतक विद्यार्थियों को प्रति-सत्र ये रोग होते हैं...... जर्मन फ़ौज का सिफ़लिस की दृष्टि से अंग्रेज़ फ़ौज से, बहुत अच्छा हाल है। अंग्रेज़ सेना तो युरुप के सभी देशों से गई बीती है। ब्रिटिश सेना में भी भारतीय सैनिकों की अपेक्षा अग्रेज़ सैनिकों में यह बीमारी दस गुना ज़्यादा फैली हुई है।......स्ट्रिच महोदय ने हिसाब लगाया है कि अँग्रेज़ों का आर्मी, नेवी तथा सरकारी विभाग में ही प्रजनन सम्बन्धी बीमारियों का ठीक-ठीक बजट ७० लाख पौण्ड (दस करोड़ रुपये के लगभग) प्रतिवर्ष है।"

जिन देशों की यह अवस्था है वहाँ से एक महिला आकर भारत की देवियों पर लाञ्छन लगाने का साहस करती है! यह

सब कुछ तो हम ने यहीं बैठे २ लिख डाला है !! अमेरिका तथा इङ्गलैण्ड जाकर देखा जाय तो न जाने क्या-क्या गुल खिलें।

इस अध्याय को समाप्त करने से पहले मिस मेयो लिखती है कि उसे एक डाक्टर ने बतलाया:—"They commonly experience marital use two and three times a day"

"वे प्रायः दिन में दो-तीन वार संयोग करते हैं !"—मिस मेयो ने लेखनी की लगाम को खुला छोड़कर लिखा है। इस प्रकार की बातें जो गन्द में और झूठ में एक दूसरे से मुकाबिला करती हैं एक युरोपियन महिला की कलम से ही निकल सकती हैं। इन्हीं बातों में 'मदर-इण्डिया' का प्रथम भाग समाप्त हो गया है !

द्वितीय भाग

द्वितीय भाग

मिस मेयो लिखती है कि उसे किसी बूढ़े हिंदू ज़मींदार ने कहाः—"मेरे १२ बच्चे हुए। १० लड़कियाँ थीं, वे भला कैसे जीतीं? इतना ख़र्चा कौन बर्दाश्त करता? दो लड़के थे; बस, उन्हें मैंने बचा लिया।"

सर माइकल ओडवायर जब भरतपुर रियासत का 'सेटलमेण्ट ऑफ़िसर' था उस समय की एक घटना का वर्णन उस ने अपनी पुस्तक "India As I Knew It" में किया है, उस का उल्लेख भी मिस मेयो ने इस सिल-सिले में कर दिया है। घटना का वर्णन ओडवायर ने इस प्रकार किया हैः—"महाराजा की बहिन की पञ्जाब के किसी बड़े सर्दार से शादी होने वाली थी। महाराजा उस समय बहुत छोटा था, इसलिये घर वाले लोग ज़ोर डाल रहे थे कि इस अवसर पर बड़े लोगों को जितना ख़र्च करना चाहिये उतना किया जाय, अर्थात् ३०, ४० हज़ार पौंड। रियासत की कौंसिल के जो स्थानीय सदस्य थे वे इस के पक्ष में थे। उस समय रियासत ब्रिटिश-सरकार की देख-रेख में थी, इसलिये पोलिटिकल एजण्ट ने और मैंने ऐसे दुष्काल के समय इतना अपव्यय करने का घोर विरोध किया। अन्त में मामला भरी कौंसिल के सामने रक्खा गया। मैंने कौंसिल के सब से पुराने सदस्य से पूछा कि ऐसे अवसरों पर पहले कितना व्यय होता रहा है? उस ने

सिर हिला कर कहा, ऐसा पहला कोई अवसर ही नहीं आया। वृद्ध महानुभाव कुछ देर तक चुप रहे, फिर बोले, साहब! आप को हमारी प्रथाओं का पता ही है, आप को इस का कारण मालूम ही होगा! लड़कियाँ पैदा तो ज़रूर हुईं थीं परन्तु इस सन्तति तक कभी किसी लड़की को ज़िन्दा ही नहीं रहने दिया गया।"

क्या महाराज भरतपुर ने 'मदर-इण्डिया' में यह घटना पढ़ी है? यदि सचमुच ऐसा होता रहा है तो बड़े खेद की बात है, परन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि ऐसी अवस्था भारतवर्ष में आम पायी जाती है। ऐसा होता तो भारत में ३१ करोड़ आबादी काहे को दिखाई देती! इस में शक नहीं कि कई लोगों का लड़कियों के प्रति वह ध्यान नहीं जो लड़कों के प्रति होता है। स्त्री-जाति के प्रति इस उपेक्षा को हमें दूर अवश्य करना चाहिये।

मेयो ने किसी हस्पताल में 'स्वयं देखी हुई' एक घटना लिखी है। वह कहती है कि यह बँगाल की घटना है:—"पाँच, छः वर्ष की एक लड़की कूएँ में गिर गई। माता उसे लेकर हस्पताल में दौड़ी-दौड़ी आयी। एक-दो दिन में अवस्था भयानक हो गई। लड़की की हालत बिगड़ रही थी, उस की अम्मा पास बैठी थी और परमात्मा से प्रार्थना कर रही थी। इतने में एक बंगाली बाबू जो क्लर्क-सा जान पड़ता था आया और डाक्टरनी से बोला:—

'मिस साहेब ! मैं अपनी स्त्री को लेने आया हूं।'

'तुम्हारी स्त्री', डाक्टरनी ने चिल्ला कर कहा। 'अपनी स्त्री की हालत देखो, अपनी लड़की की तरफ़ आँख उठा कर देखो—क्या तुम्हें कुछ होश नहीं है ?'

'क्यों नहीं, पर, मैं अपनी स्त्री को घर ले जाने के लिये आया हूँ। विवाह-सम्बन्ध का जो उचित उपयोग है (For my proper marital use) उस के लिये मैं चाहता हूँ वह मेरे साथ घर चले।'

'परन्तु यदि तुम्हारी स्त्री इस समय चली जायगी तो लड़की मर जायगी—तुम इन दोनों को जुदा नहीं कर सकते; देखो'—इतने में लड़की जो अपने पिता की धमकियों को समझती-सी जान पड़ी अपनी माँ के साथ चिपट गई और चिल्लाने लगी।

स्त्री ने दण्डवत् प्रणाम कर के, घुटने पकड़ कर, पाँव चूम कर, दोनों हाथ जोड़ कर, पति के पाँव की रज माथे पर लगा कर बार बार कहा—'मेरे स्वामी, दया करो, करुणा करो।'

'चलो—चलो, मुझे तुम्हारी ज़रूरत है—तुम्हें मुझ से जुदा हुए बहुत देर हो गई है।'—बाबू ने कहा।

'मेरे स्वामी, बच्चे की हालत देखो!'—स्त्री ने करुणस्वर में रुदन करते हुए कहा।

बाबू ने अपनी सुकोमलाङ्गी पत्नी को पाँव से ठुकरा दिया और कहाः—'मैंने जो कहना था कह चुका'—और बाबू

चुपचाप बाहर चला गया। स्त्री उठी; लड़की चिल्लायी। डाक्टरनी ने पूछा, क्या तुम चली जाओगी ? स्त्री ने आह भरते हुए कहा: 'मैं आज्ञा का उल्लङ्घन नहीं कर सकती'। वह उठी, मुँह पर पर्दा किया और अपने पति के पीछे दौड़ती हुई हस्पताल से बाहर हो गई।"

इस घटना को पढ़ कर कितने ही भाव दिल में उठते हैं। आखिर, हम भी तो भारतवर्ष को जानते हैं। यदि कोई कहता कि यह घटना अमेरिका या इङ्गलैण्ड में हुई तो हमें इतना अचम्भा न होता, क्योंकि जहाँ तक समाचार पत्रों से ज्ञात हो सकता है वहाँ के स्त्री-पुरुषों का वैवाहिक सम्बन्ध पाशविक सिद्धान्तों पर ही आश्रित है। यदि कोई कहे कि भारतवर्ष में यह घटना हुई तो भारतवर्ष को, और यहाँ के स्त्री-पुरुषों में विवाह-विषयक जो उच्च-विचार काम कर रहे हैं उन्हें, जानता हुआ व्यक्ति इस में विश्वास नहीं कर सकता। कम से कम इस घटना को भारतीय जीवन का सूचक नहीं कहा जा सकता। भारत का कोई भी युवक किसी डाक्टरनी के सन्मुख उन शब्दों का प्रयोग नहीं कर सकता जिन का प्रयोग उक्त घटना में 'बाबू' ने किया है।

मिस मेयो इस के आगे पद्म-पुराण के उस वाक्य की खिल्ली उड़ाती है जिस में लिखा है कि पति चाहे कैसा ही क्यों न हो, चोर हो, जार हो, व्यभिचारी हो, जुआरी हो, पागल हो, वह स्त्री के लिये देवता ही है।

इस में सन्देह नहीं कि भारत की सतियों ने अपने पति को सदा देवता ही माना है; क्या पतियों का कर्तव्य नहीं कि वे, इन उच्च आदर्शों में जीवन बिता देने वाली, देवियों के योग्य बनने का प्रयत्न करें ? इस के उत्तर का भार मैं भारतवर्ष के पुरुष समाज के लिए यहीं छोड़ देती हूँ।

विवाह-सम्बन्ध के बाद सुसराल में लड़की की जो दुर्गति बनाई जाती है उस का चित्र मिस मेयो ने यों खींचा है:- "हिन्दू विवाह का अभिप्राय यह नहीं है कि नई गृहस्थी खुले। वह छोटी सी बच्ची जिसे वधू कहा जाता है वर के माता-पिता की गृहस्थी में ही शामिल कर ली जाती है। वहाँ एकदम उस की स्थिति अपनी सास की नौकरानी की हो जाती है। उस के हरेक हुक्म को उसे बजाना होता है। ससुर और ननद भी उसे जो चाहती हैं, कहती हैं। लड़की को शिक्षा ही ऐसी मिली होती है कि वह चूँ तक नहीं कर सकती। 'वह सिर ऊँचा उठा सकती है' या 'उसे किसी प्रकार की स्वतन्त्रता मिल सकती है'—इस विचार का उस के मन में बीज तक नहीं होता। सास की भ्रुकुटि सदा तनी रहती है, उस के शासन में दया या प्रेम को जगह नहीं होती। यदि दुर्भाग्य से 'बच्ची' को बच्चे पैदा करने में देर लगे, या उस के लड़कियाँ ही होने लगें, तब तो बूढ़ी सास की जीभ कटार हो जाती है, उस के हाथों की मार कड़ी हो जाती है, वह आये-दिन नई-बहू लाने की धमकियाँ उगल उगल कर उस बेचारी के जीवन को अन्ध-

कार मय बना देती हैं, क्योंकि हिन्दू नियम के अनुसार दुबारा शादी कर के प्रथम-स्त्री की जड़ उखेड़ डालना या उसे दासी बना लेना जायज़ है।"

मैं अनुभव से कह सकती हूँ कि कई सासें बहू को अपनी लड़की से भी ज़्यादह प्यार से रखती हैं परन्तु फिर भी अधिकाँश संख्या का चित्र मिस मेयो ने ठीक खींचा है। मैं चाहती हूँ कि भारतवर्ष का सास-समुदाय इन वाक्यों को पढ़े और अपनी बहुओं के साथ लड़ने के स्थान में मिस मेयो के साथ लड़ने की तय्यारी करे। मिस मेयो का कहना है कि पुलिस के खातों में १४-१६ वर्ष की बहुत सी युवतियों की आत्म-हत्या की रिपोर्ट मिली। खाते खुलवा कर देखा गया, उन में लिखा थाः—"पुराना पेट-दर्द और सास के साथ झगड़ा, आत्म-हत्या का कारण है!"

स्त्रियों की दुर्दशा पर मिस सोराबजी ने 'Between The Twi-lights' पुस्तक में कुछ लिखा है। मिस मेयो ने वह भी यहाँ नक़्ल कर दिया है। मिस सोराबजी लिखती हैः— "जब हिन्दू-स्त्री किसी लड़के की माता बन जाती है तब उस की कुछ कद्र होने लगती है और ज़नाने की दूसरी स्त्रियों की अपेक्षा उस का दर्जा ऊँचा हो जाता है। ...वह कृतकृत्य हुई, उस ने अपनी ज़रूरत साबित कर दी। बच्चे की माँ बन कर उस स्त्री के मुख पर आत्म गौरव की रेखा झलकने लगती है। अब भी वह अपने पति की आज्ञाकारिणी दासी ही रहती

है परन्तु अब वह अपनी 'सत्ता' अनुभव करने लगती है, हिन्दू ज़नाने में जहाँ तक सम्भव है, वह अपने 'व्यक्तित्व' का अनुभव करती है। जो स्त्रियाँ उसे ताने दिया करती थीं उन की तरफ़ वह आँख उठा कर देख सकती है, उस से हृदय में अब सौतन का डर नहीं रहता।"

यह सब कुछ पढ़ कर समझ पड़ने लगता है कि मिस मेयो ने कहीं २ सत्य को बिल्कुल तलाक़ नहीं दिया! परन्तु इतने में वह एक चुटकला और छोड़ देती है जिस से पाठक के मन की अवस्था उस के प्रति फिर वैसी की वैसी हो जाती है। वह लिखती है:—"She has not the vaguest conception how to feed him or develop him. Her idea of a sufficient meal is to tie a string around his little brown body and stuff him till the string bursts."

"भारतीय माता को ज़रा भी मालूम नहीं कि बच्चे को किस प्रकार खिलाना और उस की परवरिश करना चाहिये। पेट भर कर भोजन करने का मतलब वह यह समझती है कि बच्चे के पेट के चारों तरफ़ रस्सी बाँध दी जाय और उस के पेट को तब तक भरा जाय जब तक रस्सी टूट न जाय।"

मिस मेयो से हरेक भारतवासी पूछ सकता है, क्या यह बात चुटकले के तौर पर लिखी गई है या सचमुच उस ने यहाँ पेट भरने के इस विचित्र प्रकार को अपनी आँखों से देखा है?

७ वें अध्याय में मिस लिखती है कि उसे एक हिन्दू ने कहाः—"We husbands so often make our wives unhappy that we might well fear that they would poison us. Therefore did our wise ancestors make the penalty of widowhood so frightful in order that the woman may not be tempted."

"हम पति लोग अपनी स्त्रियों को इसलिये दुःखी रखते हैं कि वे हमें विष न दे दें। इसीलिये हमारे बुद्धिमान् पूर्वजों ने वैधव्य की इतनी दुर्दशा की है ताकि पत्नी को विष देने का कभी प्रलोभन ही न हो।"

यदि हिन्दुओं को अपनी स्त्रियों से विष दिये जाने का सदा भय रहा करता तो शायद उन के घरों में चौका-चूल्हा दिखाई न देता और वे युरोपियनों की तरह होटलों में ही जीवन बिताया करते। यदि सचमुच यह बात किसी हिन्दू ने उसे बताई है तो झूठ बताई है। हाँ, भारत में विधवाओं की दुर्दशा अवश्य की जाती है और उस के प्रायश्चित्त में उसे 'मदर-इण्डिया' जैसे थप्पड़ भी खाने पड़ते हैं !

स्त्रियों के प्रति हिन्दुओं की हृदय-हीनता का मर्मवेधी वर्णन करते हुए मिस मेयो लिखती है कि जब सती प्रथा के हटाये जाने का ब्रिटिश सरकार प्रयत्न कर रही थी उस समय इस घृणित प्रथा को वैसे-का-वैसा बनाये रखने के लिये इन लोगों ने प्रीवी कौन्सिल तक के दरवाज़ों को खटखटाया था। इस

समय भी बाल विवाह तथा दहेज़ आदि की कुप्रथाओं के दैत्यों पर कई लड़कियाँ, जीवित-जाग्रत, साड़ी में आग लगा कर बलि चढ़ गई हैं परन्तु अब भी, इस हतभाग्य देश में, ऐसे लोग मौजूद हैं जो इन दृष्टान्तों से कुछ सबक़ सीखने के स्थान में बालिका के मृदुल अङ्गों से उठती हुई लपटों को देख कर उन में सतीत्व की ज्योति झलकती देखते और हर्ष के आँसू बहाते हैं! १९२५ में भारत वर्ष में २६, ८३४, ८३८—अढ़ाई करोड़ से ज़्यादह—विधवाएँ मौजूद थीं!

मिस मेयो की पुस्तक के ८ वें अध्याय का शीर्षक "Mother India" है। धाया का वर्णन करते हुए लिखा है:—"यह घृणित कार्य समझा जाता है और अछूत जाति की स्त्री ही धाया का काम करती है। जिस समय बच्चा पैदा होने वाला हो उस समय धाया को ख़बर भेजी जाती है। यदि वह अच्छे कपड़े पहने होती है तो उन्हें उतार कर एकदम पुराने कपड़े जो इसी काम के लिये रखे होते हैं—जो पिछली बार बच्चा उत्पन्न होने पर भी पहने गये थे और जिन में न जाने कितने कृमि मौजूद हैं—पहन कर आ जाती है। एक छोटी सी अन्धेरी कोठरी में, स्त्री को, ज़मीन तक लटकते हुए ढीले बानों वाली चारपाई पर डाल दिया जाता है। घर के मैले-कुचैले, फटे कपड़ों से उस का बिस्तर बनाया जाता है। उस कोठरी में धाया प्रवेश करती है। यदि कहीं दीवार में छिद्र हो तो वह उसे गोबर से बन्द कर देती है। इस विषैले वायु मण्डल

में वह एक धूएँदार मट्टी के तेल की बत्ती को, जिस पर चिमनी भी नहीं होती, जलाती है। यदि बच्चा पैदा होने में देर हो तो वह अपने गन्दे हाथों को, जिन के नाख़ून भी कटे नहीं होते, स्त्री के गर्भाशय में डाल डाल कर अन्दर के कोमल अङ्गों का आपरेशन-सा कर देती है। कई युवतियाँ तो इन्हीं दाईयों की भेंट चढ़ जाती हैं।" सचमुच यह वर्णन हृदय को कँपा देने वाला है।

मिस मेयो इसी सिलसिले में लिखती है:—"हिंदुओं में विश्वास है कि यदि कोई स्त्री, बच्चे पैदा होने से पहिले ही मर जाय तो वह भूत बन जाती है, उस के पैर पीछे को होते हैं, वह उसी घर में इधर-उधर घूमा करती है। इसलिये यदि कोई स्त्री इस अवस्था में होती है तो धाया उस घर को ऐसे भूत से बचाने के लिये मरणासन्न स्त्री की आँखों में पहले मिर्च मलती है ताकि आत्मा अन्धी हो जाय और उसे रास्ता ही न मिले। फिर वह दो लम्बी-लम्बी लोहे की कीलें लेती है, और, उस बेचारी के छोड़े हुए हाथों को फैला कर—क्योंकि ऐसी अवस्था में वह स्त्री भी अपने भाग्य को जानती है और उसे बिना कुछ किये स्वीकार करती है—प्रत्येक हथेली में से ज़ोर से कीलों को फ़र्श में गाड़ देती है। इस का यह अभिप्राय है कि आत्मा फ़र्श में गड़ गई, अब हिल-जुल न सकेगी और घर वालों को किसी प्रकार का कष्ट न दे सकेगी। इस प्रकार वह स्त्री, दीनभाव से परमात्मा का नाम लेती हुई और अपने

पिछले जन्म के उन भयङ्कर पापों का स्मरण करती हुई जिन के कारण उसे इस जन्म में ये सब यातनाएँ भोगनी पड़ रही हैं, जीवन को समाप्त कर देती है।"

यह घटना उन घटनाओं में से है जिन्हें महात्मा गाँधी के शब्दों में कह सकते हैं कि मिस मेयो ने कई ऐसी बातें लिखी हैं जिन का साधारणतया हम लोगों को ज्ञान तक नहीं है। क्या सचमुच भारतवर्ष का यही चित्र है?

मिस मेयो ने लिखा है:—"भारतवर्ष में जो बच्चे जीवित पैदा होते हैं उन में से २० लाख प्रतिवर्ष मर जाते हैं। पैदाइश के पहले महीने में ही ४० प्रति शतक बच्चों की मृत्यु हो जाती है और बचे हुओं में से पहले महीने में ६० प्रति शतक की मृत्यु होती है! बहुत से बच्चे तो मरे-हुए ही पैदा होते हैं, जिस का कारण, सिफ़लिस तथा गनोरिया है।" सिफ़लिस तथा गनोरिया के विषय में पहले पर्याप्त लिखा जा चुका है!

नौवाँ अध्याय पर्दे पर है। प्रारम्भ में ही मिस मेयो एक ऐसी बात लिख डालती है जो भारतीय गाँवों से परिचित व्यक्ति को एक गन्दी गाली मालूम पड़ती है। मिस मेयो ने स्वयँ स्वीकार किया है कि भारत की ६० प्रति शतक जनता ग्रामों में रहती है; और यह हम अच्छी तरह जानते हैं कि भारत के गाँवों में सनातन-काल से यही भाव चले आ रहे हैं कि गाँव के किसी भी व्यक्ति की लड़की सारे गाँव की लड़की है, और किसी की भी बहू सारे गाँव की बहू है;

माताएँ अपनी लड़की को घर में छोड़ निश्चिंत हो कर जिस-किसी भी काम के लिये बाहर जा सकती हैं और जाती हैं, परन्तु फिर भी मिस मेयो ने मानो ज़हर उगलते हुए लिख डाला है:—"The Hindu peasant villager's wife will not leave her girl at home alone for the space of an hour, being practically sure that if she does so the child will be ruined."

"हिंदू ग्रामीण की स्त्री अपनी लड़की को एक घण्टे के लिये भी अकेली घर पर नहीं छोड़ेगी क्योंकि उसे पूर्ण निश्चय होता है कि यदि वह ऐसा करेगी तो लड़की की इज़्ज़त ख़तरे में होगी।"

हमें तो मिस मेयो की बातों पर विक्षोभ इसीलिये होता है क्योंकि उस ने झूठ जो बोला है सो तो है ही, परन्तु साथ इतने गन्दे आक्षेप किये हैं जिन्हें सुनते ही नफ़रत होती है। इस पुस्तक को पढ़ने से ऐसा मालूम पड़ने लगता है कि भारतवर्ष बदमाशों से भरा हुआ देश है, लड़कियों को सुरक्षित रखने के लिये उन के माता-पिता चौबीसों घण्टे पहरा देते रहते हैं, किसी क्षण भी चूक जाँय तो लुटिया डूब जाती है। मिस मारगरेट कज़न ने लिखा है कि अमेरिका को जानकारों ने 'दुराचार से भरा हुआ देश'—'The most crime-ridden country in the world'— कहा है; मिस मेयो की पुस्तक पढ़ कर जान पड़ता है कि इस कथन में सचाई अवश्य है।

तभी तो अमेरिका की एक स्त्री ने, भारत के विषय में, और वह भी भारत की स्त्रियों के विषय में, निधड़क होकर, अपनी अन्तरात्मा को ताक में रख या शायद बेच कर, ऐसे-ऐसे आक्षेप किये हैं जिन्हें 'पाप' या 'दुष्टाचार' से कम नहीं गिना जा सकता ; जिन के लिये, उस मिस को भारत की सतियों के सामने, इस लोक में या उस लोक में जवाब देना ही पड़ेगा।

उक्त झूठ से अपनी आत्मा को हलका कर के मेयो ने भारत में प्रचलित पर्दा प्रथा को आड़े-हाथों लिया है। भारत की ४ करोड़ स्त्रियाँ, हिंदू तथा मुसल्मान, पर्दे में कैद हैं। मेयो लिखती है कि वह एक पर्दा-पार्टी में मौजूद थी। उस पार्टी का बड़ा रोचक वर्णन 'मदर-इण्डिया' में दिया गया है:—

"दिल्ली में उच्च-पदाधिकारी एक अंग्रेज़ की पत्नी ने अपने घर में एक पर्दा-पार्टी का इन्तिज़ाम किया। दिल्ली के बड़े बड़े घरानों की स्त्रियाँ अपने-अपने बुर्के डाल, महार्घ्य वस्त्रों तथा आभूषणों से मँडित हो, मकान में जुटने लगीं। क्योंकि ये स्त्रियाँ पर्दा करती थीं, इसलिये इन का स्वागत आँग्ल महिला को स्वयं ड्योढ़ी पर जा-जा कर करना पड़ रहा था, किसी पुरुष को वह इस काम के लिये कैसे रख सकती थी? सब ने अन्दर आ-आ कर अपने बुर्के उतार खूंटियों पर टाँग दिये। चाय की तय्यारी होने लगी। वहाँ पर भी खाद्य-पदार्थ उठा-उठा कर बरताने का काम आँग्ल महिला को ही करना पड़ रहा था ; हाँ, दूसरी आँग्ल महिलाएँ अवश्य उसे इस काम

में सहायता दे रही थीं। इतने में क्या हुआ,—एकदम, बाहर, बरामदे में, किसी के आने की आवाज़ सुनाई दी—आदमियों की आवाज़,स्त्रियों की आवाज़ ऊँची-ऊँची सुनाई पड़ने लगी—ये आवाज़ें नज़दीक आने लगीं! आतिथ्य करने वाली आँग्ल महिला के मुख पर सन्नाटा-सा छा गया, कमरे के भीतर तो मानो प्रलय मच गयी!! उन के लम्बे-लम्बे, भारी-भारी सफ़ेद बुर्के पहुँच से दूर थे इसलिये हिन्दुस्तानी औरतें भागती हुईं कोनों में जा छिपीं, दर्वाज़े की तरफ़ पीठ कर के दुबक गईं। आँग्ल महिलाएँ उन की अवस्था समझ कर, दर्वाज़े पर जा खड़ी हुईं,इस प्रकार उन की पीठ से दर्वाज़े पर पर्दा हो गया! इस के अनन्तर आँग्ल महिला ने आकर काँपती हुई भारतीय स्त्रियों से कहा, 'मुझे बड़ा खेद है, पर अब तो सब हो चुका, माफ़ करना, अब आप को डराने वाली कोई घटना न होगी', और हमारी तरफ़ मुंह कर के कहा, 'रूज़वल्ट्स मिलने के लिए आये थे, उन्हें नहीं मालूम था कि यहाँ यह सब-कुछ हो रहा है'।"

इस में सन्देह नहीं कि भारत में पर्दे की प्रथा बहुत फैली हुई है, उस पर कई 'प्रहसन' लिखे जा सकते हैं। यदि मिस मेयो ने भी उक्त घटना पर्दे पर 'प्रहसन' के तौर पर, नाटकी ढँग से, लिखी है तब तो हमें कुछ नहीं कहना; यदि इस घटना के उल्लेख करने का यह अभिप्राय है कि हम स्वीकार करें कि यह घटना ऐसी-ही हुई होगी, तब हमें

इस के सत्य होने में बहुत कुछ सन्देह है! पर्दाधारी स्त्रियाँ अँग्रेज़ स्त्रियों से ज़रा कम ही मिलती हैं, और मिलने वाली अक्सर पर्दा नहीं करतीं ? कम-से-कम, अपने घर से बाहर, किसी दूसरे के घर में कोई पुरुष आता हो तो वे भागती नहीं, सिर का पल्ला नीचे को खींच लेती हैं। हाँ, पर्दे पर यह एक अच्छा 'प्रहसन' है और इस प्रकार के 'प्रहसनों' तथा 'चुटकलों' की मिस मेयो की पुस्तक में कमी नहीं है, परन्तु 'चुटकलों' से किसी देश की अवस्था का चित्र खींचने वाला व्यक्ति स्वयं एक 'प्रहसन' और 'भारी चुटकला' बन जाता है! मिस मेयो की ऐसे ही लोगों में आजकल गिनती हो रही है।

मिस मेयो स्वयं एक स्त्री है इस लिये स्वाभाविक तौर से उस का ध्यान स्त्रियों की तरफ़ ज़्यादह खिचा है। हम ने स्त्रियों की दुर्गति भी कम नहीं कर रखी। 'स्त्री-शूद्रौ नाधीयाताम्' का जयघोष करने वालों को वह याद दिलाती है कि भारत वर्ष में १९११ में १००० में से १० स्त्रियाँ अक्षर पढ़ना जानती थीं, १९२१ में १००० में से १८ को अक्षर बोध था और १९२५ में यह सँख्या १००० में २० हो गई। यदि मिस मेयो ने सच्चे दिल से भारतीय स्त्रियों के लिये आँसू बहाये होते तो इन सँख्याओं को सुन प्रत्येक भारतवासी उस के आँसुओं के साथ अपने आँसू बहाता! हम लोगों में स्त्रियों को शिक्षा देने की प्रवृत्ति ही नहीं है। जिस लड़की का भाई विलायत तक जाकर शिक्षा लाभ कर आया है वह चौका-चूल्हा करने के

अतिरिक्त पुस्तक को हाथ लगाना तक नहीं जानती। इस में सन्देह नहीं कि अब धीरे-धीरे स्त्रियों की तरफ़ भी पुरुष समाज का ध्यान जा रहा है परन्तु अभी यह चाल बहुत धीमी है। मिस मेयो ने १० वें अध्याय में भारतीय स्त्रियों के अशिक्षित होने का ही रोना रोया है। क्या मैं भारत के शिक्षित पुरुष-समाज से पूछ सकती हूँ कि वह 'स्त्री-शिक्षा' के अभाव पर किये गये मिस मेयो के आक्षेपों का उत्तर देने की क्या तैय्यारी कर रहा है? उन्हें मालूम होना चाहिये कि इस का जवाब अख़बारों के कालम रँग देने और मिस मेयो को कोसने से नहीं दिया जा सकता! आज ये प्रश्न मिस मेयो के मुख से सुनाई देते हैं; कल इन्हीं प्रश्नों को भारत का मुट्ठीभर 'शिक्षित-स्त्री-समाज' पुरुष-समाज से करने वाला है! इन प्रश्नों को टाला नहीं जा सकता; इन का उत्तर देना होगा; आज हो, या कल हो, स्त्रियों के लिये शिक्षा का द्वार खोल कर ही इन प्रश्नों का उत्तर देना होगा।
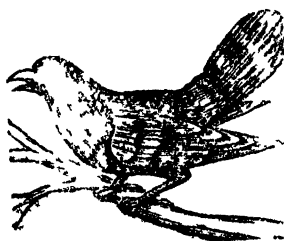
तृतीय भाग

तृतीय भाग

'मदर-इण्डिया' के तीसरे भाग में 'ब्राह्मण' का प्रवेश कराया गया है और उस का चित्र एक 'नान-ब्राह्मण' से खिचवाया गया है। मिस मेयो के कथनानुसार उस के सन्मुख एक 'नान-ब्राह्मण' ने 'ब्राह्मण' का चित्र इस प्रकार खींचा:—

"प्राचीन काल में जब कि सब लोग अपनी मर्ज़ी का जीवन व्यतीत करते थे, ब्राह्मण ही ऐसा था जो पढ़ने-लिखने का काम करता था। वह चतुर भी बड़ा था। अपनी विद्या का लाभ उठा कर उस ने चोरी से धर्म-शास्त्रों को खोल कर उन में अपनी तरफ़ से लिख डाला कि ब्राह्मण ही सब से श्रेष्ठ होता है। इस घटना को हुए युग बीत गये! धीरे-धीरे, क्योंकि ब्राह्मण ही पढ़ सकता था, और झूठ मूठ धर्म-शास्त्रों का नाम ले कर दूसरों को पढ़ने से रोकता था, लोग भी उसे पृथ्वी का परमेश्वर समझ कर पूजने लगे, उस की आज्ञा मानने लगे, उस ने अपना नाम भी 'भू-देव' (Earthly God) रख लिया। अब वह सम्पूर्ण हिंदुस्तान में प्रत्येक व्यक्ति की आत्मा पर शासन करने लगा, और जब तक इङ्गलैंड, सब जाति के बच्चों के लिये स्कूल लेकर, यहाँ नहीं आ गया तब तक ब्राह्मण के विरुद्ध आवाज़ उठाने की किसी को हिम्मत भी न पड़ी।"

"भारतवर्ष में प्रत्येक हिन्दू ब्राह्मण-देवता को सरकार की अपेक्षा कई-गुना ज़्यादह टैक्स देता है। जन्म के दिन से लेकर मरण के दिन तक ब्राह्मण-देवता का पेट भरते रहना प्रत्येक हिंदू का कर्तव्य है। जब बच्चा पैदा हो तो ब्राह्मण को 'कर' देना चाहिये, नहीं तो बच्चा 'फले-फूलेगा नहीं'। सूतक समाप्त होने पर ब्राह्मण को 'कर' देना चाहिये। कुछ दिनों बाद नाम-करण-संस्कार होता है; और ब्राह्मण को 'कर' देना चाहिये। तीसरे महीने मुण्डन-सँस्कार आता है; और फिर ब्राह्मण को 'कर' देना चाहिये। छटे महीने अन्न-प्राशन सँस्कार करो; और फिर ब्राह्मण को 'कर' देना चाहिये। जब बच्चा पाँवों से चलने योग्य हो जाय, फिर ब्राह्मण को 'कर' देना चाहिये। साल समाप्त होने पर 'जन्म-दिवस' मनाया जाता है, फिर ब्राह्मण को 'कर' देना चाहिये। सातवें साल में उपनयन सँस्कार किया जाता है, या लड़का विद्याभ्यास करता है, फिर ब्राह्मण को 'कर' देना चाहिये। समृद्ध घरानों में विद्या-भ्यास प्रारम्भ करने के लिये सोने की कलम बनवा कर ब्राह्मण बच्चे के हाथ से दो-एक अक्षर लिखवाता है, और सोने की कलम ब्राह्मण-देवता को भेंट चढ़ा देनी चाहिये।"

"जब लड़की एक साल की हो जाती है, या कभी-कभी सात या नौ वर्ष की होती है, इसी प्रकार जब लड़का डेढ़ या दो बरस का होता है या १६ वर्ष के नीचे होता है, तब किसी समय 'सगाई' की जाती है, और फिर ब्राह्मण को भारी

'कर' दिया जाना चाहिये। फिर शादी पर ब्राह्मण की झोली भरनी चाहिये। ग्रहण पर ब्राह्मण को दक्षिणा देनी चाहिये—बस, यह 'कर' का, या दक्षिणा का सिलसिला मृत्यु तक चलता ही चला जाता है।

"ब्राह्मण कहता है कि ये सब सँस्कार कराना और इसी प्रकार की अन्य बहुत सी बातें उस का 'जन्म-सिद्ध-अधिकार' है जो कि शास्त्रों ने उसे दिया है। जो इन सब को नहीं करता वह रौरव नरक में जाता है। प्रत्येक सँस्कार के समय हमें ब्राह्मण देवता के पाँव धोकर उस का अर्घ्य अञ्जलि से पान करना पड़ता है। ब्राह्मण एक निकम्मा, आलसी जीव है जो किसी काम के लिये हाथ-पैर नहीं हिलाता। मद्रास प्रान्त में ही १५ लाख ब्राह्मण हैं, जिन का पेट ४ करोड़ १० लाख नान-ब्राह्मण प्रतिदिन भरते हैं।

"बस, यही कारण है कि जब तक हम लोग भी अपने में दम नहीं भर लेते तब तक हमारे लिये समुद्र पार का दूर का राजा ही ठीक है जो कि हमें शान्ति तथा न्याय दे रहा है, हमारे पैसे का कुछ बदला भी चुकाता है और हमें उठने का मौका देता है। उस, एक दूर बैठे राजा के स्थान पर हमें १५ लाख, हर समय हमारे सिर पर खड़े हुए, मालिकों की, जो हमारा ही दिया हुआ खा कर हमें छूने तक से परे भागते और कहते हैं कि हमारे स्पर्श से वे अपवित्र हो जायँगे, ज़रूरत नहीं है।"

'नान-ब्राह्मण' के कहे हुए इन शब्दों में एक चीख़ है; एक पुकार है, जिस की हृदय को चीर देने वाली टक्कर को वही अनुभव कर सकता है जो मद्रास प्रान्त में जा कर 'ब्राह्मण' तथा 'नान-ब्राह्मणों' के पारस्परिक वैमनस्य को अपनी आँखों से देख आया है। मैं मद्रास के 'ब्राह्मणों' से पूछना चाहती हूँ कि क्या वे अपने व्यवहार द्वारा मिस मेयो के इस कथन का क्रियात्मिक उत्तर देने के लिये कटि-बद्ध होंगे?

तृतीय-भाग में, मिस मेयो, ब्राह्मण देवता पर इस प्रकार अपने हृदय के फूल चढ़ा कर क्रमबद्ध अध्यायों के सिल-सिले में ११ वें अध्याय का प्रारम्भ करती है, जिस का शीर्षक है—'Less than Men'—'मनुष्य से भी तुच्छ'! अध्याय का प्रारम्भ इन वाक्यों से होता है:—

"Surely, if there be a mystery in India it lies here—it lies in the Indian's inability anywhere, under any circumstances, to accuse any man, any society, any nation, of 'race prejudice', so long as he can be reminded of the existence in India of 60,000,000 fellow Indians to whom he violently denies the common rights of man."

"निस्सन्देह, भारतवर्ष में यदि कोई रहस्य है तो यह है;—रहस्य यह है कि कोई भारतीय भी, कहीं भी, किन्हीं अवस्थाओं में भी, किसी व्यक्ति को, किसी समाज को, किसी

जाति को, तब तक 'जाति-विद्वेष' का लाञ्छन नहीं लगा सकता जब तक उसे याद दिलाया जा सकता है कि वह स्वयं अपने देश में अपने ही ६ करोड़ भाइयों को मनुष्यता के अधिकारों से भी ज़बर्दस्ती वञ्चित किए हुए है।"

भारतीय भाइयो! ये शब्द कितने उबलते हुए हैं, परन्तु कितने सच्चे हैं! क्या हम इन्कार कर सकते हैं कि हम ने अपने भाइयों के ही हाथों से मनुष्यता के जन्मसिद्ध अधिकारों को भी छीन रखा है? यदि उपनिवेशों में हमें दूसरी जाति के लोग अछूत गिनते हैं और अपने ही देश में हम अछूत गिने जाते हैं तो क्या कहीं यह 'ईश्वरीय न्याय' ही तो नहीं हो रहा? हाँ, मिस मेयो ने उन लोगों के साथ भारी अन्याय किया है जो जीवन के सब प्रलोभनों को तिलाञ्जलि दे कर मनुष्यजाति के अधिकारों की रक्षा के यज्ञ में अपने प्राणों को आहुति की तरह उठा-उठा कर फेंक रहे हैं। इस समय चारों तरफ़ अधिकारों की पुकार मच रही है, हिंदू लोग जाग रहे हैं और पिछली सदियों में किये हुए पापों का प्रायश्चित्त कर रहे हैं। आँखों वाले देख रहे हैं कि देश के एक सिरे से दूसरे सिरे तक जागृति की लहर ज़ोर से थपेड़े मार कर चट्टानों को भी हिला रही है। अछूत लोग जाग रहे हैं, परन्तु उन्हें जगाने के लिये कितनों ने ही गले में झोली डाल ली है। मिस मेयो की आँखें इन लहरों को भी देख जातीं तो शायद 'मदर-इण्डिया' को पढ़ कर भारतवासियों को इतना असन्तोष न होता!

मिस मेयो भागवत पुराण का उद्धरण देती है:—"जो ब्राह्मण की हत्या करेगा वह विष्ठा खाने वाला कृमि बनेगा। अनेक जन्मों में पशु-योनि से गुज़र कर वह अछूत जाति में उत्पन्न होगा और गौ के शरीर पर जितने बाल होते हैं उस से चौगुनी वार अन्धा बनेगा। हाँ, ४० हज़ार ब्राह्मणों को भोजन दे कर वह इस पाप से छूट सकता है। यदि ब्राह्मण किसी शूद्र को मार डाले तो १०० वार गायत्री का पाठ करने से पाप दूर हो जाता है।"

उक्त वाक्य किसी भोजन-भट्ट ब्राह्मण का पुराण में लिखा हुआ प्रतीत होता है। भारत के मध्यकालीन इतिहास में इस प्रकार की अनेक बातें पायी जाती हैं, परन्तु इन घटनाओं का उल्लेख कर के वर्तमान भारत को चित्रित करना उतना ही हास्यास्पद है जितना 'रिफ़ार्मेशन' से पहले 'पोप' के अत्याचारों, दुराचारों, अन्यायों तथा लोभों का वर्णन कर वर्तमान युरुप का चित्र खींचना। इस समय यदि कोई ब्राह्मण शूद्र की हत्या कर १०० वार गायत्री के पाठ से छूटना चाहे तो भ्रम में रहेगा। इस में भी बड़ा सन्देह है कि पुराण में लिखे रहने से ये बातें कहीं क्रिया में भी आती थीं या नहीं। ऐसे संदिग्ध आधार को युक्ति के रूप से पेश करना भारी भूल है।

मिस मेयो लिखती है:—"भारत में ऐसे भिखमंगे मौजूद हैं जो भीख में फेंके हुए पैसे को तब तक हाथ नहीं

लगा सकते जब तक देने वाला उन की आँखों से ओझल न हो जाय। उनके आँख की पहुँच में रहने से पैसे को हाथ लगा दिया जाय तो वे अपवित्र हो जाते हैं। यदि इस जाति का कोई व्यक्ति आम-सड़क के समीप आना चाहे तो उसे देख लेना होता है कि कोई ब्राह्मण उस के इर्द-गिर्द २०० ग़ज की दूरी तक न हो। यदि इतने में कोई ब्राह्मण आ जाय तो वह उस 'अछूत' को देख कर ठहर जाता है और ज़ोर से चिल्लाता है। वह अछूत उसी सड़क पर ब्राह्मण को देख कर एकदम भाग खड़ा होता है और जब 'अपवित्रता की दूरी' (Pollution distance) तक निकल जाता है तो आवाज़ देता है:— 'मैं २०० ग़ज दूर आ गया हूँ, आप मेहरबानी कर गुज़र जाइये।' डुबिओस नामक एक लेखक ने 'Hindu Manners,Customs and Ceremonies' पुस्तक में लिखा है कि उस की यात्रा के दिनों में यदि किसी नायर को परिया रास्ते में मिल जाता था तो उसे परिया की छाती में बर्छा मार कर इस अपराध के दण्ड देने का अधिकार था।" मिस मेयो का कथन है कि समाज से इस प्रकार घृणित व्यवहार को पाकर इन लोगों ने, जो ४५ लाख के लगभग हैं, चोरी-डकैती आदि का व्यवसाय प्रारम्भ कर दिया और अब ये लोग मनुष्य-गणना में 'क्रिमिनल ट्राइब्स' के नाम से लिखे जाते हैं।

१२ वें अध्याय का शीर्षक है—'Behold a Light.' मि० माण्टेगु को मद्रास के अछूतों की तरफ़ से जो अभिनन्दन

पत्र दिया गया था उस में से मिस मेयो ने निम्न उद्धरण दिये हैं:—

"Madras Presidency Outcastes' Association depreeates political change and desires only to be saved from the Brahman, whose motive in seeking greater share in the Government is that of the cobra seeking the charge of a young frog."

"मद्रास प्रान्त के अछूतों की यह सभा भारत में राज-नैतिक परिवर्तन को नहीं चाहती और ब्राह्मणों से अपनी रक्षा की इच्छुक है क्योंकि शासन के कार्य में ब्राह्मणों का बड़ा भाग लेने की इच्छा करना वैसा ही है जैसा फनियर साँप का मेंडक की रखवाली करने की इच्छा प्रकट करना।"

एक दूसरे अभिनन्दन में लिखा गया था:—"We need not say that we are strongly opposed to Home Rule. We shall fight to the last drop of our blood any attempt to transfer the seat of authority in this country from British hands to so-called High caste Hindus who have ill-treated us in the past and would do so again but for the protection of the British law. Even as it is, our claims, nay our very existence is ignored by the Hindus; and how will they promote our interests if the administration passes into their hands."

"हमें यह बतलाने की आवश्यकता नहीं कि हम स्वराज्य के अत्यन्त विरुद्ध हैं। जब तक हमारे देह में रुधिर का एक भी बिन्दु है, हम उच्च-जाति के हिन्दुओं के हाथों में राज-शक्ति जाने के प्रत्येक प्रयत्न के विरुद्ध लड़ेंगे। उन्हों ने भूत में हम से बुरा व्यवहार किया है और यदि ब्रिटिश कानून न रहे तो फिर हम से वे वैसा ही व्यवहार करेंगे। अब भी वे हमारे किसी अधिकार को स्वीकार नहीं करते ; हिन्दू लोग हमारी 'सत्ता' को ही मानने के लिये तैयार नहीं। यदि शासन का नियमन उन के हाथ चला गया तो वे हमारे स्वार्थों की रक्षा कैसे करेंगे?"

हमारा तो दृढ़ विश्वास है कि स्वराज्य प्राप्त करने से पहले हमें अछूतों की इस विकट समस्या को अवश्य हल करना होगा, अपने अन्यायों को स्वीकार कर उन्हें दूर करने के लिये प्रयत्न शील होना होगा। ६ करोड़ अछूतों को अपने देह से काट कर भारतवर्ष, भारतवर्ष नहीं रह सकता।

इसी स्थल पर मिस मेयो ने 'प्रिन्स आफ वेल्स' के स्वागत का वर्णन किया है:—"बम्बई में प्रिन्स का आशातीत स्वागत हुआ। प्रिन्स की मोटर धीरे-धीरे सरक रही थी। पुलिस ने मोटर का घेरा बनाने का प्रयत्न किया परन्तु सब व्यर्थ हुआ। लोग मोटर की तरफ़ बढ़े चले आये, उस के किनारों को हाथों से पकड़ लिया और ज़ोर-ज़ोर से राजकुमार के जयघोषों से आस्मान को फाड़ने लगे। इसी हालत में

मोटर बम्बई के स्टेशन पर पहुंची। प्रिन्स स्टेशन पर चले गये, लोग अभी बाहर खड़े थे; बड़ी कठिनता से उन्हें रोका गया था। गाड़ी के छूटने में ३ मिन्ट बाकी थे कि प्रिंस ने फाटक खोलने का निर्देश दिया ताकि जनता उन के दर्शनों के लिये अन्दर आ जाय। बाढ़ में उमड़ रही नदी के प्रवाह की तरह अनन्त जन-समुदाय बह पड़ा। वे हँसते थे, कूदते थे, जयघोष करते थे और हर्ष के आँसू बहाते थे; जब गाड़ी चली तो वे गाड़ी के साथ-साथ भागने लगे और जब तक गाड़ी उन की पहुँच से बिल्कुल दूर नहीं निकल गई तब तक वे अपने घरों को नहीं लौटे।"

मिस मेयो के इस 'स्वतः प्रकाशमान झूठ' पर क्या टीका टिप्पणी की जाय? जिन दिनों प्रिन्स का भारत में पदार्पण हुआ उन दिनों असहयोग का आन्दोलन ज़ोरों पर था। प्रिन्स जहाँ-जहाँ पहुँचे वहाँ-वहाँ हड़तालें हुईं, बाज़ार ख़ाली दिखाई दिये, सरकार के नाकों दम हो गया। गावों से, बग़ैर टिकट के, और पल्ले से रोटी देकर, ग्रामीण लोगों को शहरों में लाया गया जो घड़ी-घड़ी 'महात्मा गान्धी की जय' के नारों से प्रिंस का स्वागत करते रहे। यदि इस सब को 'प्रिंस का स्वागत' कहा जा सकता है तो यह भी बेधड़क होकर कहा जा सकता है कि मिस मेयो ने झूठ बोलने के लिए ही कलम उठायी है। 'मदर-इण्डिया' का भारतवर्ष, अनेक अँशों में, मेयो के दिमाग़ का भारत वर्ष है, वास्तविक भारत वर्ष नहीं।

'मदर-इण्डिया' का १३ वाँ अध्याय भारत में प्रचलित शिक्षा और उस के दुष्परिणामों पर लिखा गया है, इस का शीर्षक है:—'Give Me Office, or Give Me Death'—'या मुझे नौकरी दो, या मौत दो' ! इस अध्याय में कई मज़ेदार चुटकले दिये गये हैं:—

"मैं बी. ए. हूं," एक नवयुवक ने कहा; "मुझे डिग्री लिये दो साल हो गये परन्तु अभी तक मुझे कोई ठीक नौकरी नहीं मिली, मेरा भाई मुझे खाने को दे रहा है। वह बी. ए. नहीं है इसलिये मुझे अपनी स्थिति के लिये जितने वेतन की ज़रूरत है उस से तिहाई में उसे सन्तोष हो जाता है !"

फिर लिखा है:—"A man may and does write after his name 'B. A. Plucked' and 'B. A. Failed' without exciting the mirth of his public. The terms are actually used in common parlance as if in themselves a title, like M. A. or Ph. D. As, see the 15th Report of the society for the Improvement of the Backward classes, Bengal and Asaam (1925) P. 12: 'The school ...is now under an enthusiastic B. A. plucked teacher'."

"लोग अपने नाम के साथ 'बी.ए. प्लक्ड' या 'बी.ए. फेल' लिखते हैं और उन पर कोई हंसता नहीं ! इन शब्दों का बोल चाल की भाषा में ऐसे ही प्रयोग किया जाता है जैसे ये

भी एम. ए. और पी एच. डी. की तरह डिग्रियाँ हों! १६२५ में प्रकाशित, बँगाल तथा आसाम के अछूतों के उद्धार की सोसाइटी की १५ वीं रिपोर्ट के १२ पृ० पर लिखा है:—'इस समय स्कूल एक उत्साही बी. ए. फेल अध्यापक की देख-रेख में है'।"

"एक अमेरिकन ने किसी भारतीय युवक से पूछा:—'जहाँ तुम लोगों की ज़रूरत नहीं वहाँ क्यों घुसे आते हो? फिर, जब तुम्हें कहा जाता है कि कोई नौकरी ख़ाली नहीं तो बुरा मानने लगते हो! यह कैसे सम्भव है कि तुम सब को सरकारी दफ़्तरों में कुर्सी मिल जाय? तुम अपने गाँव के घर में क्यों नहीं जा बैठते। वहाँ एक स्कूल खोल दो, खेती करो, गाँव के स्वास्थ्य का सुधार करो, तुम ने विद्याध्ययन कर के जो कुछ सीखा है उस का अपने ग्रामीण भाइयों को भी लाभ पहुँचाओ। क्या वहाँ थोड़ा सा काम कर के तुम्हें भर-पेट खाने को नहीं मिल सकता जो मारे मारे फिरते हो?' उस युवक ने उत्तर दिया:—'ठीक है, परन्तु तुम यह भूल जाते हो कि यह सब काम मेरी शान से नीचे है। मैं तो बी. ए. हूँ! यदि तुम मुझे नौकरी नहीं दोगे तो मैं आत्म-घात कर लूंगा।' और, सच मुच, नौकरी न मिलने पर उस युवक ने आत्मघात कर लिया है।"

मिस मेयो ने ये दृष्टान्त दे कर मानो भारतीय नवयुवकों को चिढ़ाया है:—'अरे! तुम स्वराज्य चाहते हो?' परन्तु मिस

मेयो को मालूम होना चाहिये था कि यह दोष भारतीय युवकों का नहीं परन्तु भारत के वर्तमान शासकों का है। जिस अस्वाभाविक शिक्षा प्रणाली को उन्हों ने यहाँ प्रचलित किया है, उस का नतीजा उक्त घटनाओं के अतिरिक्त कुछ हो नहीं सकता। वर्तमान शिक्षा की भारत में नींव डालने वाले लॉर्ड मैकाले ने २ फ़र्वरी १८३५ में अपनी 'शिक्षा-समिति' की जो रिपोर्ट लिखी थी उस में स्पष्ट शब्दों में उद्घोषित कर दिया गया थाः—"We must at present do our best to form a class, who may be interpreters between us and the millions, whom we govern ; a class of persons, Indians in blood and colour, but English in taste, in opinions, in morals and in intellects."—अर्थात्, "हमें इस समय ऐसे लोग पैदा करने की भरसक कोशिश करनी चाहिये, जो हम में और उन लाखों अशिक्षित भारतीयों में जिन पर हम ने शासन करना है माध्यम का काम कर सकें, जो चमड़ी से हिन्दुस्तानी परन्तु बाकी सब बातों से अंग्रेज़ हों!"—ऐसे लोगों को उत्पन्न करने के लिये भारत के विश्व विद्यालय खोले गये। फिर, अब, जब कि ऐसे लोग संख्या से अधिक उत्पन्न हो गये तो उन को आ कर चिड़ाना कमीनापन है। मिस मेयो की कलम की हम दाद देते यदि वह इन अवस्थाओं को देख कर ब्रिटिश गवर्नमेण्ट पर खीझ उठती और उन के द्वारा, स्वार्थ-साधन के लिये प्रचलित किये गये अस्वाभाविक शिक्षा-क्रम के

विरुद्ध उबल पड़ती। इस के प्रतिकूल देखिये वह क्या लिखती है:—

'Government', they repeat, 'sustains the University, Government is responsible for its existence. What does it mean by accepting our fees for educating us and then not giving us the only thing we want education for! Cursed be the Government! Come, let us drive it out and make places for ourselves and our friends.'

"नौकरी से हताश हुए युवक कहते हैं, सरकार विश्वविद्यालय चलाती है, सरका- ही उन की जिम्मेवार है। इस का क्या मतलब है कि सरकार हम से फ़ीस लेकर हमें शिक्षित तो कर देती है परन्तु जिन नौकरियों के लिये हम शिक्षा ग्रहण करते हैं उन से हमें वञ्चित रखती है? सरकार पर हमारा शाप पड़े; आओ, सरकार को निकाल डालें और अपने तथा अपने मित्रों के लिए नौकरियाँ निकाल लें!"

मिस मेयो के विचार में स्वराज्य का आन्दोलन इन्हीं नौकरियों को ढूंढने वाले नौ जवानों का उठाया हुआ है! न जाने मिस मेयो किस भूल में है! स्वराज्य का आन्दोलन तो उन नवयुवकों के कन्धों पर चल रहा है जो नौकरी को कुत्ते की जूठ समझ कर ठुकरा देते हैं। स्वराज्य का आन्दोलन 'नौकरियों की माँग' नहीं, 'अधिकारों की लड़ाई' है। जो

दिन इस युद्ध का विजय दिवस होगा उस दिन, यदि मिस मेयो जीती रही, उसे पता लग जायगा कि इस युद्ध में लड़ने वाले सिपाही किस धातु के बने हुए थे।

१५ वें अध्याय का विषय है, 'शिक्षा के अभाव का कारण'। इस भाव के लिए शीर्षक रखा गया है, "Why is Light Denied ?"—"प्रकाश क्यों रोका जा रहा है।" अक्सर कहा जाता है कि सरकार शिक्षा पर ध्यान नहीं दे रही, इस लिये भारत में शिक्षितों की संख्या बहुत कम है। मिस मेयो कहती है, यह ब्रिटिश सरकार का दोष नहीं, तुम्हारा अपना दोष है। सुनिये मिस मेयो की अँग्रेज़ी सरकार की तरफ़ से वकालतः—

"स्त्रियों को तथा अछूतों को तो भारतवासी स्वयँ शिक्षित नहीं होने देते, क्योंकि उन के शास्त्रों की यही आज्ञा है! ब्रिटिश भारत में अशिक्षित स्त्रियों की संख्या १२१,०००,००० तथा अशिक्षित अछूत-पुरुषों की संख्या २८,५००,००० है। इस प्रकार कुल १४६,५००,००० को तो भारतीयों ने शास्त्रों के कानूनों से शिक्षा से वञ्चित कर रखा है। भारत की कुल जन संख्या ३१६,०००,००० है, परन्तु इन में से २४७,०००,००० ब्रिटिश भारत में रहते हैं, बाकी के लोग रियासतों में रहने वाले हैं। अर्थात्, साढ़े २४ करोड़ में से १५ करोड़ के लगभग स्त्री-पुरुषों को भारत-वासी स्वयं पढ़ने-लिखने नहीं देना चाहते, अन्धकार में रखना

चाहते हैं। यह संख्या ६०.५३ प्रति शतक पड़ती है। बाकी रहे ४६.४७! इन को अशिक्षित रखने की भी ज़्यादहतर ज़िम्मेवारी भारतीयों की ही है। भारतवर्ष में ६० प्रति शतक लोग गाँवों में रहते हैं; भारत में ५ लाख गाँव हैं जो १,०६४, ३०० (दस लाख) वर्गमील देश में बसे हुए हैं। गाँवों में पढ़ाने के लिए कितने शिक्षक चाहियें! परन्तु जब हिन्दू शिक्षकों को गाँवों में जाने के लिये कहा जाता है तो वे तैयार नहीं होते। वे चाहते हैं, उन्हें शहर में नौकरी मिले।"

इस में संदेह नहीं कि मिस मेयो ने अंग्रेज़ी सरकार की जो वकालत की है वह प्रशंसनीय है, परन्तु यह कहना झूठ है कि इस समय भी स्त्रियों तथा अछूतों के पढ़ने में 'स्त्री शूद्रौनाधीयाताम्' का कानून जारी है। भारत के इतिहास के वे काले पन्ने सदा शर्म से खोले जाँयगे परन्तु भारत का इतिहास उतने में ही समाप्त नहीं हो जाता। प्रश्न यह है कि, इस समय, जब कि सब तरह से जनता सामाजिक सुधारों के लिये तैयार है, उसे सरकार से क्या सहायता मिल रही है? इस समय भारत में प्रति व्यक्ति कुल चार आना प्रतिवर्ष शिक्षा पर ख़र्च होता है! अमेरिका के प्रसिद्ध समाज शास्त्र ऑलस्वर्थ रॉस महोदय लिखते हैं कि अमेरिका ने २५ वर्ष फ़िलिपाइन्स में शासन किया और इतने अरसे में वहाँ की जनता का दसवाँ हिस्सा स्कूलों में जाता है जब कि भारत में अँग्रेज़ों के इतने समय के शासन के बाद

भी जनता के कुल तीसवें हिस्से को स्कूलों की हवा लगी है। अँग्रेज़ लेखकों ने ही स्वयं लिखा है कि उन के आने से पूर्व भारत के प्रत्येक गाँव में एक स्कूल था। इस समय ब्रिटिश भारत में ५ लाख ८८ शहर और गाँव हैं उन में केवल २१६१३१ शिक्षा की संस्थाएँ हैं जिन में से १६८०१३ प्रारम्भिक शिक्षणालय हैं। अँग्रेज़ों के आने के बाद प्रारम्भिक शिक्षा में कमी ही हुई है। उन से पहले देश की शिक्षा की अवस्था अब से बहुत अच्छी थी। जापान ने तो हमारे देखते २ शिक्षा में उन्नति की है। १६१८ में वहाँ केवल ४ विश्वविद्यालय थे परन्तु १६२३ में ३१ हो गये; १६१८ में विश्वविद्यालयों में पढ़ रहे विद्यार्थियों की संख्या ६०४३ थी, १६२२ में २६२०८ हो गई। मिस मेयो को मालूम होना चाहिये था कि बिना सरकार की सहायता के केवल आर्य समाज की तरफ़ से, जो अधिकतः पञ्जाब तथा युक्त प्रान्तों में ही काम कर रही है २६२ कन्या पाठशालाएँ चल रही हैं और उन की माँग बढ़ती जा रही है। यदि सरकार का शिक्षा की तरफ़ ध्यान हो तो हमें कोई कारण नहीं प्रतीत होता कि देश में शिक्षा की वृद्धि क्यों न हो?

मिस मेयो का कथन है कि स्त्री—अध्यापकाएँ नहीं मिलतीं, क्योंकि:—

"On account of social obstacles and dangers, it is practically impossible for women to teach in villages, unless they are accompanied by husbands."

"सामाजिक बाधाओं के कारण तथा डर के कारण कोई स्त्री गाँव में नहीं पढ़ा सकती जब तक उस का पति उस के साथ न हो।" इसी प्रकार एक अमेरिकन स्त्री ने मिस मेयो को कहाः—"No Indian girl can go alone to teach in rural districts. If she does, she is ruined. It is disheartening to know that not one of the young women that you see running about this compass, between classroom and classroom, can be used on the geat job of educating India. Not one will go out into the villages to answer the abysmal need of the country. Not one dare risk what awaits her there, for it is no risk, but a certainty. And yet these people cry out to be given self-government."

"कोई भी भारतीय लड़की, अकेली, देहातों में पढ़ाने नहीं जा सकती। यदि वह जाय तो उस का सर्वनाश हो जाता है। यह जान कर कितनी निराशा होती है कि इस स्कूल में इस समय जो लड़कियाँ सामने खेलती दिखलाई दे रही हैं इन में से एक को भी भारतीय शिक्षा के महान् कार्य पर नहीं लगाया जा सकता। इन में से एक भी देश की इस गहरी आवश्यकता को पूर्ण करने के लिये गाँवों में नहीं जायगी। यह बड़ा भारी ख़तरा है जिसे उठाने का किसी को साहस

नहीं होता। अकेले जाने में ख़तरा ही नहीं, परन्तु निश्चय है। और, फिर भी ये लोग स्वराज्य-स्वराज्य चिल्लाते रहते हैं।"

मिस मेयो लिखती है:—"१६२२ में ब्रिटिश-भारत की १२३,५००,००० स्त्रियों में से कुल ४३११ स्त्रियाँ अध्यापिका बनने की तय्यारी कर रही थीं, जिन में से २०५०—आधे के लगभग—ईसाई थीं, यद्यपि ईसाइयों की संख्या का भारत की कुल जनता से अनुपात १.५ प्रतिशतक का है!"—इन वाक्यों से स्पष्ट है कि मिस मेयो को मालूम है कि हिंदुओं में ऐसी स्त्रियों की इतनी संख्या ही उत्पन्न नहीं हुई जिन के सामने देहातों की शिक्षा का प्रश्न रखा जा सके। फिर भी उस ने जान-बूझ कर इस प्रश्न को इस प्रकार रखने का प्रयत्न किया है जिस से भारतवर्ष को संसार के सन्मुख बदनाम किया जा सके! मालूम पड़ता है कि स्कूल की उक्त बातचीत मिस मेयो ने अपनी तरफ़ से बना कर लिखी है। लाहौर के 'विक्टोरिया गर्ल्स स्कूल' की मिस बोस के नाम से 'मदर-इण्डिया' में कुछ बातें लिखी गई हैं जिन के सम्बन्ध में एक सम्वाददाता से मिस बोस ने कहा:—'A great many of the things printed in inverted commas were never spoken'—'बहुत सी बातें जिन्हें उद्धरण के रूप से मिस मेयो ने लिखा है मैंने कहीं तक नहीं'! ऐसी अवस्था में स्त्री-अध्यापिकाओं के न मिलने का कारण मिस मेयो ने अपनी सूझ से गढ़ लिया हो तो आश्चर्य नहीं। ख़ास कर जब कि यह सब कुछ लिख

कर वह भारतीयों को फटकारना चाहती हो:—"और, फिर भी ये लोग स्वराज्य-स्वराज्य चिल्लाते रहते हैं !"

अँग्रेज़ी-शासन की प्रशंसा के गीत गाती हुई तो मिस मेयो थकती ही नहीं। देखिये, वह एकदम क्या बोल उठती है:—"But it is only to the Briton that the Indian villager of today can look for steady, sympathetic and practical interest and steady and reliable help in his multitudinous necessities. It is the British Deputy-District Commissioner, none other, who is his father and his mother, and upon the mind of that Deputy-District Commissioner the villagers' troubles and the villagers' interests sit day and night."

"भारत के देहाती लोग तो अँग्रेज़ों की तरफ़ ही आँख उठा कर सहानुभूति तथा सहायता के लिये देखते हैं, अँग्रेज़ों से ही उन्हें अपनी रोज़-मर्रा की आवश्यकताओं के पूर्ण होने की आशा है। ब्रिटिश डिप्टी कमिश्नर ही उन का माई-बाप है और डिप्टी कमिश्नर भी गाँव वालों के दुःखों को दूर करने की चिंता में दिन-रात लवलीन रहता है !"

क्या कहना ! अँग्रेज़ डिप्टी कमिश्नर जिसे, टैनिस और शिकार खेलने, डान्स और टी-पार्टी से ही फुर्सत नहीं मिलती भारतीय ग्रामीणों के दुःख दूर करने की चिन्ता में ही

तो डूबा रहता है ! तभी तो भारत की सालाना आमदनी प्रति मनुष्य २७) रुपए है ! प्रतिमास दो रुपया, ४ आने !! प्रतिदिन चार पैसे से कुछ ही ज़्यादह !! विदेशी-शासन भारत में देहातियों की हित-साधना नहीं, उन के मुँह की रोटी तक छीने जा रहा है। १८१३ ई० में पार्लियामेंट की एक कमेटी भारत के विषय में जाँच करने को आयी थी। उस ने कुछ गवाहियाँ भी ली थीं। गवाहों में वारन हेस्टिंग्स, टामस मनरो जैसे व्यक्ति शामिल थे। इन गवाहों से क्या प्रश्न पूछे गये?—यह कि, 'भारत में ब्रिटिश वस्तुओं की माँग किस भाँति बढ़ सकती है?' ब्रिटिश ब्युरोक्रेसी का एक-एक व्यक्ति अपने देश के व्यापार बढ़ाने का भारत में एजण्ट है, गाँव वालों की उसे तनिक भी परवाह नहीं, वे जीते हैं या मरते हैं। सर पी. सी. रे ने ठीक कहा है कि एक आना रोज़ कमाने वाला भारतीय मान्चेस्टर के जुलाहे का, जो ३ रु. ५ आना रोज़ कमाता है, पेट क्यों भर रहा है? किंतु यह सब ब्रिटिश सरकार के उन्हीं डिप्टी कमिश्नरों के ज़ोर पर होता है जिन्हें भारतीय ग्रामीणों की चिंता रात-दिन व्याकुल किए रखती है !! जिन दिनों खद्दर का प्रचार हो रहा था उन दिनों बिहार के एक मैजिस्ट्रेट ने गाँवों में विदेशी कपड़ा बेचने के लिये फेरी वाले भेजे थे और धारवाड़ के कलेक्टर ने खादी का बहिष्कार करने के नोटिस जारी किये थे। पीछे से पता चला कि ये नोटिस भारत सरकार के निर्देशानुसार सब प्रान्तों में

जारी किये गये थे। भारत-सचिव लॉर्ड सेलिसबरी के १८७५ में कहे गये प्रसिद्ध शब्द,—'India must be bled'—'भारत का ख़ून अवश्य ही चूसना होगा'—किसे भूल सकते हैं? भारत का ख़ून चूस कर ही तो जर्मन-महायुद्ध में अँग्रेज़ लोग १० करोड़ रुपया रोज़ साढ़े चार वर्ष तक लगातार ख़र्च करते रहे। यह रुपया क्या इङ्गलैंड के पेड़ों पर से झड़ा था? इतने सालों के निरन्तर अत्याचार से चूसे हुए भारतीय देहातियों के ख़ून से यह रुपया लतपत था! 'उस समय भूखे भारत से २०० करोड़ रुपये भारत सरकार ने उधार के तौर पर लिये थे। पर पीछे भारतीयों को भुलावा देकर एक सभा की गई और उस में प्रस्ताव, अनुमोदन, समर्थन सब हाँ-हज़ूरों से करा कर यह प्रस्ताव भारत की ओर से पास किया गया कि भारतवासी ब्रिटिश प्रजा के नाते दो सौ करोड़ का दिया हुआ ऋण छोड़ देते हैं।' क्या मिस मेयो को मालूम नहीं कि भारत में डिप्टी कमिश्नर इसी धुन में रहा करते हैं?—क्या देहातियों की हितचिंता इसी का नाम है?

मिस मेयो लिखती है कि उस ने एक बार म० गान्धी से पूछा:—"आप के पढ़े-लिखे नौ जवान यदि राज नैतिक लड़ाई को छोड़ कर गाँवों में जा बैठें और किसानों की सेवा में अपने को मिटा दें तो क्या भारत की अमूल्य सेवा न होगी?"

म० गान्धी ने कहा:—"बिल्कुल ठीक, परन्तु यह तो 'Counsel of perfection' है!"—यह लिख कर मेयो एक

और घटना का उल्लेख करती है:—"कलकत्ता के चार प्रसिद्ध राजनैतिक कार्य कर्त्ताओं से मैंने यही प्रश्न पूछा, 'क्या यह अच्छा न हो कि यदि आप लोग अपने वैय्यक्तिक तथा राजनैतिक स्वार्थों की आहुति दे कर, गाँवों में जा कर, भारत को नींव से उठाने के कार्य में मिट जाओ? क्या भारत माता की ऐसी सेवा आदर्श सेवा न होगी? बीस वर्ष में शायद आप लोग इतना काम कर सकेंगे कि इस समय जिस राजशक्ति को आप क्रोध में आकर माँग रहे हैं वह स्वयं आप के हाथों में आ लौटेगी?'—उन में से तीन ने कहा:—'शायद आप का कहना ठीक है, परन्तु चिल्लाना भी तो कम काम नहीं है। इस समय तो यही बड़ा भारी काम है! जब तक हम विदेशियों को निकाल कर बाहर नहीं कर देते तब तक कुछ नहीं किया जा सकता!!' "—मिस मेयो के इन परामर्शों से भारत के राजनैतिक कार्यकर्त्ताओं को शिक्षा लेनी चाहिये। उस की हरेक बात झूठी नहीं है।

एक अमेरिकन ने मिस मेयो से कहा:—"If I were running this country I would close every University tomorrow. It was a crime to teach them to be clerks, lawyers and politicians till they had been taught to raise food."

"यदि मैं इस देश का शासन कर रहा होता तो मैं कल ही सब विद्यालय बन्द कर देता। जिन लोगों को रोटी तक

कमाना नहीं सिखाया गया उन्हें क्लर्क, वकील और राजनैतिक कार्यकर्ता बना देना भारी पाप हुआ !"—बस, इस पाप की जड़ है ब्रिटिश सरकार की शिक्षानीति । उन्हीं ने तो सम्पूर्ण देश को क्लर्कों की फ़ौज से भर दिया । एक और अमेरिकन शिक्षक ने, जो देर तक किसी भारतीय कालेज के अध्यक्ष रहे हैं, मिस मेयो से कहा:—

"After 20 odd years of experience in India I have come to the conclusion that the whole system here is wrong. These people should have had two generations of primary schools all over the land, before ever they saw a grammar school; two generations of grammar schools before the creation of the first high-school; and certainly not before the seventh or eighth generation should a single Indian University have opened its doors."

"मैं भारतवर्ष में २० साल के अपने अनुभव से इस परिणाम पर पहुंचा हूँ कि सारी शिक्षा प्रणाली ही दूषित है। दो पीढ़ियों तक तो यहाँ सम्पूर्ण देश में प्रारम्भिक स्कूल ही खोलने चाहिये थे, उस के बाद दो पीढ़ियों तक मध्य-विभाग के स्कूल सम्पूर्ण देश में खुलने चाहिये थे और फिर जाकर पहला हाई-स्कूल खुलना चाहिये था। पहली यूनीवर्सिटी तो सातवीं या आठवीं पीढ़ी में जा कर खुलनी चाहिये थी !"

चतुर्थ भाग

चतुर्थ भाग

'मदर-इण्डिया' के चतुर्थ भाग का प्रारम्भ महात्मा गाँधी के नाम से हुआ है, परन्तु इस भाग में महात्मा गान्धी के उद्धरण उतने ही दिये गये हैं जितने पहले तीन भागों में।

मिस मेयो का कथन है कि भारतीय लोग शिकायत करते हैं कि भारत की सैंकड़ों मील भूमि सरकार ने 'साल-वेशन आर्मी' को क्यों दे दी है? प्राचीन काल में यहां पर तो जानवर चरते थे। आज गौओं को चारा नहीं मिलता, क्योंकि जङ्गलों को सरकार ने हथिया लिया है या 'सालवेशन आर्मी' को मुफ़्त दे दिया है। मिस मेयो की मन्शा इस आक्षेप का उत्तर देने की है। वह १७ वें अध्याय में इस प्रकार लिखती है:—

"राजा हो या रङ्क हो, गौ सब की पूजनीय माता है, पवित्र है। जब कोई हिन्दू मरे तो गौ निकट होनी चाहिये ताकि अन्तिम श्वास छोड़ते समय गौ की पूंछ उस के हाथ में हो। और किसी लिये नहीं तो इस लिये ही, गौ को सदा घर में रखा जाता है! जब काश्मीर के महाराज का मृत्यु समय निकट था तब कहा जाता है कि, निर्दिष्ट गौ लाख कोशिश करने पर भी महाराज के कमरे में न घुसी। फिर क्या था, महाराज को उठा कर बड़ी तेज़ी से गौ के पास ले जाया गया ताकि उस की पूंछ पकड़े-पकड़े ही उन का प्राणान्त हो।"

मिस मेयो लिखती है कि प्रातः काल भारत में अनेक लोग लोटा लिये गौ के पीछे-पीछे जाते दिखाई देते हैं ताकि वह पेशाब करे और वे इकट्ठा कर लें। इस पिशाब से कई लोग आचमन कर के अपने सिर पर छींटे भी देते हैं ताकि वे पवित्र हो जायँ।

गौ की दुम पकड़ कर स्वर्ग जा सकते हैं या नहीं, इस का उत्तर तीर्थों के पण्डों को और उन पढ़े लिखे लोगों को जो इस बात में विश्वास रखते है देना चाहिये। हाँ, गो मूत्र में कुछ गुण हैं या नहीं यह वैद्यक का विषय है, इस लिये इस की खिल्ली उड़ाने से पहले मिस मेयो को डाक्टरों से सलाह ले लेनी चाहिये थी। डा० मुथु, जिन्हों ने लण्डन में ४२ साल तक डाक्टरी की है मिस मेयो के इस कथन की आलोचना करते हुए, लिखते हैं:—"हिन्दुओं में गो-मूत्र का उपयोग चिकित्सा सम्बन्धी सिद्धान्तों पर आश्रित है। इङ्गलैण्ड में तो एक ऐसी सोसाइटी खुली है जो कई बीमारियों मे मनुष्य के मूत्र का भी प्रयोग बतलाती है क्योंकि उस में कई उपयोगी लवण हैं। हिन्दू लोग मलेरिया तथा अन्य बीमारियों के लिये गो मूत्र का प्रयोग करते हैं। इस में अमोनिया घनीभूत मात्रा में होता है और इसी लिये क्षय रोग में इस का इस्तेमाल किया जाता है। हज़ारों वर्ष हुए सुश्रुत ने इस का यही उपयोग बतलाया है। इङ्गलैण्ड में भी ऐसी संस्थाएँ खुल रही हैं। १९११ में क्षयरोगियों के लिये ब्रेडफ़ोर्ड में पहली संस्था

खुली थी जिस में अमोनिया का सूंघना ही इस रोग की चिकित्सा समझी गई थी। तभी भारतीय वैद्य क्षय रोगी को बकरियों के अहाते में सोने का परामर्श देते हैं क्योंकि उन के मूत्र से भी अमोनिया बहुत मात्रा में निकलता है। मालूम पड़ता है कि मिस मेयो ने इस विषय पर लिखते हुए चिकित्सा सम्बन्धी दृष्टि को बिल्कुल भुला दिया है।"

मिस मेयो लिखती है कि भारतीय लोग युरोपियनों से हाथ मिलाते हुए समझते हैं कि वे उन के स्पर्श से अपवित्र हो जायँगें। "एक कट्टर राजा तो युरोपियन लोगों से मिलते समय हाथों पर दस्ताने रखता है ताकि उस के हाथों को कोई छू न सके। कहा जाता है कि एक समय लण्डन में एक भोज दिया गया। जब राजा ने, भोजन के समय हाथों से दस्ताने उतारे तो उस के समीप बैठी हुई एक महिला की नज़र उस की अंगूठी पर पड़ी।

'महाराज! आप की अंगूठी में तो महार्घ्य मोती लगा है!'—उस महिला ने कहा, 'क्या मैं इसे देख सकती हूँ?'

राजा ने कहा—'बेशक!'—और अंगूठी उतार कर उस ने उस महिला की थाली के निकट रख दी।

वह महिला उच्च घराने की थी। उस ने मोती को इधर-उधर फेर कर देखा, प्रकाश के सामने देखा, उस की प्रशँसा की, और, धन्यवाद देकर, उसे राजा की थाली के निकट रख दिया। राजा ने आँख के इशारे से पास खड़े नौकर को, जो

समीप ही खड़ा था, बुलाया और कहाः—'इसे धो लाओ ।'—यह कह कर वह राजा फिर वैसे ही मज़े से बातें करने लगा।"

इस के बाद १८ वाँ अध्याय खुल जाता है, जो "गौ" पर है। 'इण्डियन इण्डस्ट्रियल कमिटि' की रिपोर्ट में से एक गवाह की नीचे लिखी गवाही दी गई है:—

"Have these slaughter-houses aroused any local feeling in the matter ?"

"They have aroused," said the witness, "local feelings of greed and not of indignation. I think you'll find that many of the municipal members are shareholders in these yards. Brahmans and Hindus are also found shareholders."

"क्या इन कसाईख़ानों से स्थानिक लोगों में कुछ हलचल उत्पन्न हुई है"—गवाह ने जवाब दिया, "इन के खुलने से क्रोध के नहीं परन्तु लोभ के भाव अवश्य उत्पन्न हुए हैं। इन कसाई ख़ानों के हिस्सेदारों में काफ़ी संख्या म्यूनिसिपैलिटी के मेम्बरों की है। इन के हिस्सेदारों में बहुत से हिन्दू तथा ब्राह्मण भी हैं।"

बैलों पर जो अत्याचार होता है उस का चित्र भी मिस मेयो ने खींचा हैः—"कलकत्ते में हावड़ा के पुल पर आप घंटों तक खड़े समीप से गुज़रती हुई बैल गाड़ियों को देखते जाइये, एक भी बैल ऐसा नहीं मिलेगा जिस की पूंछ हड्डियों के टूट

जाने से टेढ़ी न हो गई हो। हाँकने वाला बैल को डंडे से चलाने की जगह बैल की पूँछ हाथ में पकड़ कर उस के जोड़ों को ऐसे मरोड़ता है कि पूँछ की हड्डी २ अलग हो जाती है। यदि आप गाड़ी में चढ़ जायँ तो आप को मालूम होगा कि बैलों को तेज़ चलाने के लिये गाड़ीवान एक और नया ढँग इस्तेमाल करता है। अपने डँडे से, या पाँव के अँगूठे के लम्बे और सख़्त नाख़ूनों से वह बार बार बैल के अण्ड-कोषों पर प्रहार करता है जिस से बैल जल्दी चलने लगते हैं!"

"भारत में अनेक स्थानों पर 'फूका' की प्रथा प्रचलित है। इस प्रथा का उद्देश्य गौ के दूध को बढ़ाना है। इस के कई तरीके हैं परन्तु अधिक प्रचलित यह है कि एक लकड़ी ले कर उस पर तिनके बान्ध दिये जाते हैं और लकड़ी को गौ की योनि में डाल कर खूब दायें-बायें घुमाया जाता है। इस से गौ को जलन पैदा होती है जिस से कुछ दूध ज़्यादह आ जाता है। गाँन्धी जी का कथन है कि कलकत्ते की गौशालाओं में १०,००० गौओं में से ५००० पर नित्य प्रति यह अत्याचार होता है।"

गौओं पर इस से भी बड़े बड़े अत्याचार किये जाते हैं:—"गौ को आम के पत्ते खिलाये जाते हैं, और कुछ खाने को नहीं दिया जाता। पानी भी उसे नहीं छूने दिया जाता। उस के मूत्र का एक प्रकार का रङ्ग बनता है जो बहुत मँहगा बिकता है। इस प्रयोग से गौ को

इतना कष्ट होता है कि वह तड़प-तड़प कर मर जाती है।" "गौ की बछिया को मारना हिन्दुओं के यहाँ पाप है, परन्तु उस के पालने के ख़र्च को वे उठाना नहीं चाहते। पहले थोड़ा-थोड़ा दूध पीने देते हैं, इतना थोड़ा जिस से वह केवल ज़िन्दा रह सके। बछिया दिनों-दिन कमज़ोर होने लगती है, लड़खड़ाती-लड़खड़ाती मर जाती है। इस प्रकार उसे मारने में पाप नहीं समझते। यह शायद उस के कर्मों की गति है! बछिया के मरने के बाद उस की चमड़ी में भुस भर कर नीचे चार लकड़ियाँ लगा देते हैं, दुहते समय उस कृत्रिम बछिया को गौ के सामने खड़ा कर दिया जाता है ताकि उसे देख कर गऊ खुल कर दूध दे।" "भैंस के कटड़े को भी घास न देकर और धूप में खड़ा रख कर सुका दिया जाता है, जिस से वह मर जाय।" मिस मेयो ने १६-२० अध्यायों में गौओं पर किये गये अन्य अत्याचारों का चित्र खींचते हुए लिखा है कि धार्मिक गो-शालाओं में दानी लोग जो कुछ दे जाते हैं उसे गोशाला वाले ही खा जाते हैं और गौएँ सूक-सूक कर ऐसी कमज़ोर हो जाती हैं कि उन की नोकीली हड्डियाँ चमड़ी को चीर-चीर कर बाहर निकल आती हैं। 'गोरक्षा' की रट लगाने वाले हिन्दुओं के घरों में गौ की यह कद्र है, तभी २० वें अध्याय का शीर्षक दिया गया है—'In the House of Her Friends'—'गौ रक्षकों के घरों में गौ का हाल!' मिस मेयो का यह ताना कितना गहरा परन्तु कितना सच्चा है!

यह कहना कि युरुप में प्राणि-हिंसा भारत से ज़ियादह होती है, और पशुओं को अत्यन्त घोर कष्ट देकर होती है ताकि उन की मोटी-मोटी चमड़ी उन्हें मिल सके, मिस मेयो के आक्षेपों का उत्तर नहीं है! युरुप ने गो रक्षा, प्राणि-रक्षा या अहिंसा की रट ही कब लगाई ? हाँ, गौ को माता पुकारने वाले हम लोगों के हाथों जब तक गौ का यह हाल रहेगा तब तक मिस मेयो के प्रश्न प्रत्येक हिन्दु-धर्माभिमानी की छाती को टकरा-टकरा कर उसे तङ्ग करते रहेंगे, और उस की आत्मा में खलबली मचाते रहेंगे।

बाईसवाँ अध्याय 'सुधारों'—'Reforms'—पर है। इस में दिखाया गया है कि कितने महान् अधिकार भारतीयों को दे दिये गये हैं। इस अध्याय में भी एक असम्बद्ध चुटकला छोड़ा गया है। लिखा है:—"भारतवासी, साधारण अर्थों में नहीं परन्तु पारमार्थिक अर्थों में 'सचाई के उपासक' हैं। वे परस्पर की बातचीत में अनेक स्थलों पर तो बड़ी साफ़-साफ़ बात कह जाते हैं, परन्तु फिर भी समय-समय पर देखा जाता है कि उन की स्पष्ट उक्तियों में कई ऐसी बातें होती हैं, जिन में झूठ का कुछ-न-कुछ अँश कहीं-न-कहीं मिला रहता है। जब बार-बार यह बात देखी गई तो मैंने एक प्रसिद्ध बँगाली के सन्मुख यह समस्या उपस्थित की। उस ने कहा:—'महाभारत में लिखा है, सत्यान्नास्ति परोधर्मः। यदि हम सचाई से परे चले जायं तो इस का कारण यह है कि जिन उलटी परिस्थितियों

में हम रहते हैं उन का हम पर प्रभाव पड़ गया है। झूठ बोलने का अभिप्राय यह है कि हम सच बोलने के परिणामों से डरते हैं।' फिर मैंने यही प्रश्न एक योगी के सन्मुख रखा। उस ने कहाः—'सत्य क्या वस्तु है? भलाई तथा बुराई तो सापेक्षिक शब्द हैं। तुम्हारा अपना 'माप' बना होता है। उस माप पर जो कुछ ठीक उतरे उसे ही तो तुम 'भला' कहते हो! अतः'भलाई' को पैदा करने के लिये यदि कुछ कहना पड़े तो वह झूठ नहीं है। मेरे लिये भलाई-बुराई में कोई भेद नहीं है। हरेक चीज़ भली है। अपने-में, कोई चीज़ बुरी नहीं है। भली या बुरी, नीयत होती है, काम नहीं।' इन दोनों से जब सन्तोष न हुआ तब मैं एक योरोपियन के पास अपनी समस्या को ले गई। वह बहुत दिनों से भारत में रहता था। मैंने पूछाः—'भारतवर्ष में उच्च स्थितियों के व्यक्ति ऐसी-ऐसी झूठी बातें क्यों कह जाते हैं, और साथ अपने कथन की पुष्टि में ऐसे-ऐसे हवाले भी दे जाते हैं जिन को पता लगाने पर मालूम होता है कि उन का कोई आधार था ही नहीं?' उस ने कहाः—'क्योंकि हिन्दू के लिये झूठ कोई चीज़ नहीं है। सब कुछ माया है, अतः माया के सम्बन्ध में जो कुछ कहा जाय वह भी माया ही है। इसीलिये अपने उद्देश्य की सिद्धि में हिन्दू लोग जो भी झूठ बोलना चाहें बोल सकते हैं। और, जब एक हिन्दू मन से बात बना कर कह रहा होता है तब उसे यह नहीं सूझता कि तुम उस की बातों की यथार्थता का पता लगाने का भी कष्ट करोगी।"

मिस मेयो की सत्यान्वेषण बुद्धि पर बलिहारी। पहले उस ने एक भारतीय बङ्गाली के सन्मुख अपने मन की शङ्का रखी, फिर एक योगी के दर्वाज़े की ख़ाक छानी और अन्त में जाकर एक योरोपियन ऋषि के आश्रम में दौड़ी गई और वहीं उस की शङ्का का समाधान हुआ। सब हिन्दू झूठे हैं—यह लाञ्छन लगाया गया है, उदाहरण एक भी नहीं दिया गया, चुटकले छोड़ कर ही काम निकालने की मँशा है! हिन्दू झूठे हैं या नहीं, इसे मिस मेयो सिद्ध नहीं कर सकी; हाँ, 'मदर-इण्डिया' में हवाले दे-दे कर कई ऐसी बातें लिखी गई हैं जो निराधार सिद्ध हो चुकी हैं। महात्मा गान्धी ने, जिन के नाम से 'चतुर्थ-भाग' प्रारम्भ होता है, स्पष्ट लिखा है:—"She has not only taken liberty with my writings but she has not thought it necessary even to verify through me certain things ascribed by her and others to me"—अर्थात्, "मिस मेयो ने मेरे लेखों का, जहाँ-तहाँ पूर्वापर का ख़याल न रखते हुए, इस्तेमाल किया है। साथ ही, उस ने मेरे नाम से, स्वयं अथवा दूसरों के कहने से, कई ऐसी बातें भी लिख डाली हैं जिन की यथार्थता को मुझ से पूछने की उस ने आवश्यकता ही नहीं समझी।"—क्या इसी सत्यान्वेषण बुद्धि के सहारे मिस मेयो सब हिन्दुओं को झूठा सिद्ध करने के प्रयत्न में है? झूठ बोल कर किसी को भी झूठा सिद्ध करना शायद बहुत आसान काम है!

अगला अध्याय है, 'Princes of India'—'भारत के राजा लोग'। मिस मेयो इस में अपने एक अमेरिकन दोस्त की किसी राजा और उस के दीवान से बातचीत लिख रही है:—

"His Highness does not believe," said the Dewan, "that Briton is going to leave India. But still, under this new regime in England, they may be so ill-advised. So, His Highness is getting his troops in shape, accumulating munitions and coining silver. And if the English do go, three months afterward not a rupee or a virgin will be left in all Bengal."

दीवान ने कहा:—"महाराज को यह विश्वास नहीं कि अंग्रेज़ लोग भारतवर्ष को छोड़ कर चले जायेंगे। परन्तु तो भी, शायद, इङ्गलैण्ड में इस नये शासन में, उन्हें यही सलाह कहीं पसन्द आ जाय! इसलिये महाराज अपनी फ़ौजों को तय्यार कर रहे हैं, बारूद इकट्ठा कर रहे हैं और रुपये बनवा रहे हैं। यदि इङ्गलैण्ड चला जायगा तो तीन महीने के पीछे सारे बङ्गाल में एक रुपया भी न बचेगा; और—और, एक कुंआरी भी न बची रहेगी!"

कौन नहीं जानता कि कुंआरियों का सतीत्व नष्ट करने वाले कौन लोग हैं और किन की विषय-वासना की प्रचण्ड ज्वालाओं में अनेकों अबलाओं का जीवन नष्ट हो जाता है?

ऐसे लोगों के मुख से निकली हुई बेहूदा बातों पर विश्वास करना या उन के हवाले देना मिस मेयो के ही पल्ले पड़ा है !

"Our treaties are with the crown of England," one of them said to me, "the princes of India made no treaty with a Government that included Bengali Babus. We shall never deal with this new lot of Jacks-in-office. While Britain stays Britain will send us English gentlemen to speak for the King-Emperor, and all will be as it should be between friends. If Britain leaves, we, the princes, will know, how to straighten out India, even as princes should."

एक राजा ने मिस मेयो से कहा:—"हमारी सन्धियाँ इङ्गलैण्ड के साथ हैं। भारत के राजाओं ने ऐसी गवर्नमेण्ट के साथ कोई सन्धि नहीं की जिस में 'बंगाली-बाबू' भरे हुए हों। इन 'नौकरी-ढूंढने-वालों' के साथ हम कोई सरोकार नहीं रखेंगे। जब तक ब्रिटन भारत में है तब तक वह सम्राट् के प्रतिनिधियों को यहाँ भेजता ही रहेगा और हमारा-उनका बिरादराना सलूक रहेगा। यदि ब्रिटन चला जायगा, तो राजा लोग जानते हैं, हिन्दुस्तानियों को कैसे सीधा किया जाय !"

मिस मेयो इस के आगे लिखती है:—"Then, I recall a little party given in Delhi by an Indian friend

in order that I might privately hear the opinions of certain Home Rule politicians. They had spoken at length on the coming expulsion of Briton from India and on the future in which they themselves will rule the land.

'And what', I asked, 'is your plan for the princes ? ' 'We shall drive them out', exclaimed one with conviction. And all the rest nodded assent."

"उक्त राजा की बातें सुनने के बाद मुझे याद है, मुझे दिल्ली के एक भारतीय मित्र ने एक पार्टी दी ताकि मैं एकान्त में होमरूलरों की बातें सुन सकूं। जब बहुत देर तक वे लोग अंग्रेज़ों को भारतवर्ष से निकालने तथा स्वयं इस देश में शासन करने पर बोल चुके तो मैंने पूछाः—'भारत के राजों को ठीक करने के लिये आप लोगों की क्या तजवीज़ है ?' एक ने दृढ़ विश्वास से कहाः—'उन्हें हम मलियामेट कर देंगे' ! और, बाकी ने सिर झुका कर इस का अनुमोदन किया।"

लाला लाजपतराय लिखते हैं कि इस घटना का पता लगाने पर मालूम हुआ है कि मिस मेयो के ये मित्र जिन्हों ने उन्हें दिल्ली में पार्टी दी थी, एसोशियेटेड प्रेस के के. सी. राय हैं। के. सी. राय तथा उन की पत्नी, दोनों का कहना है कि उस पार्टी में पति-पत्नी के अतिरिक्त एसोशियेटेड प्रेस के मि०

सेन भी मौजूद थे, और बाहर का कोई व्यक्ति इस पार्टी में मौजूद नहीं था। जिस बात का ज़िक्र मिस मेयो ने किया है वह वहाँ बिल्कुल नहीं हुई! यह है मिस मेयो की सत्यप्रियता। उक्त घटना का उल्लेख ही बता रहा है कि वह सच नहीं हो सकती। भारतवर्ष के होम रूलर मिल कर, एकान्त में, मिस मेयो के सामने स्वराज्य की चर्चा करें, और मिस मेयो उन से पूछे कि राजाओं के लिए क्या स्कीम तय्यार की गई है, यह तभी सम्भव हो सकता है जब मिस मेयो को किसी षड्यन्त्र-कारी पार्टी में निमन्त्रित किया गया हो, और वह उन का भेद पता लगाने के लिये उन का बिल्कुल अङ्ग बन गई हो! चार महीनों में मिस मेयो ने सब कुछ कर के सचमुच ग़ज़ब ढा दिया है!

२४ वें अध्याय में हिन्दू-मुसलमानों के झगड़ों पर लिखा गया है:—"स्वराज्य के सन्देश-हर मोपला लोगों के पास भी भेजे गये। मोपला मुसलमान थे। उन के लिये तो स्वराज्य का अर्थ मुस्लिम-राज्य था, जिस में एक भी मूर्ति न हो। उन लोगों ने चाकू, उस्तरे, डंडे इकट्ठे करने शुरु किये। २० अगस्त १९२१ को मोपला लोग हिंदुओं पर टूट पड़े; काफ़िरों को मुसलमान बना लेना ही तो उन के लिये स्वराज्य था। इस उपद्रव में तीन हज़ार मोपला मारे गये और न जाने कितने हिंदुओं को यमपुर पहुँचा गये। ६ महीने तक सरकारी फ़ौजें पड़ी रहीं। मोपलों ने जिस हिन्दू को देखा उस का ख़तना कर दिया, कइयों के ख़ून

में विष का संचार हो गया। वे लोग इसी अवस्था में मद्रास भर में फिर रहे थे और अपने सहधर्मियों को बतला रहे थे कि यदि स्वराज्य मिल गया तो तुम सब की भी यही दुर्दशा होगी जो हमारी हुई।" एक अमेरिकन ने जिस ने ये बीभत्स दृश्य देखे थे मिस मेयो से कहाः—

"I saw them in village after village, through the south and east of Madras Presidency. They had been circumcised by a peculiarly painful method, and now, in many cases, were suffering tortures from blood-poisoning. They were proclaiming their misery, and calling on all their gods to curse Swaraj and to keep the British in the land. 'Behold our miserable bodies! we are defiled, outcasted, unclean, and all because of the serpents who crept among us with their poison of Swaraj. Once let the British leave the land and the shame that has befallen us will assuredly befall you also, Hindus, man and woman, everyone'.

"The terrors of hell were literally upon them."

"मैंने उन्हें गाँव से गाँव में, मद्रास प्रान्त में, दक्षिण-पूर्व, जाते देखा। उन के अजीब तरह से, किसी दर्दनाक तरीके

से, ख़तने किये गये थे, और अब, अनेक व्यक्ति, रुधिर में विष-सञ्चार हो जाने की असह्य वेदना से तड़प रहे थे। वे अपने दुःख की चिल्ला २ कर घोषणा कर रहे थे और अपने देवतों को सम्बोधन कर 'स्वराज्य' को अभिशापित करने की दुआ माँग रहे थे और अँग्रेज़ों के भारत में टिके रहने की प्रार्थना कर रहे थे! वे कह रहे थेः—'देखो हमारे शरीरों की दुर्दशा! हम अपमानित हुए, जाति-बहिष्कृत हुए, केवल इस-लिये क्योंकि कुछ साँप अपना 'स्वराज्य' का विष लेकर हम में आ घुसे! एक बार भी अँग्रेज़ इस भूमि को छोड़ कर चले जायँ तो जो बेइज़्ज़ती हमारी हुई है वह हरेक हिन्दू, स्त्री-पुरुष, की होगी!'"

"सचमुच वे लोग नरक की यातना भोग रहे थे!"

इस में सन्देह नहीं, मोपला-विद्रोह भारत की अमर कीर्ति पर कलङ्क है परन्तु मोपला विद्रोह का कारण स्वराज्य की पुकार नहीं, अपि तु वह जटिल 'हिन्दू-मुस्लिम-समस्या' है जिसे भारत ने किसी न किसी दिन हल करना ही है। मोपला विद्रोह में हिन्दुओं पर ऐसे-ऐसे भयँकर अत्याचार होने का एक ख़ास कारण है। स्वराज्य की पुकार में महात्मा गान्धी ने ख़िलाफ़त के प्रश्न को साथ मिला दिया था। मुसल्मान लोग यह समझने लगे थे कि वे स्वराज्य के लिये इसलिये कोशिश नहीं कर रहे क्योंकि 'स्वराज्य' की ज़रूरत है, परन्तु इसलिये क्योंकि इस्लाम ख़तरे में है। मुसलमानों के सामने स्वराज्य

का इतना ही पहलू रहा जिस का उन के लिये अभिप्राय था 'इस्लाम की रक्षा' ! इस इस्लाम की रक्षा में मोपलों ने हिन्दू तथा अँग्रेज़—दोनों पर वार किया, परन्तु अँग्रेज़ उन के हाथ नहीं आये, और हिन्दु क्योंकि पर्याप्त सँख्या में वहाँ थे, मारे गये, लुट गये, घायल हुए। महात्मा गान्धी ने मुसलमानों में 'देशभक्ति' के भाव उत्पन्न करने के स्थान में ख़िलाफ़त के प्रश्न को अपना-कर 'इस्लाम भक्ति' के भाव पैदा कर दिये। मौका मिलते ही कट्टर मुसलमानों का, रग-रग में बसा हुआ पशुपन जाग उठा और इस्लाम की इतिहास प्रसिद्ध-तेग़ चलने लगी। मुसलमानों की इस क्रूर कट्टरता का नग्न-नृत्य देख कर देश सँभल रहा है। अब या तो मुसलमानों को 'इस्लाम की रक्षा' का शोर छोड़ कर 'देश की रक्षा' की फ़िक्र करनी होगी, या हिंदुओं के जाग जाने के अगले दिन उन का इस्लाम ही, जो देश में तनाव उत्पन्न करने का कारण है, ख़तरे में पड़ जायगा। इस के अतिरिक्त, हिन्दू-मुसलमानों को लड़ाना किसी तीसरे दल का स्वार्थ समझा जाता है। यह झगड़ा पहले नहीं था, इसे यह तूल रूप दिया गया है। मिण्टो-मोर्ले सुधारों का वर्णन करते हुए लॉर्ड मोर्ले ने अपने 'रिकोलेक्षन्स' में मिंटो को लिखी एक चिट्ठी दी है जिस में उसे सम्बोधित कर के लिखा है—'You started the Muslim hare.'। घटना का स्वरूप यह है कि सुधारों की घोषणा करने से पहले मिंटो ने कुछ मुसलमानों को बुला कर कहा कि तुम अपनी जाति के

लिये जाति-गत-प्रतिनिधित्व (Communal representation) माँगो, तुम्हें दिया जायगा। तब से हिंदू-मुसल्मानों के धार्मिक झगड़े ने राजनीति के क्षेत्र में पदार्पण किया और भारत की जातीयता के वायु-मण्डल में विष का सञ्चार कर दिया। इस समय हिन्दू-मुसल्मानों के झगड़े धार्मिक तथा राजनैतिक दोनों क्षेत्रों में दिखाई देते हैं। धार्मिक क्षेत्र में तो उन की भिन्नता थी ही, राजनैतिक क्षेत्र में भी सरकार की भेद-नीति के कारण भिन्नता आ गई है, और, आये-दिन दोनों की सिरफुटौअल हुआ करती है जिस का तमाशा हमारी सरकार बड़े मज़े से देखा करती है। इन दोनों में से, धार्मिक झगड़े को हम सुलझा लेंगे। आज नहीं तो कल यह झगड़ा शान्त हो जायगा; परन्तु राजनैतिक झगड़े की शाँति का एकमात्र उपाय सरकार के हाथ में है। यदि राजनैतिक अधिकारों का बँटवारा 'हिंदू' या 'मुसल्मान' होने के कारण किया जायगा तो झगड़े की जड़ें भी पाताल की तरफ़ चलती चली जायँगी। इस झगड़े को शाँत करने के लिये, 'हिंदुत्व' या 'मुसलत्व' को भुला कर, 'भारतीयत्व' को निखारना होगा—और उस का उपक्रम सरकार पर ही निर्भर है। राजनीति के क्षेत्र में इन भेदों को मिटा दिया जाय तो धार्मिक क्षेत्र में झगड़े रहेंगे ही नहीं। कम-से-कम उन का तीखापन अवश्य चला जायगा। धार्मिक झगड़े तो वैसे इस २० वीं शताब्दी में इङ्गलैंड में भी हो रहे हैं। २३ जून १९२६ को रूटर ने लण्डन से तार दिया था:—

'लिवर पूल के ५० स्कूल कैथोलिक और प्रोटेस्टेण्ट लड़कों और उन की माताओं की पारस्परिक लड़ाई के कारण बंद हो गये।' २६ जून १६१० का लण्डन का एक तार था:—'लिवर पूल का कैथोलिक पादरी अपने घर को जा रहा था; रास्ते में प्रोटस्टेण्ट लोगों ने उस की गाड़ी पर पत्थर फेंके।' अगस्त, १६१० का तार था:— 'दक्षिणी वेल्स में यहूदियों पर आक्रमण हो रहा है। यहूदी लोग भाग-भाग कर कारडिफ़ में इकट्ठे हो रहे हैं। बारगोड और गिलफ़ैच में अभी उपद्रव जारी है। सेनघेनयोड में यहूदियों की दो दुकानें जला दी गई हैं।' युरुप में आज यह धार्मिक-अहिष्णुता दिखाई देती है। भारत तो धार्मिक सहिष्णुता का केन्द्र रहा है। मुसल्मानों से सताये जा कर पारसी लोग इसी देवभूमि में आ कर तो बचे थे। अलाउद्दीन के कप्तान मलिक काफ़ूर ने जब रामेश्वरम पर आक्रमण किया तो लौटते समय वहाँ एक छोटी सी मस्जिद बना दी। मलिक चला गया, रामेश्वरम में एक भी मुसल्मान नहीं रहा, परन्तु वह मस्जिद वैसी-की-वैसी खड़ी रही, उस की एक ईंट को भी किसी ने नहीं हिलाया। औरङ्गज़ेब की पोती दुर्गादास के यहाँ छुटपन से रही और दुर्गादास ने उस के लिये ख़ास एक मौलवी रख कर उसे कुरान पढ़ाया ताकि वह अपने धर्म में ही दीक्षित रहे। १५-१६ वर्ष की आयु में जब लड़की अपने दादा के यहाँ पहुँचा दी गई तब वह उसे इस्लाम में पहले से ही दीक्षित देख

कर हक्का-बक्का रह गया। हिंदुओं की धार्मिक-सहिष्णुता इतिहास प्रसिद्ध है। उन्हों ने तो इस में 'अति' कर दी है। अब भी भारत में धार्मिक दृष्टि से हिंदू-मुसल्मानों का प्रश्न जाति को उद्विग्न नहीं करेगा, उस का तीखापन एकदम मिट जायगा, यदि राजनैतिक क्षेत्र में जिस भेदनीति का प्रयोग किया जा रहा है उसे छोड़ दिया जाय !

मोपलों ने जिन हिंदुओं पर अत्याचार किया था उन की शुद्धि की चर्चा मेयो ने यूं की है:—"ब्राह्मण लोग शुद्धि करने के लिये १०० से १५० रुपये तक प्रति व्यक्ति माँग रहे थे, और शुद्ध हुए बिना उन बेचारों की 'मुक्ति' नहीं हो सकती थी ! यह शुद्धि भी विचित्र चीज़ थी ! इस में आँख, कान, मुख, नाक को पहले गौ के गीले गोबर से भरा जाता था, फिर उन्हें गो-मूत्र से धोया जाता था, अनन्तर शुद्ध होने वालों को घी, दूध, दही खिलाया जाता था। वैसे तो यह सँस्कार बड़ा सीधा-सादा मालूम पड़ता है परन्तु इसे बाक़ायदा वेदमन्त्र पढ़ कर ब्राह्मण ही करा सकता है और अब, ब्राह्मण लोग तो अपने मेहनताने की दक्षिणा इतनी माँग रहे थे जो सब न दे सकते थे। उन लोगों की इस दीनावस्था को देख कर, ब्रिटिश अफ़सरों ने, पहली बार, धर्म में हस्ताक्षेप करते हुए, ब्राह्मणों से कहा कि इतने लोग इकट्ठे शुद्ध हो रहे हैं अतः थोक माल का ख़्याल कर के २० रुपया प्रति व्यक्ति ले लो, और शुद्धि कर दो !"

इस के बाद मिस मेयो ने ४ फ़र्वरी १६२१ की चौरी-चौरा की घटना का उल्लेख किया है:—"स्वयँ-सेवक तथा गाँव के लोग लगभग २००० आदमी पुलिस-स्टेशन के चारों ओर घिर आये, कुछ को गोली मार कर ख़तम किया, बाक़ी को घायल कर के इकट्ठा किया और उन्हें तेल डाल कर जीते-जी भस्म कर दिया। क्योंकि पुलिस-स्टेशन में प्रायः हिंदू ही सरकारी नौकर थे, अतः यह क्रूर तथा कायरता पूर्ण हृदयहीन बर्ताव हिंदुओं का हिंदुओं के प्रति हुआ।"

अब सुनिये हिंदुओं का अँग्रेज़ों के प्रति बर्ताव मिस मेयो के शब्दों में! मिस मेयो लिखती है कि १६१६ में लायलपुर में एक नोटिस लगा था जो 'Disorders Enquiry Committee' की रिपोर्ट में दिया गया है। वह नोटिस यह था—

"Blessed be Mahatma Gandhi. We are sons of India......Gandhi. We the Indians will fight to death after you ;···what time are you waiting for now? There are many ladies here to dishonour. Go all around India, clear the country of the ladies."

"महात्मा गाँधी की जय! हम भारत के पुत्र हैं... गाँधी। हम तुम्हारे पीछे मरते दम तक लड़ेंगे;...अब किस बात की इन्तिज़ार है? यहाँ काफ़ी औरतें हैं—चारों तरफ़ जाओ और उन का सफ़ाया करो!*

यदि मिस मेयो के अन्दर परमात्मा की दी हुई कोई भी आत्मा है तो क्या वह बाइबल को हाथ में लेकर, यदि वह बाइबल को न मानती हो तो ब्रिटिश सरकार को गवाह बना कर, यह शपथ खा सकती है कि ऊपर दिया हुआ नोटिस किसी एक-आध व्यक्ति की घृणित-शरारत के सिवाय कुछ और अर्थ रखता है? क्या सारे असहयोग-आन्दोलन में इस प्रकार की एक भी घटना हुई? हाँ, डायर और ओडवायर ने भारतीय स्त्रियों के साथ जो व्यवहार किया उस की कहानी भारत का बच्चा-बच्चा जानता है, और उस का ज़िक्र इस पुस्तक में कहीं नहीं!

इस के बाद मिस मेयो ने हिंदू-मुस्लिम वैमनस्य दिखाने के लिये लखनऊ के एक दंगे का इस प्रकार उल्लेख किया है:-
"लखनऊ के शहर के लिये एक 'पार्क' बनाने का प्रस्ताव हुआ। जिस ज़मीन पर पार्क बनना था उस की पैमाइश की गई। उसी ज़मीन में एक छोटा-सा हिंदू-मन्दिर भी कोने की तरफ़ पड़ता था। सरकार ने अपनी नीति के अनुसार मन्दिर को अछूता उसी प्रकार छोड़ दिया। अब मुसलमान भी आए और कहने लगे कि हमें भी इस सुन्दर 'पार्क' में कुछ जगह नमाज़ पढ़ने के लिये मिल जाय तो बहुत कृपा हो। म्यूनिसि-पैलिटी ने एक सुन्दर-सी जगह मुसलमानों के लिये भी 'पार्क' में रखवा दी। हिंदू अपने मन्दिर में और मुसलमान खुली जगह में लगभग ८ वर्ष तक बड़े मज़े में अपना पूजा-पाठ करते तथा नमाज़ पढ़ते रहे! इतने में भारत को नवीन सुधार

दिये गये, इन सुधारों के साथ उन का फल भी आया, हिंदू-मुसलमानों का पारस्परिक विरोध बढ़ गया ! लखनऊ मुसल्मानी शहर है, इसलिये मुसल्मान सोचने लगे कि यदि भारत का शासन हिंदुस्तानियों के हाथ में आने वाला है तो उन का शहर, लखनऊ, मुसल्मानों को ही मिलना चाहिये। परन्तु जहाँ लखनऊ में धनियों की संख्या ज़्यादहतर मुसल्मानों की है वहाँ हिंदू, मुसलमानों से तिगुने हैं, इसलिये वे आपस में सोचने लगे, यदि स्वराज्य सचमुच मिलने वाला है तो हम हिंदुओं की लखनऊ में क्या स्थिति रहेगी? क्या हम लोग मुसलमान-शासकों के नीचे रखे जायँगे? इस से तो अच्छा है, हम ज़हर खा कर मर जायँ! बस, यह सोच कर हिंदू लोग सँगठन करने लगे, अपनी 'सत्ता' जतलाने लगे। प्रतिदिन सायँकाल 'पार्क' के उस छोटे से पुराने मन्दिर में वे इकट्ठे होकर शोर-शार मचाने लगे। सायँकाल का समय मुसल्मानों की नमाज़ का वक़्त होता है। आठ साल तक मुसलमान वहाँ अपने कम्बल बिछा-बिछा कर नमाज़ पढ़ते रहे थे, इसलिए उन्हों ने घोषणा कर दी:—"हिंदुओं को मन्दिर में इकट्ठा होने के लिये ऐसा समय चुनना चाहिये जो मुसल्मानों की नमाज़ के समय से भिन्न हो। हिंदुओं ने मुसल्मानों की इस घोषणा पर क्रोध किया; मुसल्मानों ने हिंदुओं के क्रोध-पर-क्रोध किया। बस, फिर क्या था, दोनों दलों के झुण्ड-के-झुण्ड लाठियाँ कन्धे पर रख-रख कर एक ही समय 'पार्क' में इकट्ठे हो

गये ताकि वे लड़-भिड़ कर मामले को स्वयं तय कर लें। घमासान युद्ध हुआ जिस में मुसलमानों ने हिंदुओं को भगा दिया!"

इस घटना से हिंदू-मुसलमानों के पारस्परिक झगड़ों पर जहाँ प्रकाश पड़ता है वहाँ यह बात भी स्पष्ट हो जाती है कि सरकार को ऐसी अवस्थाएँ उत्पन्न करने से कोई खास इन्कारी नहीं जिन से हिंदू-मुसलमानों के झगड़े की आशङ्का बनी रहे! साथ ही 'मदर-इण्डिया' की एक विशेषता है। जहाँ-तहाँ हिंदुओं को कोसा गया है, उन्हें बदनाम किया गया है, परन्तु मुसलमानों के विषय में एक अध्याय लिखा गया है—२५ वाँ —'Sons of the Prophet'—'पैग़म्बर की औलाद'—परंतु उस औलाद की बाबत न-जाने उतना प्रकाश क्यों नहीं डाला गया जितना हिंदुओं के विषय में?

२६ वें अध्याय में बनारस का वर्णन है, इस अध्याय का शीर्षक है 'The Holy City'—'पवित्र शहर'! बनारस में वैज्ञानिक उपायों से शुद्ध किये पानी को लोग न पी कर गङ्गा के गन्द भरे पानी को ही पीते हैं और कहते हैं:—

"It lies not in the power of man to pollute the Ganges. And, filtering Ganges water takes the holiness out."

"गङ्गा को अपवित्र कर सकना तो मनुष्य की शक्ति से बाहर है। और, गङ्गा-जल को नितारने से उस का माहात्म्य निकल जाता है।" फिर लिखा है:—

"Again, whoever dies in Benares goes straight to heaven. Therefore endless sick, hopeless of cure, come here to breathe their last, if possible, on the brink of the river with their feet in the flood."

"जो बनारस में मरता है वह सीधा स्वर्ग जाता है। इसलिये अनन्त रोगी, जिन्हें अच्छा होने की आशा नहीं रहती, मरने के लिये यहाँ पहुँचते हैं और, यदि सम्भव हो तो, गँगा के किनारे पावों को गंगा के बहाव में डाल कर पड़ जाते हैं ताकि वे इसी हालत में मरें।"

बनारस के स्वास्थ्य-विभाग के अफ़सर के साथ मिस मेयो मरघट पर गईं। वहाँ पर ठण्डी चिता की राख में कुत्ते कुछ सूंघ रहे थे। मिस मेयो लिखती हैः—

'See those dogs nosing among the ashes. There—one has found a piece!', said I to the doctor, as we stood looking on.

'Yes', he answered. 'That happens often enough. For they burn bodies here, sometimes rather incompletely, at all hours of day and night. Still, if the dog had not got that bit it would simply have got into the river, to float down among the bathers. As the dead babies do, in any

case. No Hindu burns an infant. They merely toss them into the stream.'

"मैंने कहा, देखो वे कुत्ते सामने की राख की ढेरी में नाक धँसा रहे हैं। वह देखो—एक कुत्ते को कोई टुकड़ा मिल गया!" डाक्टर ने कहाः—"हाँ, ऐसा तो अक्सर होता है। यहाँ पर मुर्दों को आधा-सा ही जला देते हैं, और मुर्दे यहाँ दिन-रात जलते रहते हैं। तो भी, यदि कुत्ते को वह टुकड़ा न मिलता तो वह नदी में कूद पड़ता क्योंकि उसे कोई मुर्दा-बच्चा तो हर हालत में मिल जाता। कोई हिन्दू भी बच्चों को जलाता नहीं है—वे उसे धार में बहा देते हैं।" बनारस के गन्द के विषय में लिखा हैः—

"The river banks are dried sewage. The river water is liquid sewage. The faithful millions drink and bathe in the one, and spread out their clothes to dry upon the other. Then in due time, having picked up what germs they can, they go home over the length and breadth of India to give them further currency, carrying jars of the precious water to serve through the year."

"नदी का किनारा शुष्क-विष्ठा से, नदी का पानी घुली हुई विष्ठा से भरा होता है। लाखों भक्त लोग इन में से एक में स्नान करते हैं तथा दूसरे पर अपने कपड़े सूकने के लिये

डालते हैं। फिर, यथावसर, जितने भी रोग-क्रिमियों को वे ले जा सकते हैं, उन्हें सम्पूर्ण भारतवर्ष में फैलाने के लिये, इस अमूल्य पानी को, घड़ों में भर-भर कर ले जाते हैं ताकि साल भर काम आवे!"

एक हिन्दू डाक्टर ने मिस मेयो से बनारस के मन्दिरों का वर्णन यूं किया:—"The temples of Benares are as evil as the ooze of the river banks. I myself went within them to the point where one is obliged to take off one's shoes, because of sanctity. Beyond lay the shrines, rising out of mud, decaying food and human filth. I would not walk in it. I said—No! But hundreds of thousands do take off their shoes, walk in, worship, walk out, put back their shoes upon their unwashed feet."

"बनारस के मन्दिर इतने ही गन्दे हैं जितने नदी के किनारे। मैं स्वयं उन में उस जगह तक गया जहाँ पर पवित्रता के कारण जूता उतारना पड़ता है। सामने मन्दिर है, चारों तरफ़ कीचड़, सड़ा हुआ भोजन तथा विष्ठा पड़ी है। मैं अन्दर नहीं गया। मैंने कहा-'बस'! परन्तु लाखों आदमी वहाँ जूता उतार कर, अन्दर जाते हैं, पूजा करते हैं, उसी तरह बाहर आते हैं और बिना पैर धोये जूता पहन कर अपने अपने घरों को चल देते हैं।"

बाज़ारों का वर्णन करते हुए लिखा है:—"Close upon platforms, on both sides of the road, runs an open gutter about a foot wide. Heaped on the slats of the wooden platform, just escaping the gutter, are messes of fried fish, rice cakes, cooked curry, sticky sweetmeats and other foods for sale. All the food-heaps lie exposed to every sort of accident, while flies, dirty hands, the nosing of dogs, cows, bulls and sheep and rats constantly add their contributions."

"दुकानों के पास लकड़ी के मञ्च बने होते हैं जिन से लगी हुई, सड़क के दोनों तरफ़, एक फुट चौड़ी, खुली, गन्द की नाली बह रही होती है। इस मञ्च के फट्टों पर, नाली से ज़रा ही बच कर, तली हुई मछली, चावल की रोटी, दाल, चिपचिपी मिठाई तथा दूसरे खाद्य पदार्थ बेचने के लिए रखे होते हैं। इन चीज़ों के ढेर के ढेर खुले पड़े रहते हैं और मक्खियाँ, गन्दे हाथ, कुत्तों की नासिकाएँ, गौ, बैल, बकरी, चूहे, सब की इन पर मेहरबानी होती रहती है।" फिर लिखा है:—

"And you must be careful, in walking, not to brush against the wall of a house, for the latrines of the upper stories and of the roofs drain down the outside of the houses either in leaking

pipes or else from small vent-holes in the walls, dripping and stringing into the gutter slow streams that just clear the fried fish and the lollypops."

"चलते हुए सावधान रहना चाहिये कि कहीं किसी घर की दीवाल से छू न जायँ। क्योंकि ऊपरली मँज़िलों की टट्टियों के नलके या दीवार ही फटी होने के कारण सब गन्द रिस-रिस कर मकान के बाहर की दीवार पर लगा होता है और उस का गन्दा पानी चू-चू कर नीचे पड़े हुए मछली के टुकड़ों और बतासों को साफ़ कर रहा होता!"

इस प्रकरण में मिस मेयो ने महात्मा गान्धी का निम्न उद्धरण दिया है:—"दक्षिण की तरफ़ देखा गया है कि लोग गलियों तथा बाज़ारों को गन्दा करने में कोई कसर नहीं रख छोड़ते। प्रातः काल गलियों में, दोनों तरफ़ लोगों को कतार बान्धे वह काम करते बैठा देख कर जो उन्हें एकान्त में करना चाहिये, इतना बुरा मालूम पड़ता है कि किसी भलेमानस के लिये तो गुज़रना भी मुश्किल हो जाता है। बँगाल में भी लगभग यही हाल है। उसी तालाब में वे आबदस्त लेते हैं, उसी में उन के मवहशी पानी पीते हैं और उसी में से घड़े भर-भर कर वे घर के काम के लिये पानी ले जाते हैं।"

यदि राजनैतिक रंग से जुदा कर इन बातों पर विचार किया जाय तो प्रत्येक भारतीय को मिस मेयो की इन बातों से शिक्षा लेनी चाहिये!

इस अध्याय का अन्त मिस मेयो ने एक विचित्र घटना लिख कर किया है:"अँग्रेज़ी पढ़ लेना उतना मुश्किल नहीं जितना जातीय स्वभावों से पीछा छुड़ाना। भारतवर्ष में ऐसे आदमी मिलेंगे जो अँग्रेज़ों को भी मात कर देने वाली अँग्रेज़ी बोलते होंगे, लिबास भी नख से शिख तक अंग्रेज़ों का ही होगा, परन्तु वे ऐसे गाँव के रहने वाले होंगे, जहाँ कूँआ खोदने को ज़मीन को चुनने के लिये, वैज्ञानिक उपायों के अवलम्बन करने की जगह बकरे पर एक बाल्टी-भर पानी डाल कर स्थान का निर्णय किया जाता होगा। पानी डालने से बकरा भागता है, लोग उस के पीछे भागते हैं। जहाँ बकरा पहले खड़ा हो कर बदन को झाड़ता है, बस, वहीं कूँआ खोदा जाता है, चाहे वह जगह बाज़ार के ठीक बीच में ही क्यों न हो।"

मिस मेयो को विश्वास दिलाया जा सकता है, कि कूएँ खोदने के उक्त प्रकार का वर्णन 'चुटकले' का मतलब ही हल करता है! क्या वह बतला सकती है कि ऐसे कितने कुएँ खुदे?

सत्ताईसवाँ अध्याय है,—'The World-Menace'—'संसार के लिये ख़तरा'—कौन है? भारतवर्ष! मिस मेयो कहती है कि भारतवर्ष न्यूयार्क से कुल एक महीने का रास्ता है, इसलिये भारत में दिनों-दिन फैलने वाली बीमारियों का अमेरिका तक को ख़तरा है। अन्तर्जातीय विभाग में काम करने वाले स्वास्थ्य-रक्षा के जानकार एक अमेरिकन ने मिस मेयो से कहा:—

"Whenever India's real condition becomes known all the civilized countries of the world will turn to the League of Nations and demand protection against her."

"जब सभ्य सँसार को भारत की अस्ली हालत मालूम हो जायगी तो सब देश राष्ट्र-संघ से दर्ख़ास्त करेंगे कि हमें भारत से बचाओ !"

मिस मेयो को मालूम होना चाहिये कि घातक बीमारियों का भारतवर्ष की अपेक्षा युरुप से ज़्यादह ख़तरा है। सिफ़लिस जैसी भयङ्कर बीमारी का भारतवर्ष में कहीं पता तक न था। युरोपियन लोग इस बीमारी को यहाँ लाये, इसीलिये इस का नाम संस्कृत में 'फिरंगरोग' है,—अर्थात्, फ़िरँगियों की बीमारी ! चरक, सुश्रुत में तो इस बीमारी का ज़िक्र ही नहीं। पीछे के ग्रन्थ 'भाव-प्रकाश' में ज़िक्र है और उस में लिखा है:—

गन्धरोगः फिरँगोऽयँ जायते देहिनां ध्रुवम् ।
फिरँगिणोऽङ्ग सँसर्गात्फिरँगिण्याः प्रसँगतः ॥

अर्थात्, "यह गन्ध-रोग फिरङ्गी मनुष्यों के सँसर्ग से और फिरँग देश की स्त्रियों के प्रसँग से होता है।" 'एन्साइक्लोपीडिया मैडिका' में सिफ़िलस के विषय में लिखा है कि युरुप में १४९४ ई० में यह रोग कोलम्बस के नाविक अमेरिका से लाये और सम्पूर्ण युरुप में इसे फैला दिया। इस समय यह

अवस्था है कि जहाँ-जहाँ युरोपियन लोग जाते हैं वहाँ-वहाँ सिफ़िलस भी पहुँचता है। तभी हैविलाक इलिस ने 'सिविलिज़ेशन' को 'सिफ़िलिज़ेशन' लिखा है! क्या 'लीग ऑफ़ नेशन्स' के सामने यह दर्ख़ास्त न करनी चाहिये कि फिरँग रोग फैलाने वाले फिरँगियों से सँसार की रक्षा की जाय!

चरक तथा सुश्रुत में सिफ़िलस, प्लेग, हैज़ा, इन्फ्लुएन्ज़ा वार फ़ीवर, रेड फ़ीवर—किसी बीमारी का भी निशान नहीं मिलता। ये बीमारियाँ भारतवर्ष में बाहर से आयी हैं, इसलिये मिस मेयो को 'लीग ऑफ़ नेशन्स' के पास दर्ख़ास्त करने की ज़रूरत नहीं।

भारतवासी, बीमारियों का कारण क्या समझते हैं? "ज़िले की सब से उच्च स्थिति वाली महिला सिरहाने पर खड़ी डाक्टरनी से कहती है:—'मैं तुम्हें अपनी जीभ क्यों दिखलाऊँ जब कि दर्द नीचे कहीं जाकर पेट में है? और यदि मैं मुख खोलूंगी तो और बुरी आत्माएँ अन्दर आ घुसेंगी।' ज़िले का ज़मींदार अपने दस दिन के बच्चे के कुछ ही दूर, जहाँ से वह पञ्जा न मार सके, बड़े भारी बन्दर को बांध देता है और फिर बन्दर को दिक़ कर उसे गुस्सा दिलाता है ताकि वह बच्चे की तरफ़ मुंह बनाये और उस से डर कर बच्चे को सताने वाला भूत भाग जाय। जब उच्चस्थिति के लोगों की यह अवस्था है तब गांवों में रहने वाले अशिक्षित देहातियों से क्या आशा की जा सकती है?"

परन्तु यह भूत प्रेत लीला तो युरुप में भारत से बढ़ कर हो चली है। लण्डन के प्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रो० विलियम क्रुक्स भूतों को, और जिनों को, मानते थे। इन भूत-प्रेत वादियों ने युरुप में एक सोसाइटी कायम कर रखी है जिस का नाम Society for Psychical Research (परान्वेषण परिषत्) रखा है। थियोसोफ़िकल सोसाइटी के सभी सदस्य, जिन की संख्या युरुप में बहुत काफ़ी है, भूत-प्रेत में विश्वास करते हैं। कहने का यह अभिप्राय नहीं कि भूत-प्रेत होते ही हैं, हमारा विश्वास तो है कि यह वहम है, परन्तु यह तो निश्चित है कि यह बीमारी केवल भारतीयों को ही नहीं, अपितु इसे बीमारी कहने वाली मिस मेयो के देश-भाई भी इस रोग से पीड़ित हैं।

भारतीय 'वैद्यों' का वर्णन करने के लिये ('हकीमों' का ज़िक्र इस पुस्तक में नहीं है) एक अलग अध्याय लिखा गया है:—'Quacks Whom We Know'—'नीम हकीम'! इस का प्रारम्भ इस प्रकार किया गया है:—

"ब्राह्मणों की एक कहावत है:—चलने से बैठना भला, बैठने से लेटना भला, लेटने से सोना भला, और सब से भला है—मर जाना!"

फिर 'सुश्रुत' की खिल्ली उड़ाई गई है। "सुश्रुत में लिखा है कि बीमार आदमी के दूत की शक्ल, उस के कपड़े, उस की बातचीत, उस समय हवा की गति आदि को देख कर कहा जा सकता है कि बीमार बचेगा या नहीं !!!"

चरक और सुश्रुत की शल्य-चिकित्सा पर लिखा है:—"एक वैद्य ने आयुर्वेदिक की पुस्तक सामने रख कर, एक आपरेशन करना शुरु किया। बीमार को नीचे दबा कर बिना मूर्छा की दवा सुंघाए, उस ने चीरा दे डाला। चाकू अन्दर खुभ गया, बीमार उछल पड़ा, उस की नसें, पेट, आँतें सब कुछ कट गया। वह वैद्य शारीर-शास्त्र से अनभिज्ञ था। बीमार को निकटवर्ती डिस्पेन्सरी में ले जाया गया। वहाँ एक मामूली सा हिन्दुस्तानी डाक्टर था, वह इस बीभत्स व्यापार को देख कर डर गया। उस ने अपनी जान बचाने के लिये कहा, मैं तो छोटे छोटे फोड़े-फुन्सी के इलाज के लिये हूं, इसे किसी हस्पताल में ले जाओ। हस्पताल पहुँचने से पहले पहल ही बीमार मर गया।"

क्या मिस मेयो का मतलब यह है कि बिना अभ्यास किये यदि हैलीबर्टन की पुस्तक हाथ में लेकर कोई डाक्टर आपरेशन करने लगेगा तो उस की हालत कुछ बेहतर होगी? चरक और सुश्रुत से ही तो युरुप ने सीखा है! मद्रास के भूतपूर्व गवर्नर लार्ड एम्पथिल ने कहा था:—"I am not sure whether it is generally known that the science of medicine originated in India, but this is the case, and the science was first exported from India to Arabia and thence to Europe." अर्थात्, "यह बात शायद लोगों को उतनी मालूम नहीं कि वैद्यक-शास्त्र की

उत्पत्ति भारत वर्ष में हुई। यहाँ से अरब के लोगों ने सीखा और उन से युरुप ने!" सर डब्ल्यु हण्टर ने लिखा है:— "हिंदुओं का वैद्यक-शास्त्र स्वतंत्र रूप से बना। बगदाद के खलीफ़ा ने ८५०-६६० ई० में चरक तथा सुश्रुत के आधार पर अरबी हिकमत की आधार शिला रखी और १७ वीं शताब्दी तक युरुप के लोग अरब से ही वैद्यक सीखते रहे। अरबी ग्रन्थों के लातीनी अनुवादों में जगह जगह 'चरक' का नाम आता है। कोलब्रुक ने लिखा है कि अरबियों ने 'चरक' का 'सरक', 'सुश्रुत' का 'सुस्रुद', 'निदान' का 'बदान', 'अष्टाङ्ग' का 'असङ्कर' बना दिया। आयुर्वेद के विषय में वेबर महोदय लिखते हैं:—

"In surgery, too, the Indians seem to have attained a special proficiency, and in this department European surgeons might, perhaps, even at the present day, still learn something from them, as indeed they have already borrowed from them the operation of rhinoplasty."

"सर्जरी में भारतीयों ने पर्याप्त चातुर्य प्राप्त कर लिया था, और इस में युरुप के सर्जन, आज भी, भारत की सर्जरी से बहुत कुछ सीख सकते हैं, जैसा कि नाक आदि के आपरेशन तथा नई नाक, कान बनाना उन्हों ने भारतीयों से सीखा है।"

श्रीमती मैनिंग लिखती हैं:—"The surgical instruments of the Hindus were sufficiently sharp,

indeed, as to be capable of dividing a hair longitudinally."—"इन के सर्जरी के औज़ार इतने तेज़ होते थे कि उन से बाल को भी लम्बाई के रुख़ काट सकते थे।"

विन्सेन्ट स्मिथ का कथन है कि युरुप में १० वीं शताब्दी में सब से पहला हस्पताल खुला जिस में सर्व-साधारण को दवाई दी जाती थी। इधर चीनी यात्री फ़ाहियान लिखता है कि जिस समय वह भारत आया तो पाटली पुत्र में औषधालय खुले हुए थे जिन में ग़रीब लोग आकर अपना इलाज कराते थे! क्या इसी साक्षी को सामने रख कर मिस मेयो ने चरक-सुश्रुत को 'नीम हकीम' लिखने की धृष्टता की है?

इस अध्याय में मिस मेयो ने महात्मा गान्धी के जेल के ऑपरेशन का ज़िक्र किया है। वह लिखती है:—

"हस्पताल के सर्जन ने कहा:—'गान्धी जी, मुझे आप को यह सूचना देते हुए बड़ा दुःख है कि आप को 'एपेन्डीसाइटिस' रोग हो गया है। आप यदि मेरी दवा करते तो मैं एक दम चीरा दे डालता। शायद आप तो अपने आयुर्वेदिक वैद्यों का इलाज कराना पसन्द करेंगे।'

परन्तु मिस्टर गान्धी के मन में यह ख़याल न दिखाई दिया!

सर्जन ने फिर कहना शुरू किया:—'मैं तो ऑपरेशन न करना ही पसन्द करूँगा क्योंकि यदि मामला बिगड़ गया तो आप के सब मित्र हमें दोषी ठहराएँगे, हालाँ कि हमारा काम आप की निगरानी करना ही है।'

मिस्टर गान्धी ने डाक्टर को मनाने हुए कहा—'यदि आप चीरा देना मान जायँ तो मैं अपने सब मित्रों को बुला कर समझा दूँगा कि यह काम मेरी प्रार्थना पर ही किया गया है?'"

मिस मेयो के इस लेख का महात्मा गाँधी ने प्रतिवाद किया है! उन का कहना है कि ऐसी कोई बातचीत नहीं हुई!!

२० वाँ अध्याय 'मदर-इण्डिया' का अन्तिम अध्याय है। इस में भी चलते-चलते दो चुटकले छोड़े गये हैं:—

"भारत में १६२६ में ५८ लाख साधु थे। सड़कों पर बिलकुल नंगे बदन, राख लगाये, जटाओं को सन की तरह लपेटे, दवाओं से आँखों को लाल किये वे सर्वत्र दिखाई देते हैं!"

बनिये का चित्र खूब खींचा है:—ये लोग नहीं चाहते कि साधारण जनता अक्षर पढ़े। अक्षर पढ़ने से तो गाँव वाले बनिये का लिखा पढ़ लेंगे! फिर वे २००) रु. ले कर ५००) रु. पर अँगूठा क्योंकर लगाने लगे! "बनिये से एक वार कर्ज़ लेने पर फिर कोई उन के चुंगल से निकलता नहीं है, मकड़ी के जाले में मक्खी की तरह देहाती फँसता ही चला जाता है। ब्याज पर चक्र-ब्याज चढ़ता जाता है और कर्ज़ के थोड़े से रुपयों का बोझ तीसरी या चौथी पीढ़ी तक दम नहीं लेने देता!"

काश को हमारे बनिये, छाती पर हाथ रख कर, परमात्म-देव को साक्षी समझ कर, कह सकें कि मिस मेयो ने ये वाक्य झूठ लिखे हैं!!

बस, यहाँ मिस मेयो की पुस्तक समाप्त हो जाती है!

परिशिष्ट

१. अमेरिका में पाप की पराकाष्ठा !

डा० सुधीन्द्र बोस अमेरिका की आयोआ यूनीवर्सिटी में अध्यापक हैं। आप ने २ फ़र्वरी १९२६ के 'मॉडर्न रिव्यू' में अमेरिका की अवस्था का वर्णन करते हुए लिखा है:—

अमेरिका के समाचार-पत्र यह रोना रोया करते हैं कि एशियाई लोग वहाँ अधिक संख्या में जाने लगेंगे तो उन के स्वर्ग का ख़ातमा हो जायगा। उन का कहना है कि एशिया के लोग अमेरिकन सभ्यता के लिये, जो कि कमल-पत्र की तरह शुभ्र तथा निर्मल है, ख़तरे का कारण हैं। 'ख़तरा'—'ख़तरा' चिल्लाने वाले ये सभ्यता के ठेकेदार एशिया के पतन तथा पापों का घृणित चित्र खींच कर अपने देशभाईयों को चेतावनी दिया करते हैं:—'इन एशियाई भूतों से अपने देश को बचाओ!' यह रोग सम्पूर्ण अमेरिका में फैलता चला जा रहा है। परन्तु, 'पतित'-एशियाइयों को देख कर नख-से-शिख तक काँपने के बजाय, अच्छा हो यदि अमेरिका अपने नैतिक पतन पर, आठ-आठ आँसू बहाये। थोड़े दिन हुए, एक अमेरिकन राजनीतिज्ञ ने अमेरिका को, संसार के सब देशों में सब से ज्यादह पाप की तरफ़ झुका हुआ देश कहा था!

पैशाचिक पापों की घृणित कहानियाँ यहाँ रोज़ अख़बारों में छपा करती हैं। एक स्त्री ने अपने पति को विष दे दिया। अब एक बीमा कम्पनी से ३० हज़ार रुपया जो कि उन के नाम पर बीमा कराया गया था वसूल करने में लगी है। बीमा इस शर्त पर था कि यदि पति शान्ति-पूर्वक बिस्तर पर मरेगा तो उस की स्त्री को १५ हज़ार रु० मिलेगा, यदि बल-प्रयोग से मारा जायगा तो स्त्री को ३० हज़ार मिलेगा। जूरियों की राय में मृत्यु में बल-प्रयोग हुआ था!

आयोवा रियासत में एक माता ने अपने १५ दिन के बच्चे के गले तथा हाथ की कलाई को उस्तरे से इस लिये काट डाला क्योंकि वह चिल्लाता बहुत था और उसे दिक करता था !

मैसाचुसेट्स के मैदान में एक सार्वजनिक सभा हो रही थी। कुछ नागरिकों ने सभा भङ्ग करना चाहा। भयंकर युद्ध छिड़ गया, सैंकड़ों ने हिस्सा लिया। ईंट, पत्थर, अण्डे—जो कुछ हाथ आया चलाया गया। पुलिस के नाक में भी दम कर दिया। थानेदार को पिस्तौल, हथकड़ी, सब छीन लिया। पुलिस की छाती पर बन्दूकें रख कर यह काण्ड हुआ !

शिकागो के दो उच्च-कक्षा के विद्यार्थी, जो धनी घरानों के थे, दिल में यह सोच कर चल दिये कि कोई महाघोर पाप करें ! एक छोटे बच्चे को फुसला कर उन्हों ने अपनी मोटर में बिठा लिया, हथौड़ी से उस का सिर फोड़ डाला, भेजा निकाल दिया और एक नाली में लाश फेंक कर चम्पत हुए !

ओहियो में एक महिला ने अपने ६ हफ़्ते के बच्चे को टब में पानी भर कर अन्दर डाल दिया, नीचे से आग जला दी। कई घण्टों के बाद उस के पति ने देखा कि बच्चा उबल कर मर चुका था !

दक्षिणी डेकोटा के एक बैंक में दो स्त्रियाँ मोटर पर चढ़ कर पहुंचीं। एक ने खज़ानची की छाती पर पिस्तौल तानी ; दूसरी ने रुपये बटोरे। बुढ़िया ने कहाः—'हिले नहीं, और गये नहीं ; मुझे जान से मारना पसन्द नहीं, पर तुम हिले तो देखना !' बैंक का सफ़ाया कर दोनों स्त्री-डाकू मोटर में सवार हुए और चल दिये।

न्यूयार्क के एक आदमी ने एक स्त्री का सिर हथौड़े से इसलिये फोड़ दिया क्योंकि वह बेचारी अपने पति को छोड़ कर इस के साथ नहीं आती थी ! उस ने उसे मूर्छितावस्था में घसीट कर तहख़ाने की भट्टी में ला फेंका।

भट्टी का दर्वाज़ा बन्द कर कुदाणा साथ खड़ा कर दिया ताकि दर्वाज़ा खुल न जाय। वह दैवी चीत्कार करती हुई आग में भुन गई, राख हो गई। ऐसे क्रूर कर्म जिस देश में हो सकते हों वह दूसरों को उपदेश देने का दम भरे!

ये घटनाएँ रोमाञ्चकारी है! ये बतलाती हैं कि हवा का रुख़ किधर है! अमेरिकन लोग अपनी सभ्यता के गीत गाते-गाते नहीं थकते, परन्तु उन्हीं के देश में संसार के पापों की पराकाष्ठा पहुंच चुकी है। न्यूयार्क के जज अलफ्रेड टेली महोदय ने कहा था, इस देश पर पाप का भूत सवार हो गया है, तभी यह संसार के सभी देशों से ज्यादह शासन-हीन (Lawless) है! इंग्लैण्ड, फ्रान्स, इटली, जापान—संसार के किसी भी देश में इतना पाप, इतना दुराचार नहीं होता जितना, जन-संख्या की दृष्टि से, इस देश में! चोर, डाकू, लुटेरे जगह-जगह हैं। इस देश में बन्दूक इतनी प्रचलित है जितनी तम्बाकू की पाइप या घरों में स्त्रियों के मुख पर लगाने का पाउडर। अमेरिकन लोग पिस्तौल लेकर निकलते हैं ताकि कहीं रास्ते में कोई लुटेरा उन की छाती पर न चढ़ बैठे। अमेरिका में शिकागो सब से बड़ा शहर है—इस की संसार के बड़े बड़े शहरों में दूसरी संख्या है। इस शहर में, हत्याओं की संख्या रोज़ाना एक से कुछ ज्यादह ही है। १९२५ में, साल में, केवल एक न्यूयार्क शहर में ३४७ हत्याएँ हुईं; १९२४ में २७०! ईसाइयत के इस युग में शिकागो पाप की राजधानी बना हुआ है!

अमेरिका में पिछले २५ साल से पाप की लहर नहीं, पाप का तूफ़ान उमड़ रहा है। डा० फ्रेडरिक हाफ़मेन के कथनानुसार, जो इस विषय के पण्डित हैं, पिछले २४ साल में हत्याओं की संख्या दुगुनी हो गई है। १९१४ के महायुद्ध में ४० हज़ार अमेरिकन मरे, परन्तु युद्ध के बाद से १९२५ तक अमेरिका में जो हत्याएँ हुईं उन की ही संख्या ४० हज़ार से कहीं ज्यादह है। अमेरिका में ११ हज़ार पैशाचिक वध प्रतिवर्ष होते हैं। पिछले १५ सालों

में यहाँ हत्या की चाल प्रति-सहस्र १०० या ८० रही है, जब कि जापान, ग्रेट ब्रिटन, आयर्लैण्ड, हॉलैण्ड, स्विटज़रलैण्ड और नारवे में हत्याओं की सँख्या ३ से ९ प्रति-लाख रही है ! डा० हाफ़मैन का कथन है कि अमेरिका में वह समय आ गया है जब कोई भी, कहीं-भी, कभी, सुरक्षित नहीं ! हत्याएँ पैशाचिक क्रूरता से की जाती हैं, उन में सारी अक्ल ख़र्च कर दी जाती है, देश के शासक इन्हें रोक नहीं सकते ! अमेरिका की सभ्यता की उन्नति पर यह क्या ही अच्छी टीका है !!

एसोशियेटेड प्रेस की हाल ही की रिपोर्ट से ज्ञात होता है कि केवल मोटर से अमेरिका में प्रतिदिन, प्रतिघंटा, दो से ज़्यादह जानें जाती हैं। १९२३ की रिपोर्ट से मालूम होता है कि अमेरिका में, १ लाख में, १४.८ की मृत्यु मोटर-दुर्घटना से हुई, जहाँ कि इङ्गलैण्ड तथा वेल्स में ५.३, स्कौटलैण्ड में ४.३, न्यूज़ीलैण्ड में ४.६ और कैनेडा में ३.६ हुई। १९२४ की रिपोर्ट से ज्ञात होता है कि अमेरिका के १५८ शहरों में १ लाख में १९.४ की मोटरों से मृत्यु हुई—अर्थात् इस साल मोटरों से ही १७,४०० की मृत्यु हुई। मोटर को तेज़ चलाने में जो मज़ा आता है वह भला अपने जैसे इन्सान की ज़िन्दगी की परवाह करने पर कहाँ मिल सकता है ? केवल न्यूयार्क में ही प्रति वर्ष ३०० बच्चे मोटरों के नीचे रुँध जाते हैं, शिकागो में २५०,—इन दो शहरों में ही ५५० बच्चे प्रतिवर्ष मोटरों के नीचे कुचले जाते हैं। इस हिसाब से अमेरिका में ७००० बच्चे मोटरों की दुर्घटनाओं का शिकार बनते होंगे ! 'नेशन' पत्र का सम्वाददाता लिखता है कि यदि टर्क लोग प्रतिवर्ष ७००० ईसाई बच्चों को इस प्रकार कत्ल कर दिया करें तो भी क्या हमारा खून इसी प्रकार ठण्डा पड़ा रहे ?

अमेरिका में चोरी, डाके से सम्पत्ति का जो नुकसान होता है वह भी साधारण नहीं है। लड़के-लड़कियाँ रिवाल्वर लेकर गाड़ियों को खड़ा

कर लेती हैं। गाड़ी को लूटना इतना बढ़ गया है कि पिछले दो सालों से पोस्ट आफ़िसों ने रजिस्टर्ड-मेल को रात की गाड़ी से भेजना ही बन्द कर दिया है। दिन को भी स्टेशन पर डाक पहुंचाने वाली गाड़ियों पर बन्दूकों का पहरा रहता है। पिछले अक्तूबर से बोस्टन का बड़ा पोस्ट आफ़िस और उस शहर के छोटे-छोटे ८३ आफ़िस किले के ढँग पर बनाए गये हैं, जिन पर कड़ा पहरा रहता है। पोस्ट आफ़िस की रसीदों को लोहे की गाड़ियों में ले जाया जाता है जिन के साथ चार चार बन्दूकची जाते हैं। खुली हुई बारी पर काम करने वाले डाकख़ाने के प्रत्येक क्लर्क के पास पिस्तौल रहती है—यह बोस्टन का हाल है!

१९२५ में सिर्फ़ शिकागो तथा न्यूयार्क दो शहरों में ही ब्रिटिश कनाडा की अपेक्षा ६ गुना आदमी लुटे थे। विलियम बर्न्स का कथन है कि रेल आदि की चोरी प्रति वर्ष ३० करोड़ से कुछ ज़्यादह होती है। 'अमेरिकन बैंकर्स एसोसियेशन' के हिसाब से उन्हीं के अपने आदमियों में से ४५५ चोर थे जिन के कारण उन्हें ३, ६७३, ४६७ रु० का घाटा उठाना पड़ा। इस का यह अभिप्राय है कि वर्ष के हरेक दिन बैङ्क के आदमियों में से ही एक से ज़्यादह चोर पकड़े जाते हैं; दूसरे आदमी जो बैंक को धोखा दे जाते हैं उन की गिनती ही नहीं। क्या यही अमेरिका है? क्या लुटेरापन अमेरिका के जातीय स्वभाव का अङ्ग बन गया है?

अमेरिका के एक प्रसिद्ध पत्र 'बिज़िनेस' में एडवर्ड एच. स्मिथ महोदय लिखते हैं कि अमेरिका में ३० अरब रुपया प्रतिवर्ष चोरी, डाका, धोखा, दिवाला आदि में जाति को खोना पड़ता है। यह सँख्या १९२३ के अमेरिका के जातीय-बजट से तिगुनी है, उस वर्ष की जाति की साधारण आमदनी से अढ़ाई गुनी है, आर्मी तथा नेवी के वार्षिक ख़र्च से १२ गुनी है। यदि सारे देश की आमदनी ६०-७० खर्ब समझी जाय तो उस का ६ टा या

७ वाँ हिस्सा है। अमेरिका में 'बोर्ड ऑफ ट्रेड' के नाम से साल में ६ अरब रुपया ठगा जाता है; साढ़े ३७ करोड़ गबन होता है; १ अरब साढ़े सत्तावन करोड़ सेंध लगा कर, ३० करोड़ जाली दस्तख़तों से; १ अरब २० करोड़ झूठे दिवाले निकाल कर; ४५ करोड़ वसूल न होने वाले रुपये के तौर पर; ३० करोड़ जाली हुण्डियों से; ६० करोड़ सरकारी चोरी से जाति का रुपया सीधा चला जाता है। इस अनर्थ को रोकने के लिये पुलिस आदि का ख़र्च ३ अरब प्रतिवर्ष है। इस के साथ ही कोर्ट, जेल, पागलख़ाने आदि का ख़र्च भी जोड़ना चाहिये। पाप के पारखियों का विचार है कि अमेरिका में एक से डेढ़ प्रति शतक तक जाति में अपराधी लोग हैं। अमेरिका में २ लाख आदमी जेलखानों में हैं। ये दो लाख, असली अपराधियों का ५ वाँ हिस्सा हैं। कुल १० लाख के लगभग हुए! ये सब लोग मिल कर जाति का जितना रुपया नष्ट करते हैं उसी का हिसाब ३० अरब कूता गया है।

कई पाषाण-हृदय अमेरिकन, नीग्रो लोगों को जीते-जी जला देते हैं, इसे लिञ्चिङ्ग (Lynching) कहते हैं। १९१९ से ३० साल पहले तक, जीवित-दाह की सँख्या १०७ नीग्रो प्रति वर्ष रही है। १९२० से १९२४ तक, पिछले ५ साल में २३४ नीग्रो को जीते-जी जलाया गया है। चार रियासतों को छोड़ कर अमेरिकन 'राष्ट्र-सँघ' में पिछले ४० वर्षों से हरेक रियासत में यह घृणित कार्य होता है! मानव-शरीर को अग्निसात् करने के साथ २ अन्य पाशविक अत्याचार भी किये जाते हैं। चेटनूगा शहर के 'डेली टाइम्स' (१३ फ़र्वरी, १९१८) में से जीवित-दाह का निम्न वर्णन कितना दिल दहला देने वाला है:—

"जिम मैकलहार्न नीग्रो को लबादा-पहने-हुए (Masked Men) लोगों ने सता कर जला दिया। हज़ारों स्त्री-पुरुष-बच्चे दृश्य देख रहे थे। नीग्रो का ख़ून पीने की आवाज़ें आस्मान को फाड़ रही थीं। वह रोजर्स का

घातक था। टाईजर्स को उस नीग्रो ने घायल किया था। वे दोनों श्वेताङ्ग थे। उसे १२ 'मुँह-ढपे-हुए-आदमियों' ने सता कर जलाया और २००० के लगभग स्त्री-पुरुष-बच्चों ने तमाशा देखा। नीग्रो को पकड़ कर ये लोग स्टेशन से २ फर्लाङ्ग की दूरी पर ले गये, वहाँ उसे जलाने के लिये अग्नि प्रदीप्त की गई। नीग्रो को एक वृक्ष से बान्ध दिया गया। उस के पास एक आग की ढेरी तैयार की गई, उस में लोहे की शलाका गर्म होने के लिये डाल दी गई। जब वह लाल हो गई तो जनता में से एक आदमी ने उसे उठा कर नीग्रो के शरीर में घुसेड़ दिया। वह नीग्रो डर से पागल हो गया, उस ने शलाका को हाथ से पकड़ा पर वह हाथों को पार कर गई! वायु-मण्डल में जलते हुए माँस की दुर्गन्ध भर गई। नीग्रो का दिल टूट गया। वह चीख़ पर चीख़ मार कर आस्मान को फाड़ने लगा। लोहे की लाल शलाका उस के शरीर के भिन्न भिन्न भागों पर लगाई जाती थी और उस का क्रन्दन शहर में सुनाई दे रहा था। कई मिन्टों तक यह काण्ड करने के बाद एक ने उस के कपड़ों पर तेल डाल दिया; आग लगा दी। आग की लपटों में काला आदमी जलने लगा। उस ने चिंघाड़-चिंघाड़ कर कहा कि उसे गोली से मार दिया जाय, परन्तु उस पर चारों तरफ़ से तिरस्कार पूर्ण अट्टहास ही सुनाई दिया। क्रुद्ध ज्वालाओं ने उस के कपड़ों को भस्म कर दिया और उस के चेतना-रहित होने के पूर्व ही उस के सिर के बालों को जलाती हुई अग्नि-शिखायें नीली नीली दिखाई देने लगीं।"

इस प्रकार का हत्याकाण्ड करने वालों का अमेरिका में एक संगठित दल है, जिसे 'कू-क्लक्स-क्लैन'—Ku Klux Klan—कहा जाता है। इस संस्था के लोग एक प्रकार का सफ़ेद लबादा पहनते हैं। इन का उद्देश्य श्वेताङ्ग जाति के प्रभुत्व को, आतङ्क द्वारा, कायम रखना है। इस संस्था के सदस्य, स्त्री-पुरुषों को चुरा ले जाते हैं, अलग ले जा कर उन्हें पीटते

हैं, उन के शरीर पर कोलटार मलते हैं, उन्हें गोली से मार डालते तथा फाँसी पर लटका देते हैं। इस गुप्त-संस्था को १८६६ में कुछ युवकों ने जारी किया था। कुछ देर शान्त रहने के बाद १९१५ में कर्नल विलियम जोन्स साइमन ने इस संस्था को जागृत किया। पिछले दिनों समाचार पत्रों से ज्ञात हुआ कि इन की अभिनेत्री एक महिला है, जिस का नाम इलिज़ेबेथ टाइलर है। यह इस संस्था को 'महारानी' कहाती है। इस की अध्यक्षता में ही सब क्रूर कर्म होते हैं। संस्था में अमेरिका के ऊँचे-से-ऊँचे पदाधिकारी चुप-चुप शामिल हैं। ५ लाख के लगभग इन के सदस्य हैं जिन में डेढ़ लाख के करीब स्त्रियाँ हैं।

आतङ्क तथा उच्छृङ्खलता का ऐसा राज्य उस देश में दिखाई दे रहा है जो ईसाइयत की उच्च सभ्यता के अभिमान से सिर ऊँचा करने का साहस करता है; जहाँ की मिस मेयो है!

२. सभ्य-संसार में 'अछूत'!

इस में संदेह नहीं कि अपने भाइयों को ही 'अछूत' कहने वाले संसार में इकले हमीं हैं। इस का प्रायश्चित्त हमें भोगना पड़ रहा है, और जब तक इस कलङ्क को हम दूर नहीं कर लेते तब तक, ईश्वरीय-न्याय में हम दण्ड भोगते रहेंगे। परन्तु मनुष्य को 'अछूत' समझने का पाप सम्पूर्ण श्वेताङ्ग संसार में हो रहा है। गोरी जातियों ने काली जातियों के साथ क्या बर्ताव किया और कर रही है यह संसार के इतिहास में सब से काला पन्ना है। नीग्रो लोगों के साथ अमेरिका में क्या-क्या अत्याचार नहीं होते रहे? श्वेताङ्ग लोग कहते रहे कि नीग्रो में आत्मा नहीं होती, यह चिपाँझी का नज़दीकी रिश्तेदार है! नीग्रो को बेचा जाता रहा, नीलाम किया गया। आज, जब कि इस जाति में बड़े-बड़े डाक्टर, बैरिस्टर, व्यापारी भी हो गये हैं, उन के कई विश्वविद्यालय खुल गये हैं और कई जहाज़ चलते हैं,

अमेरिका के ७२ प्रतिशतक नीग्रो लिख-पढ़ सकते हैं, आज उन के साथ अमेरिका का सभ्य-संसार क्या बर्ताव कर रहा है ? अभी जीवित-दाह का हृदय-बेधी वर्णन दिया जा चुका है ! अमेरिका में इस समय नीग्रो के लिये अलग होटल बने हुए हैं, अलग गाड़ियाँ हैं जिन पर लिखा है, 'केवल नीग्रो के लिये', अलग शिक्षणालय हैं ! जून १९२६ के 'मॉर्डन रिव्यू' में 'The World Tomorrow' में से निम्न उद्धरण दिये गये हैं:—

"हाल ही में 'क्रिश्चियन हेरल्ड' का विज्ञापन देख कर पैलस्टाइन में पादरी का काम करने के लिये एक प्रार्थना-पत्र आया । प्रार्थी को न्यूयार्क बुला लिया गया । उस के वहाँ पहुंचने पर मालूम हुआ कि वह काला आदमी (नीग्रो) है । उसे वापिसी का ख़र्च दे कर लौटा दिया गया ।

एक विज्ञापन छपा—'आवश्यकता है—फैक्ट्री में काम करने वालों की । केवल अनुभवी लोग दरख़ास्त दें । श्वेताङ्ग को २४ डालर ; काले को २० डालर प्रति सप्ताह ।'

दन्त-वैद्यों का एक सम्मेलन होना था । सम्मेलन के कुछ दिन पहले काले दन्त-वैद्यों को उन के हम-पेशा श्वेताङ्ग वैद्यों ने कहला भेजा कि यदि वे सीढ़ियों पर बैठना पसन्द करें तो बड़ी ख़ुशी से सम्मेलन में आ सकते हैं ।

साउथ करोलिना में एक श्वेताङ्ग ने एक मोटर चुरा ली, उसे ३० दिन की क़ैद दी गई ; उसी दिन उसी जज ने एक नीग्रो को साईकिल चुराने के अपराधमें ३ वर्ष का कठोर कारावास दिया !

एक शिक्षित नीग्रो फ्राँस के विश्वव्यापी युद्ध में 'मनुष्यों के अधिकारों' के लिये जान को हथेली पर रख कर लड़ा । लौट कर आने पर वह सिविल सर्विस के इम्तिहान में बैठा । उस के नम्बर ९८.५ प्रतिशतक आये ; सब से पहला रहा । नौकरी के लिये जब वह दफ़्तर में गया तो वहाँ कार्य करने

वाली भी उसे देख कर दाँतों तले जीभ दबाने लगी क्योंकि वह तो काला आदमी निकला! उसे नौकरी नहीं दी गई, एक दूसरा श्वेताङ्ग जो ७५ प्रतिशतक से पास हुआ था भर्ती कर लिया गया!

नीग्रो-कॉलेज की एक नीग्रो-अध्यापिका शहर से बाहर एक रात अपने भाई के यहाँ गई। उस का भाई बड़ा कुशल जमींदार था। उस की रुई की फसल को देख कर गोरे ज़मींदारों की छाती पर साँप लोट गया। वे उस की फ़सल को आग लगाने की सोचने लगे। इसी रात को भाई-बहिन ने घर के बाहर कुछ आवाज़ें सुनीं। भाई बाहर गया। इतने में बहिन को गोली की आवाज़ सुनाई दी। उस ने बाहर जा कर देखा तो उस का भाई मरा पड़ा था। वह अपने भाई के पास खड़ी ही थी कि गोरों में से कुछ ने चिल्ला कर कहा—'इसे भी साफ़ कर चलो!' थानेदार ने आगे बढ़ कर उसे बचा लिया और वह घायल भाई को गाड़ी में रख कर शहर में ले गई।

एक श्वेताङ्ग-लड़की पर आक्रमण करने के अपराध में एक नीग्रो को डेलावेर में फाँसी दी गई। अलाबामा में दो गोरों ने काली-लड़की पर हमला किया—एक-एक को २५० डालर जुर्माना कर के छोड़ दिया गया।

गल्फ़-स्टेट की एक अध्यापिका कॉलेज में पढ़ाती थी। उस ने नीग्रो विद्यार्थियों की कान्फ़रेन्स में भाग लिया, उन के साथ भोजन भी किया। नतीजा यह हुआ कि उसे त्याग-पत्र देना पड़ा। उस ने त्याग-पत्र देते हुए कहा कि कान्फ़रेन्स का इतना मूल्य था कि उस के लिये त्याग-पत्र कुछ चीज़ ही नहीं।"

श्वेताङ्ग लोगों के व्यवहार को देख कर नीग्रो जाति का हृदय विक्षुब्ध है। उन में क्या-क्या उभार आ रहे हैं इस का चित्र एक नीग्रो ने ही खींचा है। इन का नाम है 'बरगार्ड डु बोयस'। 'Dark Water' नामक पुस्तक के "The Soul of White Folk' अध्याय में ये नीग्रो लिखते हैं।—

"मैं अपनी छत पर बैठा मानव-जाति के समुद्र को थपेड़े मारते हुए देख रहा हूं। कई आत्माएँ दिखाई दे रही हैं; वे आती हैं, जाती हैं, घुमरघेरी में चक्कर काटती हैं, परन्तु मेरी टिकटिकी श्वेताङ्ग महाप्रभु की आत्मा पर गड़ी हुई है।

श्वेताङ्गों की आत्माओं का मुझे पर्दा-पर्दा दिखाई दे रहा है। मैं इन आत्माओं का चोला उतार कर, उलट-फेर कर, उन्हें आगे-पीछे से देख रहा हूं। उन के पेट में जो बात छिपी है वह भी मुझे दिखाई दे रही है। मैं उन के एक-एक मनोभाव को पढ़ रहा हूं; उन्हें भी मालूम है कि मुझे उन का सब हाल ज्ञात है—इसीलिये तो वे कभी घबड़ा उठते हैं, कभी क्रोध में उबल पड़ते हैं। वे कह रहे हैं, मुझे जीने का कोई अधिकार नहीं; उन के शब्दों में मैं सृष्टि का कलङ्क हूं! मैं उन पर खीझ खीझ कर रह जाता हूं, मेरी आत्मा में निराशा छा जाती है। वे आगे पीछे मटकते हैं, चिल्लाते हैं, धमकाते हैं, उपदेश देते हैं, सच्चाई को छिपा कर अपनी आत्मा के गन्देपन को छिपाना चाहते हैं, परन्तु मैं उन के सब पर्दों को उतार-उतार कर देख रहा हूं—ओहो, वे संख्या में कितने हैं, और मनुष्य होते हुए भी कितने कुत्सित और पतित हैं!

परमात्मा के दिये सब रँगों में गोरा रँग ही सर्वोत्कृष्ट है, यह विचार हरेक गोरे रँग वाले के मस्तिष्क में अमिट छाप की तरह मुद्रित है! इस के नतीजे अजीब-अजीब दिखाई दे रहे हैं। गोरों में से वे लोग जिन के हृदय में कुछ मिठास है, जब मेरे साथ साधारण विषय पर भी बातचीत कर रहे होते हैं तो उन की भी आवाज़ में मानो ये शब्द गूंजते हैं:—'ओह, बेचारी काली-चीज़! तू आँसू मत बहा, क्रोध में मत जल; मैं खूब जानता हूं कि परमात्मा का कहर तुझ पर पड़ा है। मैं नहीं जानता, क्यों, परन्तु मैं इतना ज़रूर जानता हूं कि यह बात ठीक है! परन्तु देख, हिम्मत मत हार! इस पतितावस्था में ही अपना काम किये जा, और परमात्मा से हाथ जोड़ कर प्रार्थना कर,

क्योंकि वह तो प्रेम का भण्डार है, कि एक दिन वह तुझे भी किसी जन्म में गोरा-रँग बख्शे !' मैं यह सुन कर हँसता नहीं, परन्तु मैं सीधे शब्दों में पूछता हूं :—'गोरेपन में क्या धरा है कि मैं उस के लिये दुआ करूँ ?' यह प्रश्न करते ही, किसी-न-किसी प्रकार, बिना बोले किंतु स्पष्ट, मुझे उत्तर दिया जाता है:—'गोरेपन का मतलब है पृथिवी का सदा—सर्वदा स्वामित्व ! एकाधिकार ! अखण्ड, निरबाध शासन ! आमीन' !!"

साउथ-आफ्रीका में भारतीयों के साथ वहाँ के श्वेताङ्गों का क्या बर्ताव है ? विशप फ़िशर ने इस बर्ताव का वर्णन करते हुए लिखा था:—

"ट्रान्सवाल शहर में बिना लाइसेन्स लिये कोई हिन्दुस्तानी रेल गाड़ी पर भी नहीं चढ़ सकता । यह लाइसेन्स देना एक गोरे आदमी के हाथ में है । उसे यह अधिकार होता है कि जिस हिन्दुस्तानी की दुकान को चाहे शहर के एक हिस्से से उठवा कर दूसरे हिस्से में ले जाने का हुक्म दे दे । वहाँ हिन्दुस्तानी पक्का मकान नहीं बनवा सकते क्योंकि उन्हें जब-कभी जगह छोड़ने को कहा जा सकता है । ट्रान्सवाल के एक गन्दे हिस्से में सब भारतीयों के लिये अलग स्थान कर दिया गया है । उन्हें वहीं रहना होगा, परन्तु वहाँ पर भी उन्हें स्थिर जायदाद बनाने का कोई अधिकार न होगा । यदि कोई वहाँ पर भी पक्का मकान बना लेगा तो उसे दो वर्ष बाद भी जगह छोड़ने पर बाधित किया जा सकता है । प्राचीन रूस में जो हालत यहूदियों की थी वही हालत आज भारतवासियों की ट्रान्सवाल में है । ट्राम गाड़ी में जाते हुए भी इसी प्रकार के अमानुषिक नियम दिखाई देते हैं । सारी ट्राम गाड़ी में केवल तीन हिन्दुस्तानी बैठ सकते हैं । भारत की देवियाँ गोद में बच्चा लिये ट्राम पर चढ़ कर यदि देखें कि उन तीन स्थानों में से कोई ख़ाली नहीं है तो सारी ट्राम के सुन-सान पड़े रहने पर भी वे गाड़ी में बैठ नहीं सकतीं, उन्हें नीचे उतर जाना पड़ता है । सब हिंदुस्तानी 'कुली' कहाते हैं । स्कूलों में पढ़ाई जाने वाली पुस्तकों में

साफ़ साफ़ लिखा है कि हिंदुस्तानी 'कुली' हैं। केम्ब्रिज में पढ़ा हुआ भारतीय जब ट्राम में चढ़ा जा रहा होता है तो निरक्षर, मूर्ख गोरा उसे 'कुली' कह कर पुकारता है। हिन्दुस्तानी लोग नाटकों में नहीं जा सकते, जिन पुस्तकालयों तथा वाचनालयों के लिये उन्हों ने चन्दा दिया होता है उन में भी प्रविष्ट नहीं हो सकते। होटलों में वे ख़ानसामों की हैसियत में ही जा सकते हैं। जिस होटल में मैं ठहरा हुआ था उस में कुछ हिंदुस्तानी मुझे मिलने आये। वे इंगलैण्ड के विश्वविद्यालयों के ग्रेजुएट थे, धनी थे, वे मोटरें भी रखते थे, परन्तु वे मुझे मिलने होटल के अन्दर न आ सकते थे, उन्हें मिलने के लिए मुझे होटल के बाहर जाना पड़ा। आफ्रीका के गोरे साफ़ शब्दों में कहते हैं कि हिंदुस्तानी हम सब से दिमाग़ में बढ़ कर हैं, आचार में ऊँचे हैं; परन्तु इन बातों के होते हुए भी आफ्रीका में हिंदुस्तानी अछूत बने हुए हैं।"

३. 'सभ्यता' या 'दुराचार'?

कहा जाता है कि अमेरिका ने शराब का सर्वथा बहिष्कार कर के सभ्य संसार के सन्मुख आदर्श स्थापित किया है। परन्तु अमेरिका में शराब का कानूनन निषेध होने पर भी १९२४ में ३८॥ प्रति शतक अमेरिका शराब में गोते लगा रहा था। २३ फ़र्वरी १९२४ के 'लिटररी डाइजेस्ट' से ज्ञात होता है कि शराब को देश में आने से रोकने के लिये ४००० सरकारी कर्मचारी थे परन्तु ४३ पर रिश्वत लेकर शराब लाने देने का दोष लगाया गया, जिन में से २३ पर दोष सिद्ध भी हो गया। 'प्रोहिबिशन कमिश्नर' मि० हेनीज़ का कथन था कि यह संख्या साधारण है, परन्तु इस पर मि० फ़ौक ने कहा, यदि ४३ पर रिश्वत लेकर शराब लाने देने का दोष लगा है तो कितने ही अफ़सर ऐसे होंगे जो अपनी चालाकी से पकड़ में नहीं आते होंगे। उन की संख्या, पकड़े जाने वालों की संख्या से, अवश्य अधिक होगी। श्रीमती मेबल वाकर विलब्रेण्ड ने इस सम्बन्ध में जो जाँच की

उस के अनुसार तिहाई से ज्यादह अमेरिका अभी शराब में डूबा हुआ है। कैलीफ़ोर्निया में कई स्थानों पर ८५ प्रतिशतक; ओरेगन, वाशिंगटन, मौन्टाना, नौर्थ डैकोटा, मिनेसोटा, और मिचिगन में ५० प्रतिशतक; ज्योर्जिया में ९० प्रति शतक; फ्लोरिडा में ७५ प्रति शतक; लूसियाना में ९० प्र० श०; न्यूयार्क में ९५ प्र० श० शराब 'बहिष्कार' के बाद भी चल रहो है! न्यूयार्क से ५ दिसम्बर १९२७ का तार अभी समाचार पत्रों में छपा है कि शराब न पीने के कानून का भँग करने के अपराध में ८४ लाख पौण्ड जुर्माने के तौर से वसूल हुआ है। जब से शराब पीना बन्द हुआ है तब से २, २२३,००० आदमियों को इस अपराध में पकड़े जाने के कारण दण्ड मिला है। क्या इसी का नाम शराब का बहिष्कार है? क्या यही अमेरिका की विशाल सभ्यता है?

न्यूयार्क के 'हेरॉल्ड ट्रिब्यून' में १९२४ में रिचमण्ड पीयरसन हौब्सन महोदय लिखते हैं कि सारे पश्चिमी योरुप में इतनी हत्याएँ नहीं होतीं जितनी अमेरिका के केवल एक शहर में! कारण क्या है? उन का कथन है कि पिछले १० साल से अमेरिका में हीरोयन (Heroin) नामक नशे का, जो अफ़ीम से बनता है, प्रचार दिनों दिन बढ़ रहा है, इसीलिये निकृष्टतम पापों की संख्या भी अमेरिका में बढ़ती चली जा रही है। इस नशे का औषध रूप से ही कानूनन उपयोग हो सकता है परन्तु न्यूयार्क में ७६,००० औंस हीरोयन खर्च हुई जिस में केवल ५२ औंस डाक्टरों ने ख़र्च की थी, बाकी नशे-ख़ोरों ने! अमेरिका में १० लाख युवक जिन की आयु २३ वर्ष से कम है इस का इस्तेमाल चोरी-चोरी कर रहे हैं।

नवम्बर १९२७ के 'मौडर्न रिव्यू' में इसी न्यूयार्क 'हेरल्ड ट्रिब्यून' में से निम्न उद्धरण लिया गया है:—"When over 1200 young people between the ages of 15 and 24 take their own lives in one year (in America); when with the present rate of statistics,

every marriage will end in divorce in eleven years; when 80 per cent of all crimes are committed by children under eighteen; when 42 per cent of unmarried mothers are school girls under sixteen, is it not time to ring the changes on self-denial instead of self-expression"

"जब अमेरिका में १५ से २४ वर्ष की आयु के १२०० युवक एक साल में आत्मघात कर रहे हैं; जब वर्तमान गणना के आधार पर विचार करने से ११ साल में प्रत्येक विवाह का तलाक़ हो जायगा; जब सब तरह के पापों का ८० प्रति शतक हिस्सा १८ वर्ष से कम आयु के युवक कर रहे हैं; जब अविवाहिता कुमारियों में से, जो माता बन जाती हैं उन में से, ४२ प्रति शतक संख्या १६ वर्ष से कम आयु की, स्कूल जाने वाली लड़कियों की है, तब क्या यह उचित प्रतीत नहीं होता कि अमेरिका अपने विकास की जगह अपने को मिटाने की फ़िक्र करे?"

'इंग्लैण्ड के सदाचार' के सम्बन्ध में 'नाइन्टीन्थ सेन्चुरी' में से कार्तिक मास की 'सुधा' में निम्न उद्धरण किया गया है जो 'सभ्यता' का राग आलापने वाले देशों की सभ्यता पर काफ़ी टीका है!

सन्	कुल कितने बच्चे पैदा हुए?	वैध सहवास से कितने?	अवैध सहवास से कितने?
१९१४	८,७९,०९६	८,४१,७६७	३७,३२९
१९१५	८,१४,६२४	७,७८,३६९	५४,२६३
१९१६	७,८५,५२०	७,४७,८३१	३७,६८९
१९१७	६,६८,३४६	६,३१,३३६	३७,०१०
१९१८	६,६२,६६१	६,२१,२०९	४१,४५२
१९१९	६,९२,४३८	६,५०,५६२	४१,८७६

यह है इंग्लैण्ड का बढ़ता हुआ व्यभिचार!

नवम्बर मास की 'मनोरमा' में 'गुजराती' से निम्न उद्धरण लिया गया है जो युरोपियन देशों के नैतिक पतन का नक्शा चित्र आँखों के सम्मुख खींच कर रख देता है:—

"सुधार के पथ पर अग्रसर कहलाने वाले योरप और अमेरिका के सभ्य प्रदेशों में, 'जेंटिलमैनी' ढङ्ग से व्यभिचार वृद्धि के साथ वेश्याओं की संख्या भी बेतरह बढ़ती जा रही है; यहाँ तक कि अब तो इस ने एक खासे व्यापार का रूप ही धारण कर लिया है। अर्थात्, इस बीसवीं शताब्दी की अन्य कई विशेषताओं में गोरी औरतों और लड़कियों का वेश्या बन कर व्यापार की वस्तु हो जाना एक खास बात है। समस्त बड़े-बड़े राष्ट्रों के सहयोग से निर्मित 'राष्ट्र-संघ' के सम्मुख जब इस गन्दगी का नाम शेष करने के लिये एक स्वर से अपील की गयी, तब उस ने एक कमीशन बिठा कर इस विषय की जाँच करायी। फलतः, कितनी ही गवाहियों तथा अन्य साधनों द्वारा जो विवरण प्राप्त हुए, वह सहसा चौंका देने वाले हैं। उसी महासागर में केवल ऊपर तैरते दिखाई देने वाले कुछ अंश ये हैं जो राष्ट्रसंघ के सम्मुख उपस्थित की हुई 'गोरी लड़कियों के व्यापार' की रिपोर्ट से लिये गये हैं:—

फ्रान्स का वेश्या चकला—योरोप में वेश्याओं का व्यापार बड़े ही धूम-धड़ल्ले के साथ जारी है और बड़े-बड़े लखपती एवं कोट्याधीश धनिक इस काम में जी-जान से लगे हुए हैं। इस व्यापार में उन की लगभग तीन करोड़ की पूञ्जी लगी हुई है। अकेले पेरिस (फ्रान्स की राजधानी) में ही १७००० मकान वेश्याओं के रहने के लिये बाकायदा परवाना देकर सुरक्षित रखे गये हैं। ऐसे प्रत्येक घर में कम-से-कम ३० जवान लड़कियाँ रखी जाती हैं। इस हिसाब से पेरिस में केवल लाइसेन्स-होल्डर वेश्याओं की संख्या ५१०००० (पाँच लाख दस हज़ार) है, तब गुप्त व्यभिचार करने वाली स्त्रियों का तो हिसाब ही क्या? इसी प्रकार ब्रसेल्स एक छोटा सा नगर है, किन्तु वहाँ भी वेश्याओं के लिये ७००० मकान सुरक्षित रखे गये हैं।

सम्पूर्ण फ्रान्स देश में इस प्रकार के ७॥ लाख मकानों का लेखा तो सरकारी दफ़्तरों में मौजूद है। इस के अतिरिक्त गुप्त व्यभिचारियों की सँख्या कितनी होगी यह अनुमान से ही जानी जा सकती है। इतने पर भी तारीफ़ यह कि उक्त वेश्याओं को सरकार की ओर से डाक्टरी प्रमाण-पत्र भी लाइसेन्स के साथ दिये जाते हैं।

अमेरिका में—दक्षिण अमेरिका में भी यह व्यापार कम नहीं है। वहाँ के अकेले बुएनों-पेरिस नाम के शहर में वेश्याओं के लिये २० हज़ार घर सुरक्षित हैं। अर्थात् वहाँ भी ५-६ लाख लड़कियाँ इस धन्दे में लगी हुई हैं। इसी प्रकार डिजेनेरा, मोण्टे विडियो, मेक्सिको सिटी और पनामा जैसे शहरों में भी इस व्यवसाय का बाज़ार गर्म है।

मूल सँचालक पेरिस—किन्तु इन सब गोरी वेश्याओं तथा युवतियों के व्यापार का प्रधान केन्द्र पेरिस ही है। और वहाँ यह काम व्यवस्थित एवं विज्ञानसिद्ध पद्धति पर चलाया जाता है! इस के लिये स्वतन्त्र आफ़िस खोल कर बड़ी बड़ी तनख़्वाहें पाने वाले अधिकारी भी नियुक्त कर दिये गये हैं। ये आफ़िस वहाँ नाटक-सिनेमा की एजेन्सियों के नाम से प्रसिद्ध हैं और प्रत्येक व्यापारिक फ़र्म की तरह इन एजेन्सियों में मोटर, टेलीफ़ोन आदि व्यवहारोपयोगी साधन भी रखे जाते हैं। प्रत्येक देश की राजधानियों में इस उद्योग की शाखाएँ खोल दी गयी हैं और इस विभाग के अधिकारी लोग आवश्यकतानुसार नयी गोरी लड़कियाँ उन प्रत्येक स्थानों में भेजते रहते हैं।

सन् १९२६ ई० में जर्मनी की राजधानी बर्लिन नगर में इस व्यापार के लिये ७५००० लड़कियाँ एकत्र की गयी थीं, और वे सब, जहाँ-तहाँ से फुसला-फुसला कर लायी गयी थीं। इन लड़कियों का मूल्य शरीर की बनावट और चेहरे के सौंदर्य पर लगाया जाता है; और २० पौंड (३०० रुपये) से लगाकर २०० पौंड (३ हजार रुपये) तक में बेची जाती हैं।"

रूस का हाल युरुप के सब देशों से विचित्र है। ६ अगस्त १९२७ के 'लिटररी डाईजेस्ट' में मालकुस महोदय रूस के विषय में लिखते हैं:—

"यदि स्त्री-पुरुष शादी करना चाहें तो, बस, 'इच्छा' ही कानून के लिये काफ़ी है। वे चाहें तो उसे रजिस्टर में दर्ज करा दें, चाहे न करायें, यह भी 'इच्छा' पर निर्भर है। सोमवार को शादी होती है, मङ्गलवार को तलाक हो जाता है! १९२६ में १००,००० स्त्रियों को उन के पति छोड़ गये; ९०,००० स्त्रियों के बच्चों को 'अपना' स्वीकार करने वाला कोई नहीं मिला; १८,००० स्त्रियों ने अदालत में दरख़ास्त दी कि उन्हें अपने पतियों से बच्चों के भरण-पोषण के लिये ख़र्चा दिलवाया जाय। इस प्रकार २०८,००० स्त्रियों का कुछ ठिकाना नहीं मालूम पड़ता। ये अङ्क सरकारी काग़ज़ों के हैं, और जो संख्या सरकारी काग़ज़ों में आने से रह गई है उस का हिसाब ही नहीं! दो लाख, आठ हज़ार स्त्रियों की सन्तान का भरण-पोषण कौन करेगा? रूस में लावारिस बच्चे, जो इसी प्रकार की सोमवार को शादी और मङ्गल वार के तलाक से पैदा हुए हैं ४० लाख की संख्या में मौजूद हैं!"

सभ्यताभिमानी देशों के मुख पर यह कालख पुती देख कर स्वाभाविकतया प्रश्न होता है, यह 'सभ्यता' है या 'दुराचार'?

४. "श्वेताङ्गों का भार"

ग़रीब-परवर गोरी दुनियाँ को यह तीव्र चिन्ता हर समय व्यथित किये रहती है कि संसार की रङ्गीन (लाल, पीली और काली) जातियों का असभ्यता की दलदल से किस प्रकार उद्धार किया जाय? इस चिन्ता के भार से गोरी जातियों के लिये आराम करना हराम हो गया है। वे हर समय अपने को इस भार से दबा हुआ अनुभव करते हैं; अपनी इस तीव्र चिन्ता को वे लोग—"Whiteman's Burden"—इस नाम से पुकारते हैं। रङ्गीन जातियों को सभ्यता का स्वर्गीय प्रकाश देने का कार्य युरुप की भिन्न-भिन्न जातियों ने आपस में बाँट रखा है। यहाँ तक कि युरुप का

नन्हा-सा बच्चा बेलजियम भी जिस की आबादी ३० लाख से अधिक नहीं है, अपने उत्तर-दायित्व को भली प्रकार निभाने का यत्न कर रहा है। काँगो के काले निवासियों को सभ्यता का पाठ पढ़ाने के लिये बेल्जियम के रबर-प्लान्टरों ने काँगो-स्त्रियों के स्तन कटवाए, बच्चों और नौ-जवानों के हाथ-पैर कटवाए, बूढ़ों को कोड़े लगवाए, उन की स्त्रियों का सतीत्व नाश किया, पिताओं के सम्मुख लड़कियों को अपमानित किया। यह सब इस लिये किया गया कि वहाँ के असभ्य निवासी रबर की उत्पत्ति करते हुए मशीन की तरह काम न कर के भूख, प्यास, थकावट आदि की शिकायत करते थे। यह तो अल्पशक्ति बेल्जियम की बात हुई। यहाँ हम, नमूने के तौर पर, डा० छेदीलाल एम.ए., बैरिस्टर, के 'प्रभा' में प्रकाशित कुछ लेखों के आधार पर ३-४ मुख्य-मुख्य गोरी जातियों के शुद्ध निष्कामभाव से रँगीन जातियों की सेवा के लिये किये गये कार्यों का वर्णन करेंगे।

मिश्र—क्या हुआ यदि एक समय मिश्र (ईजिप्ट) सँसार के सभ्यतम देशों में था। उस ज़माने को तो अब ५ हज़ार साल बीत गये। वहाँ के उन्नत-मस्तक-पिरैमिड और हज़ारों सालों तक सुरक्षित पड़ी रहने वाली लाशें मिश्री लोगों के रङ्गीन होने के भारी पाप का तो प्रतिकार नहीं करतीं! अतएव युरुप निवासी मिश्र को सभ्यता की शिक्षा देने को व्यग्र हो उठे। १९ वीं सदी में, ज़रूरत पड़ने पर, जब वहाँ के राजा इस्माइल ने युरोपियन साहूकारों से ८ करोड़ १० लाख रुपये उधार लिये तब उन्हों ने उस से बेईमानी कर के १४ करोड़ ४० लाख की रसीद लिखा ली। इस के बाद, राजा के वैय्यक्तिक कर्ज़ को सारे देश पर लाद कर मिश्र को अपने चुङ्गल में फँसा लिया गया। इस्माइल के बाद १८८० में जब ख़दीव राजा बना तो प्रजा का असन्तोष देख कर उस ने शासन में सुधार करने का निश्चय किया। परन्तु, इन सुधारों से गोरे लोग मिश्रियों को सभ्यता का पाठ न पढ़ा सकते थे अतः राजा को बहकाया गया। राजा से प्रजा पर तीव्र दमन-नीति का

चक्र चलवा कर मिश्र का आर्थिक-प्रबन्ध इंग्लैण्ड और फ्रांस ने अपने हाथ में कर लिया। प्रजा का नेता अराजी-पाशा था, उस पर तथा उस के अनुयायियों पर इन लोगों ने भारी अत्याचार कराये। साथ ही मिश्र के सच्चे समाचारों से संसार को अपरिचित रखने के लिये रूटर तथा हवास कम्पनियों को १२०० पौण्ड (१८ हज़ार रुपया) वार्षिक की रिश्वत दी गई! खदीव जब कभी प्रजा-पक्ष की तरफ़ झुकता था तब उसे सब उपायों से भड़काने का यत्न किया जाता था। इस काम में एडवर्ड कालविन ने बड़ी दक्षता दिखलाई। कालविन अपनी धूर्तता तथा चालबाज़ी के बारे में स्वयं कहता है कि "पूर्वी लोगों को हम से अधिक चालाक समझना लोगों का भ्रम है। यदि कोई अंग्रेज़ चालों से जानकारी रखता हो तो वह अपनी चालाकी से खूब छका सकता है। जब कभी हम से इन का मुक़ाबिला हुआ तो ये लोग धूर्तता और छल में हमारे सामने निरे बच्चे प्रतीत हुए।" उक्त घटना के बाद, श्रम-विभाग के सिद्धान्तानुसार, इंग्लैण्ड ने मिश्र को और फ्रांस ने मोरोक्को को शिक्षित करने का काम संभाल लिया। इंग्लैण्ड अपना उत्तरदायित्व किस मुस्तैदी से निभाता रहा है यह बात निम्न घटना से प्रकट होती है:—'सन् १९०५ में पाँच या छः अंग्रेज़ी फ़ौजी अफ़सर दिनशवाई गाँव में शिकार खेलने गये। वहाँ जा कर वे दो दलों में विभक्त हो कर गाँव के पाले हुए कबूतरों का शिकार करने लगे। गाँव वालों के मना करने पर साहब लोगों ने नाराज़ हो कर बन्दूक से गाँव की एक औरत तथा तीन पुरुष ज़ख़्मी किये। गाँव वालों ने इस उच्छृङ्खलता से क्रुद्ध हो कर इन अफ़सरों को मारा और उन की बन्दूकें छीन लीं। एक अफ़सर छूट कर भागा; मगर तेज़ धूप में भागने से लू लगने के कारण वह मर गया। इस पर पल्टन वाले दूसरे सिपाही गाँव वालों के साथ मनमाना अत्याचार करने लगे।' एक ख़ास अदालत बैठाई गई, जिस ने चार आदमियों को फाँसी और दो गाँव वालों को जन्म भर कालापानी से लेकर ५० बेंत

तक की सज़ा दी।' इस प्रकार इँगलैण्ड को अध्यक्षता में मिश्र को सभ्य बनाने का कार्य बहुत दिनों तक चलता रहा।

ईरान—महात्मा ज़रथुश्त्र, शेख़सादी, हाफ़िज़, फ़िरदौसी तथा उमर ख़य्याम की जन्मभूमि ईरान भी एशियाई अथवा रँगीन होने से वहशी है। उसे सभ्य करने का भार इँगलैण्ड ने उस दिन से अपने ऊपर लिया जिस दिन ईरान नरेश नसीरुद्दीन ने १५ हज़ार पौंड वार्षिक पर टालवक नामक अँग्रेज़ को देश के तम्बाकू का कुल व्यापार सौंप दिया। अपनी भूल मालूम पड़ते ही नसीरुद्दीन ने ठेका वापिस लेना चाहा परन्तु इँगलैण्ड बीच में कूद पड़ा। कहा गया कि ७५ लाख रुपया हर्जाने के तौर पर देकर ही ठेका तोड़ा जा सकता है। कोश में रुपया न होने से 'इम्पीरियल बैंक ऑफ़ पर्शिया' से, जो अँग्रेज़ों का बैंक था, यह रकम शाह को दिलाई गई। इस प्रकार केवल सूद के रूप में ईरान पर ४॥ लाख रुपया सालाना देने का भार बिना कारण डाला गया। अगले शाह मुज़फ्फ़रुद्दीन ने रूस से ३ करोड़ रुपया कर्ज़ लेकर टालवक से पीछा छुड़ाया परन्तु एक नई आफ़त खड़ी कर ली। इस के फलस्वरूप, रूस ने ईरान से कर वसूल करने का कार्य अपने हाथ में लिया। १९०२ में मूर्ख मुज़फ्फ़रुद्दीन ने ३ करोड़ रुपया रूस से फिर उधार लिया। प्रजा में असन्तोष बढ़ने लगा, लोग पार्लियामेण्ट की माँग करने लगे, शाह ने प्रजा की बात मान कर पार्लियामेण्ट खोल दी, परन्तु इस बीच में शाह की मृत्यु हो गई। अगला शाह पार्लियामेन्ट के विरुद्ध था, जनता में असन्तोष बढ़ने लगा। इधर १९०७ में रूस तथा इँगलैण्ड ने ईरानियों के बिना जाने ही आपस में यह समझौता कर लिया कि उत्तरी ईरान में इँगलैण्ड रूस के कार्य में हस्ताक्षेप न करे और दक्षिण में इँगलैण्ड जो चाहे सो करे। ईरानी प्रजा में इस समझौते के कारण और भी असन्तोष फैला; पार्लियामेण्ट ने शाह को देश की बात मानने का नोटिस दिया,

इस पर इँग्लैण्ड और रूस दोनों ही शाह की आड़ में पार्लियामेण्ट पर पिल पड़े। पार्लियामेण्ट पर गोलियाँ चलाई गईं, नेता कैद कर लिये गये। इँग्लैण्ड तथा रूस के जँगी जहाज़ ईरान के समुद्र में दिखाई देने लगे। दाल में काला देख कर राष्ट्रीय दल ने तेहरान पर चढ़ाई कर के शाह को उतार कर १९०९ में अहमदशाह को गद्दी पर बैठाया। देश का शासन पार्लियामेण्ट द्वारा चलने लगा। नया प्रबन्ध होने के कारण धन की आवश्यकता थी, परन्तु इँग्लैण्ड और रूस युरोपियन महाजनों से रुपया दिलवाने में रोड़ा अटकाते थे। अन्त में अमेरिका ने आर्थिक सहायता दी। ईरानी प्रजा-तन्त्र का काम सँभलता देख कर रूस ने पदच्युत शाह का पक्ष लेकर पार्लियामेण्ट से शाह की वैय्यक्तिक सम्पत्ति पर अधिकार माँगा और 'अल्टीमेटम' दे दिया! ईरान के कुलीन घरानों की ३०० महिलाओं ने पार्लियामेण्ट के अधिवेशन में जाकर प्रधान से ईरान का गौरव बचाने का वीरतापूर्ण अनुरोध किया। इन वीर देवियों ने यहाँ तक कहा कि यदि पार्लियामेण्ट देश के मान की रक्षा में कुछ भी कसर छोड़ेगी तो हम सब अपने हाथों से पुत्र, पति तथा पिता को मार कर स्वयँ भी मर जायँगी। परिणाम यह हुआ कि रूस ने तेहरान पर चढ़ाई कर दी और प्रतिष्ठित नेताओं के टुकड़े टुकड़े कर उन्हें सड़कों पर लटकाया गया, स्त्रियों तथा बच्चों को कत्ल किया गया। बाधित होकर ईरान को रूस के सन्मुख अस्त्र रख देने पड़े। पिछले दिनों रूस में बोलशविक सरकार स्थापित हो जाने के कारण रूस ने ईरान से अपना हाथ खींच लिया और इँग्लैण्ड को मनमानी करने का अवसर प्राप्त हुआ। तब इँग्लैण्ड और ईरान में एक समझौता हुआ जिस के अनुसार ईरान फ़ौजी तथा आर्थिक मामलों में इँग्लैण्ड को छोड़ कर और किसी देश से सहायता नहीं ले सकता!!—भला कोई पूछे तो, 'क्यों'?

चीन—यद्यपि वर्तमान वैज्ञानिक युग का प्रारम्भ चीन से हुवा है, क्योंकि चीनी लोगों ने ही छापे-खाने और बारूद का आविष्कार किया

है, तथापि रङ्गीन होने के कारण उसे श्वेताङ्गों से सभ्यता की शिक्षा लेनी ही होगी। आज चीनियों को अफ़ीमची कह कर उन की दिल्लगी उड़ायी जाती है परन्तु १८ वीं सदी के अन्त में स्वयं मि० एस० ऐंड्रीज़ के कथनानुसार, अँग्रेज़ व्यापारी समुद्री डाकुओं के साधन व्यवहार में लाकर धोके और बेईमानी से चीनी लोगों में इस ज़हर का प्रचार करते रहे हैं। उन की इन कारस्तानियों का नतीजा यह हुआ कि १८२९ में जहाँ चीन में केवल २०० पेटी अफ़ीम की बिक्री हुई थी वहाँ १८३५ में १७००० पेटी अफ़ीम बेची गई। चीन सरकार ने अँग्रेज़ों से अफ़ीम का व्यापार रोकने की प्रार्थना की परन्तु उस का कोई परिणाम न निकलने पर चीन सरकार ने चीन में अफ़ीम का प्रवेश कानून बना कर बन्द कर दिया। इस पर भी कुछ सभ्यताभिमानी अँग्रेज़ छिपे तौर से चीनियों में इस विष का प्रचार करने लगे, विवश होकर चीन सरकार ने उन्हें दण्ड दिया। तब कानून और व्यवस्था (Law and order) को रात-दिन, दोहाई देने वालों ने ही १८४० में अपनी बर्बर और राक्षसी सभ्यता की दोहाई देकर चीनी शहरों पर गोलाबारी शुरु कर दी। बेचारा चीन कमज़ोर था, यही उस की असभ्यता थी; और ये लोग ताकतवर थे, यही इन की सभ्यता थी। विवश होकर चीन को हार माननी पड़ी। लेने के देने पड़ गये। इन्हों ने उसे खुले हाथों लूटा। हाँग-काँग चीन से छीन लिया गया, युद्ध का ख़र्च चीन पर ही डाला गया और घाव पर नमक यह कि अफ़ीम का व्यापार खुले आम जारी कर दिया गया! सँसार में सचमुच कमज़ोर होना ही सब से बड़ी असभ्यता है! इस का परिणाम यह हुवा कि चीनी लोग इन आततायियों से घृणा करने लगे। उन्हों ने शान्टुङ्ग के पादरी को मार डाला। कारण यह था कि उस ने उन्हीं के मन्दिर में जाकर उन के धर्म की घोर निन्दा की थी। १८९९ में अँग्रेज़ों के विरुद्ध चीन में कई स्थानों पर विद्रोह हो गया। इस का परिणाम यह हुआ कि यूरोप के समस्त डाकुओं ने एक होकर ग़रीब चीन पर चढ़ाई कर दी! इन सभ्य कहलाये जाने वाले लोगों ने जो बर्बरता

चीन में की उस का उदाहरण इतिहास में मिलना कठिन है। "चीन के मन्दिरों में घोड़े बांधे गये। चीन की राजधानी पेकिन में एक सप्ताह तक खूब मार-काट रही। सम्पूर्ण नगर से हस्त-लिखित कीमती किताबें गाड़ियों में भर-भर कर लाई जाती थीं और राजमहल के आँगन में उन का ढेर लगा कर उसे आग लगा दी जाती थी! हज़ारों अमूल्य पुस्तकें जलाई गईं। सारी सड़क पुस्तकों के फटे और जले हुए पन्नों से भर गई।"—यह कथन लण्डन-टाइम्स के संवाददाता जार्ज लिञ्च का है, जो उस समय पेकिन में ही था। इसी प्रकार ह्विण्डमैन का कथन है कि "चीन में इस युद्ध के अवसर पर लूट मार करना, आग लगाना, स्त्रियों का अपमान करना, उन का सतीत्व हरण करना ये सब घृणित बातें की गईं।" इस युद्ध के बाद चीन के बहुत से भाग को इंग्लैण्ड, रूस और जर्मनी ने परस्पर बाँट लिया। अब फ्रौंस और अमेरिका को भी काफ़ी भाग दे दिया गया है। ये सब शक्तियाँ मिल कर चीन को सभ्यता का पाठ पढ़ा रही हैं!

भारत—भारत के विषय में श्वेताङ्ग महाप्रभुओं का भारी बोझ दर्शाने के लिये भी क्या कुछ लिखने की ज़रूरत है? पीछे क्या हो चुका है, इस कहानी से क्या? इस बीसवीं शताब्दी में भी यहाँ क्या हो रहा है? दो बातों से पता चल जायगा कि हमारे प्रभुओं को हमारी कितनी चिंता है! एप्रिल १९२६ के 'मॉर्डन रिव्यू' में भारत के सैनिक व्यय की अन्य देशों के व्यय के साथ तुलना की गई है। संयुक्त-राज्य अमेरिका अपने राष्ट्र की आमदनी का २१.७ प्रतिशतक; ग्रेट ब्रिटन १३.१ प्रतिशतक; फ्रौंस १८.१ प्रतिशतक; इटली ९.३ प्रतिशतक; हॉलैण्ड २०.२ प्रतिशतक; बेलजियम ९.४ प्रतिशतक तथा स्विटज़रलैण्ड १६.९ प्रतिशतक सैनिक व्यय करते हैं परन्तु १९२५-२६ के बजट के अनुसार भारत को अपनी १३१ करोड़ ३६ लाख आमदनी का ६० करोड़ १३ लाख, अर्थात् ४६ प्रतिशतक या आधे के लगभग, सैनिक-खर्च करना पड़ा। सब देशों से ज्यादह सैनिक-व्यय भारत का रहा।

इस के प्रतिकूल शिक्षा पर जहाँ भारत में ४ आना, या कईयों के मत में ६ आना प्रति व्यक्ति, प्रति वर्ष, ख़र्च होता है वहाँ डेनमार्क में १७ रुपये, अमेरिका में १६ रु० ४ आ०, इँग्लैण्ड में ९ रु० २आ०, फ्राँस में ९ रु०, जापान में ८ रु० प्रति व्यक्ति ख़र्च होता है । भारत की समृद्धि भी कुछ कम नहीं हो रही । अकबर के समय गेहूं रुपये का १३५ सेर, जौं २०२ सेर, चावल ८० सेर, चीनी २९। सेर, घी १५। सेर तथा तेल ६४ सेर मिलता था। सभ्यता का पाठ सीखने के बाद भारत का जो हाल है वह पाठकों से छिपा नहीं। डिग्बी महोदय के कथनानुसार भारत की प्रति व्यक्ति आमदनी १५ या १६ रुपये वर्ष में है ! परन्तु इँग्लैण्ड में प्रति व्यक्ति वार्षिक आमदनी ६३०) रु०, स्काटलैण्ड में ६२५), आस्ट्रेलिया में ६००), अमेरिका में ५८५), बेलजियम में ४२०), फ्राँस में ४०५), कनाडा में ३९०) जर्मनी में ३३०) हॉलैण्ड में ३३०), नारवे में ३००), स्विटज़रलैण्ड से २८५), स्पेन में २४०), आस्ट्रिया में २२५), इटली में १८०) तथा सब से कम रूस में १६५) है ! भारत की वार्षिक आमदनी प्रतिव्यक्ति १५ या १६ रु० है, शायद ५-१० रु० ज्यादह हो, परन्तु यहाँ के कैदियों पर प्रतिव्यक्ति ५०) सालाना ख़र्च होता है। भलेमानस से तो, इस प्रकार कैद जाने वाला ही मज़े में रहता है !

उपसंहार

पाठक ! आप ने मिस मेयो के शब्दों में पढ़ लिया, भारत की क्या अवस्था है ! आप को यह भी मालूम हो गया कि अन्य देशों की अवस्था अनेक अँशों में भारत से भी गई-बीती है। परन्तु इन पँक्तियों को समाप्त करने तथा आप से विदाई लेने से पूर्व मैं एक वार फिर वही शब्द दोहराना चाहती हूं जिन शब्दों से मैंने इस पुस्तक की भूमिका को प्रारम्भ किया है। माना कि युरुप तथा अमेरिका, पाप की दलदल में धँसते चले आ रहे हैं,

माना कि उन्हों ने स्वार्थों से प्रेरित हो कर कमज़ोर जातियों की रक्षा के नाम पर उन का शिकार खेला है, माना कि उन के अत्याचारों को देख कर पिशाच भी चीख़ उठते हैं, परन्तु क्या इतना कह देने मात्र से हम मिस मेयो का मुख बन्द कर सकते हैं ? क्या यह ठीक नहीं है कि भारत में देवतों के नाम पर निस्सहाय प्राणियों का वध किया जाता है, 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते' का उच्चारण करते-करते स्त्रियों को पाँव की जूती समझा जाता है, गो-रक्षा की दुहाई देने के साथ ही गो-माता पर भीषण अत्याचार होता है ? यदि यह ठीक है, और कौन कह सकता है कि यह ठीक नहीं है, तो जब तक इन बुराइयों को दूर नहीं किया जाता तब तक, संसार अच्छा हो या बुरा हो, हमारी तरफ़ से मिस मेयो की पुस्तक का, पुस्तकों से जवाब, असली जवाब नहीं है ! क्या हिन्दू-जाति मिस मेयो के चैलेञ्ज को स्वीकार करती है ? यदि हाँ, तो मुझे भी अपनी आँखों के सामने नव्य-भारत का उषः काल दिखाई दे रहा है !!